रामकलेवा

कविरामनाथ प्रधान रचित

जिसके

ध्यानकर पाठ करने से परब्रह्म त्रिलोकीनाथ
श्रीरामचन्द्र महाराज के पद सरोज में प्रेम
और भक्ति उत्पन्न होती है

वही

श्रीयुत मुन्शी नवलकिशोर अवध
समाचार सम्पादक ने निज यन्त्रालयीय
विद्वानों से अति प्रबन्ध से शुद्ध कराय॥

स्थान लखनऊ

निज पाषाण मुद्रायन्त्र में छपवाया

॥ दोहा ॥

राम चरित्र पवित्र अति राम कलेवा नाम । राम नाथ परधान कृ-
त सुखप्रद मंगल धाम ॥ १ ॥ पढ़ै पढ़ावै प्रेम सों प्रेम राम प-
द होइ । हर्ष सदा मन में बढ़ै जाइ अघौ गुन खोइ ॥ २ ॥
अति प्यारी जग में लगै ससुरारी की हास । नारी सारी स-
रहजौ हिल मिलि कियो बिलास ॥ ३ ॥ परम रहस्य रहस्य-
ह्रद रसिक चारिहुं भ्रात । जनक भवन भावन भयो रघुवंशी-
की पात ॥ ४ ॥ जाहि सगाई राम पद नाहि सगाई सर्व ।
जस भाजन साजन सकल तासु मिलन दर पर्व ॥ ५ ॥ जनक
नगर नागरि निपुन यथा भई प्रभु प्रीय । राम कलेवा सेवि त्यों
प्रभु लागत कमनीय ॥ ६ ॥ श्री ॥ [illegible] ॥ श्री ॥ [illegible] ॥
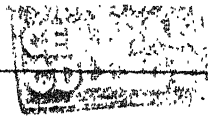
श्रीगणेशायनमः॥

अथ रामकलेवा लिख्यते छन्द चौपैया

जय जय गौरि गिरिजा गीजा पति जयति सरस्वति माता। जय गुरुदेव
केसरी नंदन गणपति कमल सुख दाता ॥१॥ उनइस से दुइ के संवत में
जेठ दशमी काहीं। ग्रंथ कियो आरंभ अनूपम बैठ अयोध्या मा
हीं॥२॥ कहुं प्रीति की रीति अटपटी मैं किहि भांति बताऊं। ताते
सानुज राम कुंअर को रुचिर कलेवा गाऊं॥३॥ जेहि विधि जनक सदन र
घुनंदन कीन्हेउ रुचिर कलेऊ। सुख दीन्हे सरहज सालिन को सो सब
कहिहौं भेऊ ॥४॥ ब्याह उछाह सिया रघुवर को मैं बरनो किहि भांती।
जग मह बीति गई सब रजनी रागी रंग बराती ॥५॥ भोर भये अपने
कुंवरनि को जनक वेगि बुलवायो। मुनि के पितु निदेश लक्ष्मी निधि
सखनि सहित तहं आयो ॥६॥ सादर किये प्रनाम चरण छुइ लखिनयो
ने सिर लेऊ। अनहु तात तुरित जनवासे जहं श्री अवध नरेशू॥७॥
विनय सुनाय राय दशरथ सों पाय रजायसु येतू। आनहु चारिउ राज
कुमारनि करन कलेऊ हेतू ॥८॥ यह सुनि सीस नाइ लक्ष्मी निधि भरि
कर मोद उमंगा। सखनि समेत मंद हंसि रामने चढ़ि चढ़ि चपल तुरंगा
॥९॥ कलितनि दिखलावत दैं प्यारकावत करत अनेक तमासे। मृदु मु
सुकात बतात परस्पर पहुंचि गए जनवासे ॥१०॥ जहां भानुकुल भानु
अवध पति दशरथ राज विराजै। बैठे सभा सकल रघुबंसी नवरंगी सु
खसाजै ॥११॥ चौगिन चोपदार जहं बोलत बंदी विरद उचारे। सुखदा
नन गायक गुन गावत नौबत बजै दुवारे ॥१२॥ सखन सहित तहं उत
रि तुरग तें मिथिला पति के बारे। चारिउ सुत युत अवध राज के सादर
नाइ जुहारे ॥१३॥ अति छवि निधि लक्ष्मी निधि को लखि सखन स
हित सतकारे। रघुपति दीप महीप हाथ गहि निज समीप बैठारे ॥
१४॥ तेहि छन सानुज निरखि राम छवि सखन सहित सुख माने। ल

के रवि कुल भान पियारे ।।३०।। रज सुहाग आनु भल पायो श्री सि
थिला धियवेटी । सुंदर श्याम माधुरी मूरति जिन निज भुज भरि भेटी ।
।।४।। बोली अपर सखी सुनु सजनी भली बात बनि आई । हमहूं
चलिस व जनक महल को हँसिये दुन्हैं हँसाई ।।५।। दूमि मृदु बातैं
करत परस्पर गई प्रेम बस बामा । सुनत बात मुसकात अनुज जुत
कृपा सिंधु श्री रामा ।।६।। तुरंगन चावत गए छवि छावत बाजत विपु-
ल नगारे । चोपदार जा गरे अलापत जनक नगर पगु धारे ।।७।। द्वार समी
प देखि अति सुंदर मन मय चौक सवारी । राज कुंवर रघु बंशिन की तहं ठा
ढ़ि भई असवारी ।।८।। उतर जाय लहि सीय मातु की नगर सुवासिन नारी ।
कंचन कलश सजे सिर ऊपर पल्लव दीपनि वारी ।।९।। गावत मंगलगीत
मनोहर कर लै कंचन थारी । परछन चली हेतु रघुवर के बहु आरती सं-
वारी ।।१०।। जाय समीप निहारि रामकरि दृग आनंद जल बाढ़ी । छकि-
त रही वर बदन विलोकत थकित रही तहं ठाढ़ी ।।११।। राम रूप रंगि ग-
ई रंगी की लखि दूलह सुख सारा । तन मन रह्यो न रे खन काहू को कै
मंगल चारा ।।१२।। प्रेम पयोधि मगन सब नारी धरि धीरज भारी । प-
रछन चली भली विधि कीन्हों रोकि बिलोचन वारी ।।१३।। लखी निषि-
व उतरि तुरंग तैं चारि उ कुंवर उतारे । पानि पकरि रघुनंदन जी को भीतर भ
वन सिधारे ।।१४।। दीप दीप के जहां महीप सब जनक समीप विराजे । बै
ठे सभा सकल निम बंशी सुर अंशी दुमि छाजे ।।१५।। चोबदार जागे अ
लापैं बहु विधि नौबत बाजैं । फहरैं बिपुल निशान जरी के मत्त गयंद
गराजैं ।।१६।। रघुनंदन तहं अनुज सखन जुत सादर जाय जुहारे । देखत उ
ठे सकल रघु बंशी जनक निकट बैठारे ।।१७।। सर में गजरा दृग कजरा सेहरा
मुनमौर विराजै दूलह वेष देखि रघुवर को भई सभा सब राजी ।।१८।। जहं
करि कछु दरबार जनक को दशरथ राज दुलारे । लै के राय रजाद नार
भीतर सासु सचीव सिधारे ।।१९।। जहं पिक बैना सब सुख दैना बैठु सुनै-

की चौंन चलावै लखि रति रूप लुभानी ॥२०॥ चंद्र मुखी चहुं ओर विराजैं कोउ कर चमर चलावै । कोऊ सखी राम की शोभा आरति मंगल गावै ॥२१॥ बिछी गिलिम गद्दी तेहि ऊपर नागर आसन भ्राजै । जनक राज की रानि सुनैना कोटि चन्द्र छवि छाजैं ॥२२॥ तेहि क्षण तहं राम रघुनंदन मन कंदन वर वेश्वा । देखत उठीं सकल रनवासैं रह्यौन लखहि संरेखा ॥२३॥ करि आरती वारि मणि भूषण सादर पाय पखारे । चारि रंग के चारि सिंहासन चारिउ वर बैठारे ॥२४॥ लखि छवि रैना सासु सुनैना कहत बनैना बैनी । जनु मूरति मैंना आन सुख सैना रामचन्द्र गुण रैनी ॥२५॥ तकि जनि रही तनिक नहिं बोलै सासु प्रमुदित सुख माहीं । राम रूप रंगि गई रंगीली आंसु बहैं दृग माहीं ॥२६॥ दूजि तहुं दशा विलोकि सासु की राम गनत मन माहीं । काहु भयो यह आजु रानि को पूछत भै सकुचाहीं ॥२७॥ चतुर सखी चित चाहि राम को बोली मधुरी बानी । यह तुम्हार सब गुण है लालन और न कछु उर आनी ॥२८॥ सुनत बचन यह तुरित धीर धरि जगी सुनैना रानी । बार बार मुख लीन बलैया चूम कपोलन पानी ॥२९॥ माधुरि मूरति सांवल सूरति तकि छकि सी रति रानी । रीझि रीझि नव राम रूप पै बिन दामों मोल बिकानी ॥३०॥ पुनि कर जोरि राम सों बोली रानी अति मृदु सोई । उठहु लाल अब करहु कलेऊ जो जो रुचि हिय होई ॥३१॥ यह सुनि श्रवनि भवन उठ तहं चारिउ राज दुलारे । भरी भवन आनुवान सुनैना निज कर पांय पखारे ॥३२॥ रतन अधिक पादिक के पीढ़ेनि बैठारे सब भाई । कंचनि थारिन मृदुल सुहारिनि परसीं विविध मिठाई ॥३३॥ करि [illegible] भूप सुत जेंवत [illegible] वत सासु । रुचि रुचि [illegible] सराहि खाय पुनि अंचवे [illegible] । बैठे [illegible] न सुत विविध सुगंध [illegible] ॥३४॥

दोहा राज ऐन मे चैन युत राजत राज कुमार । [illegible]

जिनके हास विलास लखि लाजत लक्षन मार ॥ + + +

इति श्रीरामनाथ प्रधान विरचिते श्री राम कलेवा रहस्य ग्रंथे तृतीयोध्याय: ३॥

छन्द तेहि अवसर सुधि पाइ सखी सुखलक्ष्मी निधि की नारी। नाम
सिद्धि परसिद्ध जासु गुण रूप शील उजियारी ॥१॥ भाग सुहागा भरी
सुठि सुंदरि नव यौवन मतवारी। रसिकन रीति प्रीति परवीनी रसिकिं ज-
जावन हारी ॥२॥ अति गुनवान निधान रूप की सब विधि सुघर
सयानी। लक्ष्मी निधि की प्राण पियारी निमि कुल की महरानी ॥३॥ अल
बेली सहज रघुबर की बड़ी सनेह सिंगारी। प्रीतम प्रीति निबाहन वारी रा-
म रूप रिझवारी ॥४॥ चंचल चपल बंक दिठि चितवत देखन की
आतुराई। भरी उमंग संग सखियन लै तुरत राम ढिग आई ॥५॥ बद-
न चन्द अरविंद लिये कर विमल मंदहन सोहैं। राम कुँअर कर पकरि ला-
डिली बोली तकि तिर कोहैं ॥६॥ ये चित चोर किशोर भूप के बड़े चोर तु-
म प्यारे। सुरति हमारि भुलाय मांदे सासु सखीन निहारे ॥७॥ उन्हकी बा-
त कहौं जनि प्यारी आपन दोष दुराई। तुमहिं छिपाय छबीली मूरति सुर-
ति हमारि भवाई ॥८॥ हम आये तुम महल न भीतर तुमहिं न परयो
जनाई। भलो सदन तुमको है प्यारी नहु सब ठाहिं भुलाई ॥९॥ सुनि रा-
म के वचन लाडिली बोली मृदु मुसकाई। तुमरे साथ मैंनि लाल अनु
दोन चली न्हवाई ॥१०॥ साजु भुजैना के समीप सकै सब रास्ते समेखा।
पानि पकरि रघुनंदन जी को लै लेवाय निज ऐना ॥११॥ चारि सिंहासन
देत है आसन भरी हुलासन प्यारी। बोरहिं बार निहारि बदन छबि बहु
आरती उतारी ॥१२॥ मेलि सुकंठ मालती माला वसन भीने ललन नवायो।
अंचल सो मुख पोछि राम को निज कर पान खवायो ॥१३॥ जहां चन्द्रिका
सदृश चांदनी चहुँकित विछी विशालें। चमकै बहु चित्राम धाम के
दम कै मनिन दिवालें ॥१४॥ जहं रंभा सी सरिस सुन्दरी बैठी किये सिंगारैं।
कोउ सु सुमन की करन फूल रचि कोउ कलंगी कोउ हारैं ॥१५॥ ललित।

ते सब दुख है जानहुं बिछुर आपन यार ॥ ५ ॥

इति श्री रसलाल प्रधान विरचिते रामकलेवा रहस्य ग्रंथे षष्ठो ध्यायः ६

छंद यद्यपि हम अवला रघुनंदन नीच जाति सब भांती। पै लगि जा
हु प्रीति उर जासों नाहि के हाथ बिकाती ॥१॥ अति निर्दय विद ईस्वर
याते सब दिन चलहिं अनीती। ये तिय कपट न राखत तासों कब हूं
जाते प्रीती ॥२॥ हम तिय नीच नीच की पुत्री सुत आसा चाहें आगे।
पै लगि प्रीति करैं हम जासों नेहि तन मन सै सेवैं ॥३॥ पति पितु पुत्र बं
धु परजन ते रहें सबन ते न्यारी। पै कछू नीति न राखैं तासो लावहिं जासो
यारी ॥४॥ हम तें नीच न अवजग कहुं तुम तें ऊंच न कोई। पै हिय प्री
ति जो तौल लीजिये राम हमारी होई ॥५॥ सुनि सुभ आरत बैन तियन
के तरुणा करुन रस साने। कोमल चित कृपाल रघुनंदन प्रीति रीति म
न जाने ॥६॥ बोले बचन भक्त भय भंजन सुनहु तियहु सब कोई।
मनमें कहौं स्वभाव आपनो तुम्हें न राखहु गोई ॥७॥ शिव सनकादि
आदि ब्रह्मादिक इनते और न भारी। तिनहू तें तुम अधिक पियारी सु
नसी राजकुमारी ॥८॥ जो कोउ प्रीति करै मोपर होइ जो जान अजानौ।
आप समान सदा तेहि राखौं औगुन एक न मानौं ॥९॥ मेरी है यह
बानि लाडिली प्रीति वंत जन जानौ। नाहु खोजत पावै मोहि ज्ञानी क
रि करि जप तप ध्यानै ॥१०॥ जिन जिन आनिन प्रेम जगत में सुनियत
वड़ी बड़ाई। तिन तिन में बिचारि जो देखो सब में स्वार्थ सुहाई ॥११॥
हिम बन दहै नेक मन कमलौ तिन नहि लखि मुनि मानैं। ऐसी पीर
कमल के मन को कहौ भानु कब जानैं ॥१२॥ तरसत रहत दरश बिनु
पाये नित ताकत तिन पाहीं। आस चकोर की प्रीति चंद्र के नेकु छुभी
छिपनाहीं ॥१३॥ घुमड़ी घटा देखि प्रीतम को नाचत दादुर मोरा। ता
की पीर तनक नहिं वाको ऐसी मेघ कठोरा ॥१४॥ पीउ पीउ करि जो
न पपीहा प्रान परिग कर दीन्हो। पिउ के जीउ दया नहिं आई व

रामहि पान खवावत साथहिं भली सिद्धि सुख देना। आगे राजमहल मह
सिधारे जह श्री मातु सुनैना॥ बहु प्रणाम कीन्ह रघुनंदन जोरि सरोरुह पा
णी। विदा हेतु पुनि बचन सुनाये कहि अति कोमल बाणी ॥१०॥ सुनि ये
बैना सासु सुनैना भरे प्रेम जल नैना। रही कि जाइ न कछु कहि आवे भूलि
गई सब चैना ॥११॥ पुनि धरि धीर अनेक अभूषण जे बहु मोलहि वानी
अनुज सखा युत राम कुंवर को दीन्ह सुनैना रानी ॥१२॥ वसन विचित्र
पवित्र हरषि हिय पहिराये वर जामा। पाय पोशाक नाय शिर चरण
नि लहि आसीस मुद धामा ॥१३॥ हम राउर चरणनि की दासी प्रेम पियासी
नारी। हम पर छोहन छाडहु प्यारे आपुन विरद निहारी ॥१४॥ सुन जनन-
शि बोले रघुनंदन हम तुम्हार अति प्यारी। अस कहि बोध दिये बहु भाँ-
तिन तब सिधि महल सिधारी ॥१५॥ रघुनंदन तब अनुज सखन युत
जनक सभा पगु धारे। सादर कीन्ह प्रणाम चरण छुइ पाय रजाय सि-
धारे ॥१६॥ लक्ष्मी निधि युत राम कुंवर सब आदि पौरि सव आये।
सेवक सकल तयारी कीन्हे वाहन विविधि लगाये ॥१७॥ कोउ तुरंग प-
र कोउ मतंग पर आपु रुचिर सुख पाला। कोउ सुंदर स्यंदन चढ़ि बैठे
बाजे बजे विशाला ॥१८॥ फहरै सुभग निसान गजन पर विपुलन की-
न पुकारैं। चहुं दिश तें नागरे अलापैं बंदी विरद उचारैं ॥१९॥ कोउ शि-
र करै छत्र की छाया कोउ कर विनय पसारैं। कोउ पान खवावैं रा-
मै चमर कोउ दिशि ढारैं ॥२०॥ इमि रचना युत श्री रघुनंदन चले च-
ढ़े सुख पाला। लखि कि झरोखन झांकन लागीं जनक नगर की बाला ॥२१॥
कोउ कह भामिनि बरन बनी जस श्री मिथिलेश किशोरी। तैसे
श्याम सुहाय सलोने राम कुंवर की जोरी ॥२२॥ कोउ कहै कौन जन्म
धौं पूजी यह लालसा हमारी। कछु बातैं करि राम कुँअर सों मिलतीं
भुजा पसारी ॥२३॥ कोउ कह धन्य राज्य कुल नारी पूर्व पुण्य भल की-
न्हे। सुमि संवाद श्री राम कुंवर सों जन्म सुफल करि लीन्हें ॥२४॥ आ-

ज जन्म जग में भल पायो श्री निमिराज कुमारी। सुंदर नाथ सांवरी मूरति उर ते करी न न्यारी ॥२५॥ कोउ कहै कहाँ कुंवर रघुबंसी कहं हम नारि गवांरी। केहि विधि मिलवो होइ विधाता बीत्यो जन्म दयारी ॥२६॥ कोउ कहै होत भाग भरि सजनी शोभम सेकत प्यारी। जितने रहो संयोग हमारो नैनन लखी निहारी ॥२७॥ इमि सुनि आरति बतियन के आतिक सगार रस भीने। तिनकी दिशि कृपाल रघुनन्दन चितये बोध हिं दीन्हे ॥२८॥ इमि मग होत विलास बहुत विधि आए सब जनवासे। उतरे अनुज सखन युत रघुवर मुदित चले पितु पासे ॥२९॥ अवध राज को देखि दूरते सानुज कीन्ह प्रणामा। भूपति धाय लाय उर लीन्हों कहि न जाय मुद धामा ॥३०॥ द्विज बेजनि तुलसी सुमनन की पूछन अवध भुआला। कहि विधि राम कलेवा कीन्हो सब कहि जाहु हे लाला ॥३१॥ राय रजाय पाय रघुनंदन हरसि आनंद उर छाये। सब कहि राम भनूजन की बातें रघुवर सहज सुहाये ॥३२॥ सुनि विहंसे नरराज राय तब दशरीन जाइ हुलासू। पुनि नृप दई रजाय सुतन को गे सब निज २ बासू ॥३३॥ इमि आनंद जनकपुर वासी नित प्रति पावत लोभू। कोटिन इंद्र न जब की आवन निरखत यह सुख भोगू ॥३४ राम कलेवा रहस्य चरित यह सप्त भांति कवि किम गावैं। शेषा शारद भृंग ऋ सारद नेत पार न पावैं ॥३५॥ जो कोउ प्रीति रीति उर लाइ सो यह गाथा हि गावै। पावै पूरण प्रेम राम को पुनि जग नाचैं नाचै ॥३६॥ राम कलेवा रहस्य ग्रंथ यह राम रसिक अधिकारा। जाके श्रवणहि पलक छिपन उत्पन्न विकारा ॥३७॥ जेठ दस दूतने अरंभ करि क्वार दस हरा माहीं। राम कलेवा रहस ग्रंथ यह पूरण भो मुद माहीं ॥३८॥

॥दोहा॥ निज पैंतालिस बरस को अमित जानि वर्तमान।
किये कलेवा ग्रंथ यह रामनाथ परधान ॥

इति श्री रामनाथ प्रधान विरचिते राम कलेवा रहस्य ग्रंथे प्रथमो ध्या
॥ लिखितोयम् ग्रंथः महावीर प्रसाद ब्राह्मण अयोध्यावासी ॥

विजय मुक्तावली

छत्र कवि रचित

जिसमें

दोहा चौपाई आदिछन्दोंमें सम्पूर्ण महाभारत का

संक्षेप

अति उत्तमता से वर्णित है

श्रीयुत विद्या प्रकाशक

मुन्शी नवलकिशोर अवध

समाचार सम्पादकने दूसरी प्रति छपी हुई से

अपने पण्डितों के द्वारा शुद्ध कराय

लखनऊ

स्वकीय यन्त्रालय में छपवाया

फ़ेब्रुएरी सन १८७४ ई०

विघनहरण तुमही सदा गणपति होउ सहाइ॥ विनतीकर-
जोरें करौं दीजे ग्रंथ बनाइ॥१॥ जिहि कीनो परपंच सब अपनी
इच्छा पाइ॥ ताको हौं बंदन करौं हाथ जोरि सिर नाइ॥२॥ करु
णा कर पोषत सदा सकल सृष्टि के प्रान, ऐसे ईश्वर को हिये
रहै रैन दिन ध्यान॥३॥ मेरे मन में तुम बसो ऐसे करौं कहि-
जाइ॥ ताते यह मन आप सों लीजे क्यौं न लगाइ॥४॥ जागु
रु गिरिधर देव की सुंदर दया दरेर गुंग सकल पिंगल प
ढैं पंगु चढैं गिरि मेर॥५॥ ब्रज रक्षण भक्षण अनल रक्षण गो
धन ग्वाल॥ भुजवर कर वर कंजपर गिरिवर धरन गोपाल॥
१॥ हरि दीपक मन सदन धरि कपट कपाट उघारि॥ नसै सकल
अघ कालिमा कछु सुदेखि विचारि॥२॥ अथ दंडक छंद॥
झूमि झूमि आये कोपि वासव पठाये नभ धाये दिसदिसन
ते बासव तरज पर॥ मेघ की मरोर महा पवन की झकोर जो
र नीरद निपट घोर घोष सो गरज पर॥ ऐसे लखि कान्ह ने उठा
यौ गिरि गोवरधन ब्रजकी सहाइ करी करकी करज पर॥
तबै सुरपाल के [illegible] खोय के गुपाल [illegible] दयाल गोपी

ग्वाल की तरज पर ॥ ३ ॥ सवैया ॥ आनन एक कहै नर को चतु
रानन चारिहु वेद बता में ॥ जे रिषि वृद्ध प्रसिद्ध हैं सिद्ध महा
मन बंछित सिद्धि जो पामें ॥ नारद सारद जो वतहैं सनकादि
सुकादि सबै गुण गामें ॥ वंदत ये सब शेष सुरेश दिनेश धने
श गनेशहु धामें ॥ दोहा ॥ जग जननी जग बंदनी जग पावनि सुख
कारि ॥ गिरा थिरा मति दीजिये बरनौं ग्रंथ बिचारि ॥ ५ ॥ मथु
रा मंडल में बसै देश सदा बर ग्राम ॥ आसन तहां प्रसिद्ध स
दि क्षेत्र बटे श्वर नाम ॥ ६ ॥ ता मग जनके पग परत अघ कोस
स रहै न ॥ बिकट जटे संकट नहित हरत सदा शिव नैन ॥ ७ ॥
सूक्ष्म स्थूल समूल अघ जरे जात दुख सूल ॥ फूल होत उर
में तहां निरखि कलिंदी कूल ॥ ८ ॥ सवैया ॥ संग उसंग मृदंग
कहूं सु कहूं धुनि शंखन की सुनिये ॥ कहूं ऋषि वृद्ध प्रसिद्ध
कहूं कहुं सोहत साधु महा मुनि ये ॥ वेद निवेदत भेदनि
सों कहुं नृत्यत गावत हैं गुनिये ॥ शूली बटे श्वर के छिन्नं
दत देत हैं मुक्ति सदा दुनिये ॥ ९ ॥ दोहा ॥ सुजस सबसरा
निकट ही पुर अटेर इहि नाम ॥ यज्ञ यजन होमादि व्रत
रचत धाम प्रति धाम ॥ १० ॥ नगर मनहुं अमरावती बा
सी बिबुध [illegible] ॥ आखंडल सौं लसत तहां भूपति सिं
ह कल्यान ॥ ११ ॥ कीरति दान कृपान की को बरनै विस्तार ॥ जय
युत सुजस प्रताप सें छाय रही दिस चार ॥ १२ ॥ दंडक छंद
बदर बदक [illegible] बंगसो तिलंग छाई छाय रही बंदर में बारि
ध के घाट लौं ॥ माडू कर काम रू फिरंग रोही रोह तास छा
ई है कुमाऊं विधि बंधव कु हाट लौं ॥ गौड वानौ मारवाड़
माल वा उड़ीसा छाई छाई है सु देश देश हू विराट लौं ॥ छा
ई धरा केहरी कल्यान सिंह कीरति का बिल कलिंग कास

मीर करनाटक लौं॥दोहा॥श्री वास्तव कायस्थ है छत्र सिंह यह नाम॥बसत भदावर देश में गृह अटेर सुख धाम॥१४॥कौरव पांडु की कथा तिन सब सुन्यौ पुरान॥तातें भाषा ग्रंथ को कीनौ छत्र बखान॥१५॥संवत सत्रह सै बरष सप्त बाढ पंचास॥शुक्ल पक्ष एका दशी रच्यौ ग्रंथ नभमास॥१६॥नाम विजय मुक्ता यतौ हित करि सुनै जो कोइ॥अष्टा दशौ पुराण कौ नाहि महा फल होइ॥१७॥लसत हस्तिना पुर अवनि अमर वती समान॥सुरपति सौ शांतनु तहां चहूं चक्र में आन॥१८॥सायर रिषि के श्राप तें शांतनु भयौ नरेस॥भुज बर कर बर स्वर्ग वर जीति लयौ बहु देश॥१९॥लाघर तरुणी सुर सुरी पाले व्रत सुख कारि॥प्रजा सकल आनंद सौं निशि वासर नर नारि॥२०॥वचन सुर सुरी यौं लयौ शांतनु पै सुख पाइ॥पुत्र होन मो पूर में दीजो भूप बहाइ॥२१॥जब यह विधि करि हौ न हीं तबहि तजौं यह गेह॥जौ लौं बचननि दृढ़ रहौ तौलौं तजौं सनेह॥२२॥अष्ट पुत्र नृप के भये दीनो गंग बहाइ॥नवये भये गांगेय तब भूतल जनमे आइ॥२३॥दोधक छंद॥भूपति यौं मन मांहि विचारी।कौन लहै नृप ता अधि कारी॥पुत्र भये सब गंग बहाये॥मंत्री सब नृप सोधि बुलाये॥बात सबै भुव भूप बखानी॥मंत्र कहा करिये सुख दानी॥जौं वर जौं गृह गंग नरेंदै॥पुत्रहि राखत पूर समेंदै॥२४॥मंत्री उवाच॥राखिय पुत्र रहै नृप ताई॥गंग रहै नृप के गृह जाई॥मंत्र सुनो यह भूपति भायौ॥सो चलिके तिय पै तब आयौ॥२५॥राजा शांतनु उवाच॥दैसुत गंग अबै इक मांही॥मां गत हौं हित सौं यह तोही॥लै तिय पुत्र तबै कर दीनौ॥चंद सो आनन रूप नवीनौ॥२६॥दोहा॥पति सौं कहि पूरव क

था रही समाय प्रवाह ॥ महा दुख नृप को भयौ चकितचित नर नाह ॥ २७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

नग स्वरूप गी छंद ॥ भयौ नरेस कौ महा ॥ सो दुःख हौं कहौं कहा ॥ महीप देखिये इसौं ॥ निशा बिना शशी जिसौं ॥ २८ ॥ मंत्री उवाच ॥ न भूप शोक कीजिये ॥ सो पुत्र देखि जीजिये ॥ अनेक भांति पारिये ॥ संदेह शाता सुधारिये ॥ २९ ॥ दोहा ॥ बीते वासर व बने नव गांगेय कुमार ॥ शस्त्र शास्त्र विद्या पढी सकिंव मंत्र अपार ॥ ३० ॥ नृपति शांतनु एक दिन गयौ अखेट कै काज ॥ सघन विपिन सरिता निकट लै प्रिय लोग समाज ॥ ३१ ॥ केवट न

नया प्राप्ति वदनि जोजन गंधा नाम ॥ निरखि रूप मोहित भयो
विज्जुलता सी वाम ॥ ३२ ॥ अति आशक्त भयौ नृपति केवट
लियौ बुलाइ ॥ देहु मोहि अपनी सुता मन वच क्रम सुख-
पाइ ॥ ३३ ॥ केवट उवाच ॥ तुम पृथ्वी पति भूप हौ नीच जा-
ति मल्लाह ॥ आपहि कहौ विचारिकै किहि विधि होइ विवा
ह ॥ ३४ ॥ तौ विवाह तुम कौं करौं जो यह मांगी देहु ॥ नृपता
या को सुत लहै करौ आप करि नेह ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥ यह सु
नि राजा मन विलखानो ॥ गृह तन को तब कियौ पयानो ॥
अब सोई हौं कहौं विचार ॥ जोजन गंधा को अवतार ॥ ३६ ॥
पारासर मुनि वन पगु धर्यौ ॥ तरुनी वचन प्रगट यौं कर्यौ ॥
किती वरष वन जैहैं वीती ॥ कहि संतानि होइ किहि रीती
॥ ३७ ॥ पारासर उवाच ॥ चौपाई ॥ ऋतु वंती ह्वै जवही न्हाई ॥
सुक दीजो मो पास पठाई ॥ ध्यान उर्मंगि कंद्रप हू काऊं ॥ सु
क कर देतो पास पठाऊं ॥ ३८ ॥ तुम आन्न मेलि कीजियो पान।
इहि संजोग होइ आधान ॥ यह कहि कै मुनि विपिन सिधा
ए ॥ तप हित महा विपिन में आए ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ ऋतु वंती
अस्नान कियौ सुक पठयौ पति पास ॥ पहुंच्यौ [illegible] निक
ट तबही छोडि अवास ॥ ४० ॥ चौपाई ॥ देखत ध्यान रिषी स्मर
धर्यौ ॥ मन मथि मदन नवै जल ढर्यौ ॥ धर्यौ पत्र में सुक क
र दयौ ॥ रिषिनी हित सौं [illegible] गयौ ॥ ४१ ॥ आयौ सरिता निक
ट सुकीर ॥ गिर्यौ मदन जल अवचत नीर ॥ एक मीन सो की
नो [illegible] ॥ ताको प्रगट भयौ आधान ॥ ४२ ॥ प्रापर्यौ सो तवही
लयौ ॥ रिषिनी पास कीर लै गयौ ॥ जा विधि सो कहि गये मु
नी म्हार ॥ जो विधि कीनी त्रिय तिहि औसर ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ बी
ते पूरण मास तब गर्भ सुच्यौ तेहि काल ॥ भयौ पुत्र कविह

त्र कहि उर आनंदति वाल ॥ ४४ ॥ त्रोटक छंद ॥ जब मीनहि पूरण गर्भ भयौ ॥ चलि केवट तासु सिकार गयौ ॥ लहि मीन सु गेह गयौ जबही ॥ निकसी तनया तेहि गर्भ तंही ॥ चपला जनु सोहत देह धरे ॥ रति मानहु अद्भुत रूप करे ॥ दिन केतिक ताकहं वीति गये ॥ कुल धर्म सबै हित कै सिखये ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ नाम कुमा मत्स्योदरी करति आप कुल धर्म ॥ पथिक उतारति आपगा करि मलाह के कर्म ॥ ४७ ॥ कीनो द्वादश वर्ष तप पारा शर मुनि आइ ॥ निरखि रूप मत्स्योदरी गिरयौ पुहुमि अकुलाइ ॥ ४८ ॥ निरखि रिस्कि आशक हु कही वात मुनि राय ॥ मोहि तोहि सग लोचनी सुरति होइ सुख पाय ॥ ४९ ॥ मत्स्योदरीउवाच ॥ सुदरी छंद ॥ वात [illegible] न स्यौ कहि आवहि ॥ क्यौं कहि आपु कलंक लगावहि ॥ ५० ॥ रिषिरुवाच ॥ दैरति के लहि आप अवै त्रिय ॥ नाहिं रह्यौ कछु धीरज मो हिय ॥ त्रास भयौ सुनि ताउर मैं अति ॥ जानि न जाइ कछू विधि की गति ॥ आतुर ह्वै रिषि राज दई रति ॥ ताहि प्रसन्न भयौ सु महा मति ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ तुम तनकी दुर गंधता नसि जैहै सुनि वाल ॥ होइ सुगंध शरीर को जोजन लौं सव काल ॥ ५३ ॥ लखै न कोऊ गर्भ तुम जातु अनंदित धाम ॥ होइहै पुत्र प्रसिद्ध महि तीन भुवन जेहि नाम ॥ ५४ ॥ चौपाई ॥ यह कहि कै रिषि ग्रह को गयौ ॥ प्रगट गर्भ ना त्रिय कै भयौ ॥ लखै न कोऊ ताहि अवास ॥ लीनो जन्म महा रिषि व्यास ॥ ५५ ॥ वन [illegible] चलै [illegible] रिषि राई ॥ अति हित वचन कह्यौ सुनि माई ॥ [illegible] सुधि करै तहां चलि आऊं ॥ तेरो कठिन कलेस मिटाऊं ॥ [illegible] न काहू सो क्यो हार ॥ जिहि विधि लीनो रिषि [illegible] ॥ [illegible] गंगा ह्वहि [illegible] महि

पुरुम रूप विधना निरमई ॥दोहा॥ ताको शांतनु देखि कै गृह आये नर नाथ॥ कुम्हि लानो आनन महा धीरज रह्यो नहाथ॥ ॥ भीषम उवाच ॥ कौन हेत नृप मलिन हो कहो पिता सों काज॥ पांऊ आज्ञा रावरी कहौं सो सारौं काज॥ ५९॥ राजा उवाच॥ दोहा॥ जवतें सुत गंगा गई वीती वर्ष सात॥ छिन छिन वीततु वर्ष सम जुग भरि जाम विहात॥ ६०॥ चौपाई॥ त्रिय विनु कर्म धर्म नहिं होई॥ नहिं नर लहे वडाई कोई॥ धन संपति लागे नहि नीको॥ ता विन भवन वस्तु है फीकी॥ ६१॥ दोहा॥ केवट गंधा की सुरति सव विधि कही वखानि॥ देत नही अपनी सुता करत केवट कानि॥ ६२॥ चलि गंगेय गये तहां ता केवट के पास॥ देहु सुता भूपाल को कीनो वचन प्रकाश॥ ६३॥ केवट उवाच॥ होइ राज या पुत्र कों तो हों करौं विवाह॥ मन साचा करि कैसो वचन देहिं नर नाह॥ ६४॥ चौपाई॥ तव गांगेय वचन यों कहे॥ तुव तनया सुत नृपता लहे॥ करौं विवाह न तिय संग्रहों॥ सत्य वचन हौं तोसों कहौं॥ मेटहि वचन सुनर कहि जाई॥ करौं मैं व हौं जानौं माई॥ साधु जानि तव यह पितु मानी॥ आये ब्याहन नृप रव दानी॥ ६६॥ करि विवाह लै तियहि सिधाए॥ तवही भीषम निकट वोलाए॥ तें अति सुख दीनो है मोही॥ हौं प्रसन्न दीनो वर तोही॥ ६७॥ सवैया॥ मीच वोलाइ विना नहिं आयहै चाहे विना मरिहै नहि मारो॥ तेरे न निष्फल जाहिंगे वाण हरैगो नहीं रण काहू को टारो॥ तोसों तुही सरि और नही वर आनन कौं सव सोच निवारो॥ धन्य घरी जिहि जन्म लयो भुव धन्य तुपुत्र पिता पन पारो॥ ६८॥ दोहा॥ सुनि शांतनु के वचन ये भीषम जी

सुख पाइ॥ मातु पिता की भक्ति अति करि लीनी मन लाइ॥६९॥ इति श्री महा भारत पुराणे विजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र विरचितायां व्यास अवतार वर्णनो नाम प्रथमोऽध्यायः॥

॥१॥ अथ त्रोटक छंद॥

नृप शांतनु के सुत दोय भये॥ शुभनाम सुचित्र विचित्र ठये गुण ज्ञान कृपान सबै सिखये॥ दिन सीखत कर्म सुधर्म नये॥१॥ बहु भूपति के मन मोद भयो॥ छित में जस भूपति भूप लयौ॥ इहि भाँति किते दिन बीति गये॥ सब वासर आनंद में वितये॥ २॥ दोहा॥ आयु भुगति नर नाह तब वास लयौ हरि लोक॥ पुत्र कलत्र कुटुंब को उर वाढ्यौ बहु शोक॥ ३॥ सुरसरि सुत समुझाय सब क्रिया कर्म सब कीन्ह॥ जेठ सुत तब चित्र कौं राज भार धरि दीन्ह॥ ४॥ बहु रिषि राजनि बोलि कें करयौ राज अभिषेक॥ सब परिवार प्रजानि कौं आनंद वढ्यौ अनेक॥ ५॥ सोरठा॥ काशि राज के गेह हती सुता द्वइ इंदु मुख॥ इक अंबा अंबेह मृग नैनी चंपक वरण॥ ६॥ दोहा॥ अंबा दीन्ही चित्र कौं करि विवाह कौ चार॥ अरु अंबेह विचित्र गृह भई सकल सुख सार॥ ७॥ सोरठा॥ वाढ्यौ गर्भ अपार अमनी नृप संपति निरखि॥ सकल संहज्ज भंडार वरनि कहां लौं कवि कहै॥ चौपाई॥ निस दिन राज नीति विसराई॥ रचे कुकर्मनि के सब भाई॥ कुल कौ सकल धर्म नसि गयो॥ बहु संदेह मात उर भयो॥ जान्यौ जबहि राज को नास॥ जोजन गंधा सुमिरे व्यास॥ आइ गये तबही ऋषि राई॥ धाय जननि के वंदे पाई॥ १०॥ जोजन गंधा उवाच॥ जद्यपि कौ सुत पायो राज॥ करै न राज नीति के काज॥ ऐसो कुछ

कीजै उपदेश ॥ राज नीति मत नीति ॥१॥ व्यास उवाच ॥ दोहा ॥ सुनि माता तोसों कहौं राज नीति समुझाय ॥ सो सिख दीजे सुतनि कों सुजस रहै घर छाय ॥ १२॥ दिन प्रति व्यास कहै कथा राज नीति सब धर्म ॥ चित्र नृपति यह बात सुनि मन में बस्यौ कुकर्म ॥१३॥ को यह द्विज माता निकट बैठत निस दिन आइ ॥ ताको हतन विचारि कै गुप्त भयौ तहं जाइ ॥१४॥ गीतिका छंद ॥ आय कै रिषि व्यास माता निकट बैठि कथा कहैं ॥ सुनत पारासुर सुता सुत वचन दीरघ दुख दहै ॥ भाय कहि कहि राज नीतहि सकल विधि सो उच्चरै ॥ पुत्र कहि बूझै जननि इहि भांति श्रवण कथा करै ॥१५॥ अर्ध निस बीती जहां रिषि व्यास पग गृह कों धर्यौ ॥ निरखि यह विधि चित्र नृप तब वचन तिन सौं उच्चर्यौ ॥ हे महा रिषि राइ तुम सब भांति बुद्धि प्रवीन हौ ॥ लोक कौ पर लोक कौ सब वेद विधि सौं लीन हौ ॥१६॥ भयौ मनसा पाप जाकहं सो कहौ क्यौं उद्धरै ॥ देहु बुद्धिनिधान सिक्षा काज कैसे कै सरै ॥ व्यास साध अगाध मति तब वचन तिन सौं भाखियौ ॥ कहौं तो सों विधि सबै मन मांहि हित करि राखियौ ॥ १७॥ दोहा ॥ सल दल द्रुम कों खंडि कै तामैं अग्नि प्रजारि ॥ धूम घूटि प्रानन तजै सब अघ डारै वारि ॥ १८ सीख लई सोंपे सोई सोई कियौ उपाय ॥ धूम घूटि तिहि भांति ही गये देव पुर राय १९ ॥ तोटक छंद ॥ इहि भांति नरेश बिलोकि तबै ॥ बहु दीन भये नर नारि सबै ॥ तब मात महा उर दुःख भयौ ॥ ज हि मानहु भीषम प्राण गयो ॥ २०॥ तब भूपति भूमि वि चित्र कर्यौ ॥ विधि सों सिर ऊपर छत्र धर्यौ ॥ बर नौन्द

रिषि सोग्वल॥जटा कसे कर दंड कमंडल॥वंदतु है पग मातु म
हा मति॥ भीषम के उर सुक्ख भयौ अति ॥३३॥ बात विचारि
कही सवरी गुनि॥राज चलै केहि भांति महा मुनि॥३४॥
श्री व्यास उवाच॥चौपाई॥ एक उपाउ करौ जो माई॥ तौ सं
तान प्रगट हो आई ॥ चित्र विचित्र नृपति की नारी॥होइ
नगन सब वस्तर डारी ॥३५॥ मो आगे आवै तजि लाज
देहुं असीस होइ सब काज॥हौं तपसी नहिं चित्त वि-
कार॥तातें जिनि कछु करौ विचार ॥ ३६॥ रानी गई म
हल में धाय॥पुत्र वधुन सों विनयौ आय॥उनि सुनिवा
त अचंभो कियौ॥कैसो है माता तो हियौ ॥३७॥दोहा॥
इहि विधि आगे जेठ कै काहू कुल की वाल॥ऐसी कौन
निलज्ज त्रिय करै जु कर्म कराल॥३८॥चौपाई॥रानी क
हि समुझाई वाला॥भई नगन वह ताही काला॥वहु घं
केस देह पर डारि॥नैन मूंदि कैं अंवा नारि॥३९॥आई सो
सामुहे रिषीस॥ह्वै प्रसन्न रिषि दई असीस॥इहि विधि
कै रिषि वोले वैन॥होइ अंध सुत लहै ननैन॥४०॥फिरि
रानी अंवे पै जाई॥ले आई तोकौं समुझाई॥तिन हूं वस
न दिये सवडारि॥अंग मृत्तिका लाई नारि॥४१॥व्यास उ
वाच॥दोहा॥पांडु पुत्र या गर्भ तें ह्वैहै वह सुख कार॥ मृ
त्तिका लाई अंग इनि भेद कह्यो निर धार॥४२॥वांछित
फल मातहि दयौ गेह गयौ रिषि राइ॥ चित्र विचित्र त्रिया
नकें गर्भ भये सुख दाइ॥४३॥सुंदरी छंद॥पूरण मास भ
ये तिन के जव॥मातनि के उर सुक्ख वढ़े तव॥अंध भये
सुत चित्र कीनारिहि॥पांडु विचित्र वधू सुख कारिहि॥
॥४४॥वासर हू निसि दुंदुभी वाजत॥धुनि सुनि कै मघ

या जनु लाजत॥ मंगल चार सखी सब गावहिं॥ भांतिनि भांति आनंद बढा वहिं॥ भीषम कर्म विचारि किये सब॥ दीन गुनी कहं दान दिये तब॥ बीति गये इहि भांति कछू दिन बाढत आनंद है छिन हू छिन॥ भाट तहां विरदावलि गावत॥ ॥वारन अश्व समूहन पावत॥
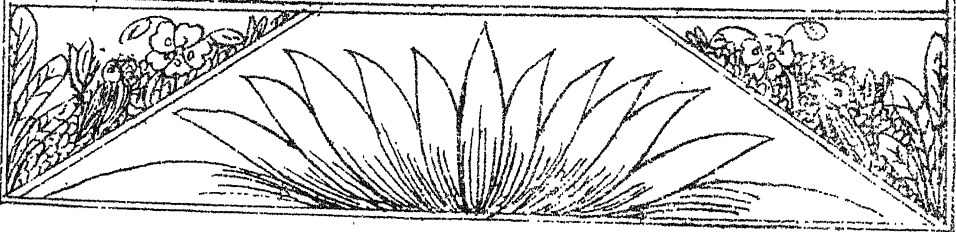
पंडित आये तहां गुनसागर॥नृत्यत हैं बहु धा नट नागर॥ ... त नगर नारि नर भारी॥सुख भुज तननि सकल सुख कारी॥४७॥दोहा॥को बरनै आनंद को सुख संमूह [illegible]॥जबही फिरि सुमिरे जननि आय गये रिषि व्यास॥४८॥[illegible] उवाच॥तुम प्रसाद ते पुत्र द्वै प्रगट भये यहि गेह॥आसिष दे हु उदार है मो मांगे सुत देहु॥४९॥[illegible]॥[illegible] सन उहि भांति ही आवै मोतट बाल॥आसिष देहु [illegible] ताको तेही काल॥५०॥आनी दासी नगन करि [illegible] गंध साइ॥करति कटाक्ष नलाज उर मंद मंद मुसिकाइ॥५१॥चौपाई॥कासिराज की सुता [illegible]॥यह माता दासी है कोई॥याके गर्भ होइ सुत येक॥विसु भक्त अरु ज्ञान अनेक॥५२॥दै आसिष तबही रिषि गयौ॥प्रगट गर्भ दासी के भयौ॥पुत्र सरूप तबै अवतरयौ॥नाम बिदुर रिषि यौ उच्चरयौ॥५३॥तीनो शिशु खेलैं इक संग॥लखि सुख उपजत मातनि अंग॥लरैं भिरैं खेलैं इहि रीति॥केते वर्ष दिवस गये बीति॥५४॥सोरठा॥भीषम सकल [illegible] बुध जन ज्यौतिसी॥दयौ अंध को राज तिलक प्रीसा सिर छत्र धरि॥५५॥दोहा॥राज नीति मारग धर्यो भीषम बुद्धि निधान॥सुबस बास चारौं बरन आप धर्म जुत ज्ञान॥५६॥ विजय करन को तब सज्यौ भीषम दल [illegible] अरिपुर जाय कै लखि मुख उपज्यौ अंग॥५७॥[illegible] एक नृपति पैलीनौ दंड॥पाटन नगर जीति बहु खंड॥एक नृपति आपने करि थापै॥बहुत नरेस महा भय कांपै॥५८॥दोहा॥भीषम करि कै दिग विजय आये आपने गेह॥पांडु अंध धृतराष्ट्र सौं दिन दिन बढ्यौ सनेह॥५९॥

चौपाई॥ अंध राय की चलै दोहाई॥ सब विधि करै पांडु नृपताई॥ इहि विधि सुख बीते बहु काल॥ रहत यथा क्रम तहं भुव पाल॥ इति श्री महा भारत पुराणे विजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र विरचितायां धृत राष्ट्र पाडु विदुर जन्म वर्णनो नाम द्वितीयोऽध्याय:॥२॥

दोहा॥ सुवस भूमि कन वज पुरी चारि वरन की भीर॥ गंधुव राय महीप तहं परम शील गंभीर॥१॥ सोरठा॥ सुरपति गंधुव राज अमर पुरी कन वज नगर॥ पुर जन विवुध समाज दूजो सरि दीजे कहा॥ दोहा॥ ताके दुहिता शशि मुखी गंधारी इहि नाम॥ सची किधौं है इंदिरा कै मन सिज की वाम॥३॥ अंध राय को थापि कै दीनी लगन पठाइ॥ करि विवाह को चारु सब मंगल चार कराइ॥४॥ पुनि भीषम आनंद युत आये साजि बरात॥ अंध राय दूलह बने सुख समूह सरसात॥५॥ बिन लोचन को पति सुन्यौ गंधारी दुख पाय सखी आपनी सों कही यह सब विधि समुझाय॥६॥ को मेटै विधि को लिख्यौ पायो पति बिन नैन॥ सोई प्रभु है प्राण पति सत्य कहौं सुनि बैन॥७॥ चौपाई॥ तबही यौं गंधारी कहै॥ परम पति व्रत मो उर रहै॥ कैसी तरुणी है जग माही॥ पति के दुःख आप दुख नाहीं॥ गुरु देवता आप पति जानै॥ ताकी आज्ञा निस दिन मानै॥ पगन देहि पति शासन भंग॥ रचैं पतिव्रत के जो रंग॥८॥ शुभ गति तिन की करता करै॥ तब गंधारी यौं अनुसरै॥ अंध राय पति के दृग हैन॥ लै पट्टी तिन बांधे नैन॥१०॥ दोहा॥ जो विधि दोऊ कुलन की व्याह भयौ तिहि रीति॥ कन्या दै दासी दई भूषन वसन सप्रीति॥११॥ नारा छंद॥ मतंग औ तुरंग सूर

साजि साजि साजि यौ॥ अनेक भांति दाय जौ अशेष वस्तु कोदि यौ॥ स्याम सेत नील पीत आसनै विछा वने॥ दये सुवर्ण माल मुक्त राज ते घने घने॥ १२॥ बिवाह के नरेस आप गेह कों सिधा नियौ॥ दरिद्र हीन दीन के सबै नसाइ डारियौ॥ गीत नाद ठौर ठौर सुख सों घने घने॥ उपंग चंग दुंद भी निभेरि वृंद को गने॥ १३॥ दोहा॥ कही नृपति धृतराष्ट्र यह भीषम सों समुझाइ॥ करौ पांडु को व्याह अव उत्तम ठौर सुधाइ॥ १४॥ भीषम उवाच॥ नगर निरखि नावलि वनी मधि नायक कुलवार॥ कुंतल राज वखानिये तहां भूमि भरतार॥ १५॥ सूरसेन नृप की सुता हित कै आनी गेह॥ जन्म काल के कर्म्म सव कीने सहित सनेह॥ १६॥ नाम धर्‍यौ कुंती तहां सकल वुधीस वुलाय॥ दिन दिन दुहिता वृंद सुखि अति दुति सो सरसा य॥ १७॥ द्वादश वीते वरस तव करि कुंती चित ज्ञान॥ से यो रिषि दुर्वास तव मन कर्म वचन सुजान॥ १८॥ तोट क छंद॥ रिषि राज प्रसन्न भये जवही॥ अति विम्बल ध्यान धर्‍यौ तवही॥ सिखयौ आकर्षन मंत्र तवै॥ हित कै तिहि सीखि लयें सुसवै॥ १९॥ दोहा॥ सूरज को इक ध र्म को तीजो पवन वखान॥ चौथो सिखयो इंद्र को सव गुन ज्ञान निधान॥ २०॥ चौपाई॥ पंचम तहं अश्वनी कुमारा॥ दीनो रिषि सो परम उदारा॥ जाको मंत्र जपै सु ख पाई॥ सोई देव प्रगट है आई॥ २१॥ तोटक छंद॥ उन सूरज मंत्र जप्यौ जवही॥ प्रगटे सविता घर आइ तहीं॥ सकुची डरपी अति भीत्ति परी॥ नरमो जग मोहि कलं क लसै॥ २२॥ सूर्य्य उवाच॥ विनयौ जवतें वहु जाप क लौ॥ अति भक्ति करी पग भूमि धर्‍यौ॥ तव दृष्टि संजोग

[illegible] ॥ त्रिय सौं तबहीं यह बैन कह्यौ ॥२३॥ सुत [illegible]
तुव गर्भ महा ॥ बहुधा बरनौ गुण तासु कहा ॥ प्रगटे तन धर्म अभे
द धरै ॥ धर बारिध लौं अति कीर्त्ति करै ॥२४॥ चौपाई ॥ लखैनके
ऊ तुव आधानु ॥ यौं कहि बैन सिधाए भानु ॥ आई कुंती अपने
गेह ॥ धाय बोलाई परम सनेह ॥२५॥ [illegible] कौ रमि यौ सब बि-
धि कह्यौ ॥ तब उन मरम सकल [illegible] ॥ जब दश मास
[illegible] ॥ कही धाय सौं [illegible] रीति ॥ आजु मुझे गो म
म [illegible] ॥ ह्वैहै पुत्र कहि [illegible] ॥ लाउ मजूसा तुरत ग
ढ़ाय ॥ तामें सुत धरि देहु बहाय ॥२६॥ दोहा ॥ [illegible] धाय म
जूस [illegible] करि मन मांह बिचारि ॥ आई निशा बीती जबहि
लयौ पुत्र अवतार ॥ २७ ॥ पहिरे कवच अभेद तनु कुंडल
[illegible] ॥ सो कुमार भनि [illegible] षोडस कला निधा
न ॥ २८ ॥ धरि मजूस में धाय तब दीने सरित बहाय ॥

दृष्टि परौ श्रुति धार की हित करि लियौ उठाइ ॥ २९ ॥ नाराच छंद ॥
लसै महा स्वरूप पुन सूरसो उदै कियौ ॥ गयो सुभौन आपने सुत्तास
सों महा हियौ ॥ दयौ नियाहि जाति कर्म आदि कर्म ते करे ॥ अनं
द भौ महा घनो असेष दुःख ते हरे ॥ ३० ॥ भयौ किसोरि आय कर्ण
पुत्र यौं सिखा वही ॥ नित्य नित्य अंग अंग में सुज्योति आव
ही ॥ भयौ प्रवीन अस्त्र शास्त्र सीखवो हिये धरे ॥ सहस्त्र बाहु
जीतिये गयौ विचार यौं करे ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ आराधे तव कम
ल पद परशुराम के जाय ॥ द्विज सुत ह्वै विद्या पढ़ी मन वच
क्रम चितलाय ॥ ३२ ॥ यहि विधि वहु विद्या पढ़ी सिख दै सो
रिषि राज ॥ अस्त्र शास्त्र सीखे तहां करण तजे सुख साज ॥
३३ ॥ परशुराम रिषि राज तब आलस सों अलसाइ ॥ कर
ण जंघ पर सीस धरि सोय रहे सुख पाइ ॥ ३४ ॥ चौपाई
कीट रूप नारायण आये ॥ भृगु नंदन तहं सोवत पाये ॥ कर
ण जंघ तर पहुंचे जाई ॥ काटत रहे रुधिर धर छाई ॥ ३५ ॥
तुचा काटि वहु आमिष फोसौ ॥ करण सुभट अंग नेक
नमोसौ ॥ सोवत ते तब भृगु पति जागे ॥ देखि रुधिर त
व पूछन लागे ॥ ३६ ॥ परशुराम उवाच ॥ सुत यह रुधिर क
हां ते आयौ ॥ तब रवि नंदन भेद बतायौ ॥ जान्यौ करण वि
प्र नहिं होई ॥ यह छत्री वालक है कोई ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ जद्य
पि छत्री वंश सों है विरोध अति मोहि ॥ कपट रूप विद्या प
ढ़ी अंत फुरै नहिं तोहि ॥ ३८ ॥ श्रोड़ि श्राप आये सदन
रवि नंदन अकुलाइ ॥ उत्त कुंती गृह कों गई तन के चिन्ह
मिटाइ ॥ ३९ ॥ तवही कुंती राय पै नेगी दये पठाय ॥ भीप
म इति कथा कही सवनि सुनी सुख पाय ॥ ४० ॥ सोरठा ॥
कुंतल नृप पै जाय कही बात समुझाय सब ॥ तब भूपति

सुखपाय पठये नेगी लगनदै ॥ ४१॥ सुनत सुरव्द यह बात सुभ घटिका लीन्ही लगन ॥ भीषम सजी बरात हय गयंद परि गह घने॥ ४२ ॥ भुजंग प्रयात छंद॥ चले मत्त मातंग ऐसे विराजैं॥ मनो पृष्प म भारे महा मेघ गाजैं॥ चले तेज सों तेज ताजे तुरंगा॥ मनो लेत भाजे कुरंगी कुरंगा॥ चले बाजि साजे रथी सूर सेना॥ चले वीर बंका कहूं संक हैना॥ चले दुंदभी आदि दै सर्व बाजे॥ चले नृत्य कारी सुकंठी विराजे॥ ४४॥ दोहा॥ नियरने कुंतल नगर अद्भुत भई बरात ॥ निरखि सकल विधि नगर के आनंद उरन समात४५ दुहु कुलनि की रीति जो तिहि विधि कियौ विवाह ॥ दै कन्या बहु धन दयौ समदे सब नर नाह ॥ ४६ ॥ करि विवाह नृप पांडु को भीषम पहुंचे धाम ॥ भये सगुन पैठत नगर होय सकल मन काम॥ ४७॥ दंडक छंद॥ सगुन को सो सार देख्यौ दाहिनो कुरंग दौरभारद मयूर चारु दरपान देखायो है॥ दाहिनोई जंबुक उलूक स्वान दाहिनोई नीलद नाव्रत सुभ सगुन जनायो है॥ दाहिनोई प्राव्द खर शूकर भयौ दाहिनोई उज्जल बसन लैकै रजक घर आयो है॥ अन्न पकवान दूब मृत्तिका सुगंध पान फूलन की माल को विलोकि सुख पायो है॥ ४८॥ चौपाई॥ कुंती गृह भीतर पगु धारी॥ देखन मुख आई गंधारी॥ सब गुन सुभ लक्षन लखि नैना॥ मन में बिलखी कहै नबैना॥ ॥४९॥ बूझी सब गुन की विधि सबै॥ सकल सगुनिया बरणत तबै॥ पैठत नगर सगुन सुभ भये॥ नित नित आनंद दीखैं नये॥ ५०॥ दोहा॥ धर्म धुरंधर होय सुत कुंती गर्भ प्रवीन॥ एक छत्र महि भोगवै करि समह अरि लीन॥ ५१ त्रिभंगी छंद॥ सज्जन मन रंजै दुर्जन गंजै भंजै जग दारिद्र घने

सैनै॥ सत्य कहै सुख सत्य लहै सुख दुःख दहै कवि छंद भनै॥
[illegible]नि मारे जारे रोग किते जगके॥ भारी भय मा
नै निर्भय हानै जानै गुन जसके मगके॥५२॥ दोहा॥ कुब्जिगं
धारी सगुनिया दीनी तुरत निकारि॥ लोभ ग्रसित लोभी कहै
बातन एक बिचारि॥५३॥ बढ़्यौ पांडु नृप तरुनि सौं दिन दिन
प्रेम अपार॥ क्रीड़ा निसि वासर रची सुजस सकल संसार
॥५४॥ दूजौ कर्यौ [illegible] तब आनी तरुनी [illegible]
द्री लसत सौं [illegible] सौ [illegible]॥५५॥ गयौ [illegible]
पांडु नृप आखेटक के काज॥ तहां हते तप जुक्त द्विज रि
खिनी अरु रिषि राज॥५६॥ तबहीं मन [illegible] मन मथ्यौ का
[illegible] रति मांगी त्रिय पै तहां [illegible] अकुला
[illegible]॥५७॥ रिषिनी उवाच॥ पति रति निशि मैं उचित है वासर
[illegible]॥ किती विनय तरुनी करी [illegible] नता
हि॥५८॥ [illegible] चौपाई॥ पशु पक्षी दिन मैं रति करैं
हम तुम रूप मृगनि को धरैं॥ रिषिनी मृगी आप मृगभ
यौ॥ या विधि त्रिय सौं रति [illegible]॥५९॥ [illegible] पांडु
[illegible] गयौ॥ विषम बाण सौं रिषि मृग हयौ॥ लाग
त बाण भयो संताप॥ प्राण तजत तहं दीनो श्राप॥६०॥
दोहा॥ जिहि विधि छोड़ी देह मैं लागत विषम सुबान॥
याहि विधि त्रिय सौं रति करत जैहैं तेरे प्रान॥६१॥ जो
ड़ि श्राप रिषि राजको गृह आयो दुख पाइ॥ महा मलि
न निशि के समय पौढ़्यौ सज्या जाइ॥६२॥ तब कुंती
नृप पै गई करि षोड़श सिंगार॥ मिस करि नृप सोव
त लख्यौ अर्द्ध निशा सुख कार॥६३॥ करत सेव पति
की त्रिया और पलोटति पाइ॥ [illegible] दुख सों दह्यौ

उतर देह नसाइ॥६४॥बड़ी बेर जाग्यौ नृपति कुंती अति सुख पाइ॥ रति मांगी त्रिय लाज तजि कामातुर अकुलाइ॥६५॥ विषको इष सो उर लग्यौ सुनत त्रिया की बात॥ ज्यों त्यों करि ही नासी निसा जौलौं भयौ प्रभात॥६६॥तोटक छंद॥उठि वाहर पांडु महीप गयौ॥नसुहाइ कछू बहु दुःख भयौ॥गज वाजि सबै संग साजि तहां॥ चलि के पहुंचे वन घोर जहां॥६७॥सवैया॥देखि तहां वन ताल के जाल तमाल विशाल नि कोन गनै॥चंदन चंपक अंब कंदब सदा फल श्रीफल वेल घनै॥ केवरो केतकी औ करना कुलि कुंद सुकुंदनि को वरनै॥वेला चमेली जुही बहु कुंजनि पुंजनि पुंजनि में हि मनै॥६८॥दोहा॥ सुवस वसायौ इंदु पथ कानन मैं तिहि ठौर॥रह्यौ विरमि नृप पांडु तहां भूपनि को सिर मौर ६९॥इति श्री महा भारते राजा पांडु वनो वास वर्णनो नाम तृतीयो ऽध्यायाः॥३॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥दोहा॥

तब कुंती मन दुखित ह्वै चली पांडु नृप पास॥ गृह रक्षा को छ त्र कहि रक्खे दासी दास॥१॥ पहुंची भूपति के निकट न गर इंद्र पथ मांह॥ रहत सुचैने लोग सब पांडु नृपति की छांह॥२॥चौपाई॥ रानी तहं जी आवति जवहीं॥शोक भयौ भूपति उर तवहीं॥ निसि सूझ्यो नृप सेज सवांरी॥इंदु वदन त्रिय तहां पगु धारी॥३॥ पति को मन त्रिय लहै नसोई॥ वहु संदेह तासु उर होई॥ तजि लज्या यौं बोली वैन॥ सुनहु प्रानपति बहु सुख दैन॥४॥कुंतीउवाच॥ काहे रखत नहम सों मोह॥यह लखि मो उर वाढ़त छोह॥तुम सों कहौं मदन तजि लाज॥करौ नरवर रति

सुतके काज॥ ५॥ सुखद वचन रानी यौं सुने॥ दुख करि रा
जा मन में गुने॥ दोहा॥ वज्र तुल्य उर में लगी तरुणी की
यह वात॥ वरनी कानन कीकथा विकल देह अकुलात॥
॥ ६॥ पांडु उवाच॥ सोरठा॥ मृग नयनी के रूप रिषिनी रिषि
रति रवत में॥ हयो कह्यौ यौं भूप द्विज के उर प्रार भूई
में॥ ७॥ दोहा॥ दयो श्राप रिषि यौं कह्यौ ज्यौं छांडे मैं प्रा
न॥ त्यौं तरुनी संजोग तें मरन आपनो जान॥ ८॥ यौं सु
नि त्रिय लरखरि गिरी तनकी नहीं संभार॥ सुधि आई
वोली तबै यहि विधि वारंवार॥ ९॥ दंडक छंद॥ किधौं हेम
हसौ आप मान कसौ विप्रन को किधौं धन धसौ जाको
ताहि मैंन दीनो है॥ किधो मैंबिछोयो काहू तरुनी को प्रा
न पति किधौं निंद निगम के गुरुको दोष लीनो है॥ हो
म में वुझायो तन चरत विडारी धेनु झूठी साखि वोली
के वचन महा हीनो है॥ कुंती के विलाप कहै दीनो रि
षि श्राप जाको अंग अंग ताप ऐसो कौन पाप कीनो
है॥ १०॥ राजा उवाच॥ दोहा॥ होन हार सोइ है रहै नहीं
सु मेटी जाइ॥ सावधान के वचन कहि राखी त्रिय स
मुझाइ॥ ११॥ इहि विधि वीते दिन घने चिंता करी भु
वार॥ किहि विधि उपजे वंस गृह होइ सकल सुख
सार॥ १२॥ कुंती उवाच॥ देव आकर्षन मंत्र मोहि दी
ने रिषि दुर्वास॥ तुम आयेसु ले जो भजौं सो आवै मो
पास॥ १३॥ धर्म जपन पति तब कह्यौ तरुनी सों सुख
पाइ॥ आज्ञा ले सुमिरन कियौ सो पहुंच्यो [illegible]
इ॥ १४॥ राख्यो इहि संजोग तब [illegible] संसार।
धर्म असीस दई धनी इहि विधि वारंवार॥ १५॥ ॥

धर्म उवाच॥ चौपाई॥ तेरे गर्भ होइ सुत ऐसो॥ षोड़श क
ला चन्द है जैसो॥ धर्म्म धुरंधर धर्महि जानै॥ दत्त सत्त के
सब मग ठानै॥ १६॥ भूमि भोगवै इक छत्त राज॥ सब वि
धि सारै जगके काज॥ यह कहि धर्म गयो सुर लोक॥
गर्भ धर्यो त्रिय नासे शोक॥ १७॥ दसयें मास पुत्र प्रस
वत भौ॥ मनौ अतनु तनु भूमें धर्यौ॥ जैसे शब्द प्रका
शहि भयो॥ धर्म जन्म महि मंगल भयो॥ १८॥ दोहा॥
निसि दिन नारी नर सबै गावहिं मंगल चार॥ होत
बधाई छत्र कहि नृपति पांडु दरबार॥ १९॥ तब बूझे
नृप ज्योतिषी कहिये लगन विचार॥ कौन महूरत -
सुत भयो सो बरनौ विस्तार॥ २०॥ ज्योतिषी उवाच॥
शुभ दिन शुभ घटिका भयो भाग्य वंत बहु होय॥
एक छत्र महि भोगवै आरि कहुं बचै नकोय॥ २१॥
दंडक छंद॥ सज्जन को हुलास कार दुर्जन को नाश
कार मित्रन विलास कार पृथ्वी को सिंगार है॥
मित्र को बिप्रकास कार पातनि विलास कार भिक्षु
क अवास कार भूमि भरतार है॥ जग जाको आस
कार शत्रु को विनास कार दीननिको जस कार रतन
भंडार है॥ पुन्य को प्रकास कार पापनि को नास कार
नृपता को भास कार धर्म अवतार है॥ २२॥ दोहा॥
उपज्यौ पूरन भाग्य ते तुम गृह सुत कुल मंड॥ जु
त सकल आधीनकैहै खण्डनि दंड॥ २३॥ इहि
सुख दिन बीते किते नृपति पांडु इक काल॥ क
ही बोलि रानी तबै देव अकर्षन बाल॥ २४॥ जा प्र
साद सुत दूसरो प्रगट होइ मम गेह॥ मो आपस

अब उर धरौ भूपति कसौ सनेह ॥ २५ ॥ जपौ मंत्र वोलौ पवन
अंतह पुर एक धाम ॥ तहां भयौ संजोग तव गर्भ धसौ ह
ठि वाम ॥ २६ ॥ सुदरी छंद ॥ पूरन मास भयौ प्रगटौ सुत ॥
काम सरूप सु शोभनि संजुत ॥ [illegible] वात सवै
सुनि ॥ व्यास भजे तिहि वार महा मुनि ॥ २७ ॥ आय गये
रिषि राज तहां तव ॥ जो निय वैन कहे तिनसों सव ॥
सो वर दै रिषि राज महा मति ॥ सोई करौ प्रगटै सुत या
गति ॥ २८ ॥ व्यास उवाच ॥ दोहा ॥ सीसन धुनि सुनि वात
यह देखु पराये ऐन ॥ आए कियो सो पाइये कहे व्यास
यह वैन ॥ २९ ॥ दीन्ही हरषि असीस तव व्यास महा रि
षि राइ ॥ गंधारी को गर्भ तव प्रगट भयो तहं आइ ॥
॥ ३० ॥ जहां शैल के शिखर पर कुटी रिषिनि को धाम ॥
कुंती लहि भीमहि गई कीने अमित प्रणाम ॥ ३१ ॥
सन्मुख गाज्यौ सिंह तहं भीम सेन तिहि काल ॥ हुल
सि गोद तें तव गिरौ पाहन पै उत्ताल ॥ ३२ ॥ अरु हू कों
ज्यौं जलद धुनि सुनि हरि गयो पराय ॥ सुनि गंधारी मूर्छि
त गिरी धरणि अकुलाय ॥ ३३ ॥ थोरे दिन को गर्भ होय मू
र्छि गयो तेहि काल ॥ परौ पिंड सो धरनि पर अंग अंग वे
हाल ॥ ३४ ॥ भयो कुलाहल सदन में भजे व्यास मुनि राय
हितकारी तावंस के तवही पहुंचे आय ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥
वरनि सवै विधि दासी कही ॥ सो सव सुनि मुनि हिरदै
लही ॥ करि सत अंश पिंड के धरे ॥ [illegible] सवनि में तव
संचरे ॥ ३६ ॥ सो घट घृत भरि लये मंगाय ॥ प्रति घट अं
स पिंड सुरव पाय ॥ रारवे एक एक गुण ग्राम ॥ धरे सु
अंतह पुर इक धाम ॥ ३७ ॥ व्यास सिधाये तव रिषि रा

३॥करि गंधारी के चित चाउ ॥ पूरण मास गये जब बीति ॥ खोले घट आनंद समीति ॥ ३७॥ प्रथम जन्म दुर्जोधन लयो ॥ दूजे घट दुशासन भयो ॥ तीजे दूरथ बहु सुकुमार ॥ रूप वंत ज्यौं सोवत मार ॥ ३८॥ चौथे घट उपज्यौ दुहुं वैन ॥ मानो तन धरि आयो मैन ॥ इहि विधि करि सत भये कुमार ॥ शील वंत राचे कर तार ॥ ४०॥ दोहा ॥ २॥ २॥

आनंद भौ धृतराष्ट्र गृह जहं तहं मंगल चार ॥ कंचन भू
षन हेम नग पावत मंगन हार ॥४१॥ सब पुरमें आनंद
भयो मन भायो सब लेत ॥हरषि हरषि कै सकल विधि
सबै असीसनि देत ॥४२॥ धृतराष्ट्र उवाच॥ कहौ बिदुर
आनंद मति जनम लग्न को भाग ॥तुमते और प्रवीन
को हित कै बोल्यौ राउ ॥४३॥ बिदुर उवाच ॥ मैं बिचारि -
देखौ लगन कही नमोपै जाय ॥ मेरो बिलगु नमानिये
सब बिधि देहुं बताय ॥४४॥ जेठो सुत ऐसो भयौ भलो
न करिहै काज ॥ कुलहि कलंक लगाइहै अरु खोवै सब
राज ॥४५॥ नाराच छंद ॥ भलो बुरो गनै नहीं समूह गोत्त
संघरै ॥ लहै नसीख एकहू सबै कुकर्म सो करै ॥ नराखु
पुत्र भूप नीर मांहि सो बहाइये॥ सदा अलीनता करै सुगेह
में नचाहिये॥४६॥ भये कितेक पुत्र और राज काज तेकरैं॥
बिचार और है नभूप बैन मो मनै धरै ॥ गंधारी उवाच॥ न बो
लि मूढ़ कूर मा भलो न तोहि भावई ॥ बोलाय तोहि लीजिये
इसो सु क्यौं नजावई ॥४७॥ दोहा ॥ भीषम बिदुर उठे तहीं यों
कहिकै अकुलाय ॥ जेठो सुत कुल संघरै कुलहि कलंक लगा-
य ॥४८॥ चौपाई ॥ दिन दिन बाढ़त वे सो भाई ॥ यह सब पंडु
नृपति सुधि पाई ॥ फूले अंग अंग दीनो दान ॥ सब जाचक
को राख्यौ मान ॥४९॥ इति श्री महा भारत पुराणे बिजय -
मुक्ता वल्यां कवि छत्र सिंह बिरचि तायां दुरजोधन अवता
र बर्णनो नाम चतुर्थो ऽध्यायः॥४॥ इति आदि कथा बर्ण
नम॥ भुजंगी छंद॥
दई पांडु आज्ञा तहां बोलि भामैं॥ जपौ इंद्र को मंत्र आवै
सुकामैं॥ करयो शक्र को ध्यान सो गेह आयो॥ भलो दृष्टि सं

गसों सुख छायो ॥ १॥ भये मास पूरे भयो पुत्र नीको ॥ नसे संक नासे नसे शोक जीको ॥ महा पांडु नरपति आनंद ही को ॥ वधायो कियो दान दीन्हो दुनीको ॥ २॥ राजाउवाच ॥ कहौ ज्योतिसी पुत्रकी लग्न कैसी ॥ सुनावो सबै मो घरी हो य जैसी ॥ ज्योतिसीउवाच ॥ सुनौ भूप ऐसी घरी की निकाई चहूं चक्र फेरै धरामें दुहाई ॥ ३॥ छप्पै ॥ बाणनिछाय अ कास नाट सुर पुर को ठानै ॥ देवनि करि आतंक भूमि ऐरा वत आनै ॥ सरसमूह सो सेत सिंधुको मारग मंडहि ॥ लंकहि पुर वर जीति लंकपति घरू करि दंडहि ॥ इहविध त वरनषत वर अंतक सो जीतै समर ॥ तीनि भवन कीर ति करहि शुभ लच्छन सुनपंडु घर ॥ ४॥ दोहा ॥ को हर दु म तन सुत भयो अर्जुन पायो मान ॥ मन भायो कारज करै जीति वहु संग्राम ॥ ५॥ चौपाई ॥ अर्जुन जन्म भयो जब सुन्यो ॥ तव गंधारी माथो धुन्यो ॥ कुंती पुत्र वली सब जाये ॥ पंडु राय गृह वजे वधाये ॥ ६॥ फिर भूपति मन में यह आई ॥ इंदु वदन त्रिय निकट वोलाई ॥ आयसु मानि हमारो लेव ॥ जपो मंत्र कि रि आवै देव ॥ ७॥ कुंतीउवाच ॥ मंत्र न जापों पति गुण ग्राम पुत्र वली प्रगटे तुम धाम ॥ पंच पुरुष सो जारति मानै ॥ तासों गनि का कहैं सयाने ॥ ८॥ तुम अज्ञा तें यह विधि कीयो ॥ देव वुलाए उरमति धरो ॥ जो यह पति को कह्यो न कीजै ॥ घोर नर्क तो आप परी जे ॥ ९॥ पांडउवाच ॥ दोहा ॥ देहु माद्री को यही मंत्र विचक्षण वाम ॥ तो प्रसाद सुत पावई हो य सकल मन काम ॥ १०॥ तब अश्विनी कुमार को मं त्र दियो तिन वाहि ॥ सुमिरत्ति आयो देव तहं कोटि म दन छवि जाहि ॥ ११॥ भयो सकल [illegible] नहं गर्भ म

सौ तिहिं वाल॥ करि मन पूरण कामना देव गयो तिहि काल॥ १२॥ उपजे ताके गर्भ तें रूप वंत सुत दोइ॥ मंगल चारभ ये सदन आनदो सवकोइ॥ १३॥ चौपाई॥ सुर किन्नर कौतुक चाल आये॥ व्योम विमान सकल छवि छाये॥ कोटि काम छवि वरनि नजाई॥ निसु दिन आनंद होइ वधाई॥ १४ जेठ सुत को सहदेव नाम॥ लहुरे नकुल लसै छवि काम॥ कहै ज्यौतिषी सुनि भुव राइ॥ पुत्रन के गुन कहौ सुनाइ॥ १५ जेठो वली सकल जग जानै॥ जाको वल सब दुनी वखानै॥ पंडित हुहै आगम कहै॥ मान सकल अरि गण को दहै॥ १६॥ खांडे वली नहुसरो होइ॥ महि मंडल जाने सव कोइ भये सयाने पांचौं भाइ॥ वहुतक दिन जव गये सिराइ॥ १७॥ दोहा॥ लख्यौ स्वप्न अरिष्ट तव एक द्यौस नर नाथ॥ स्याम वरन देहे रदन तिहि त्रिय पकरे हाथ॥ १८॥ चलि चलि कंता यौं कहै वारंवार सुनारि॥ कारो नरु ठाढो लख्यौ केस भूमि लौं डारि॥ १९॥ छाया लखी सरीर की विन सिर देखी देह॥ जागत ही नर नाह उर भयो महा संदेह ॥ २०॥ जप तप दान किये घने पंडित विप्र वुलाय॥ सात्विक दान दये तहां सवही को सुख पाय॥ २१॥ तीन द्यौस अंतर भयो कीनो नृप वहु दान॥ पुहुप वती मादृी भई तव कीन्हे असनान॥ २२॥ पति की सज्या को चली करि षोड़स सिंगार॥ नवल चीर आभरण वहु कंकन तर वनि हार॥ २३॥ सवैया॥ खंजन की गति गंजन नैन करी दृग अंजन रेख निकाई॥ भूषन के मुक्तानि के हार सिंगार सजी सब सुंदर ताई॥ पीन उरोज मुखी सब देह मनोज के ओज सरोज

सो छाई ॥ चातुर काम की पातुर सी अति आतुर ह्वै पति पास सिधाई ॥ दोहा ॥ इंदु बदन त्रिय पति निरखि कामातुर अकुलाइ ॥ दंपति रति मानी हरषि रिषि के वचन नसाइ ॥ २५ ॥ ❈ ॥ ❈ ॥ ❈ ॥ ❈ ॥ ❈ ॥ ❈ ॥
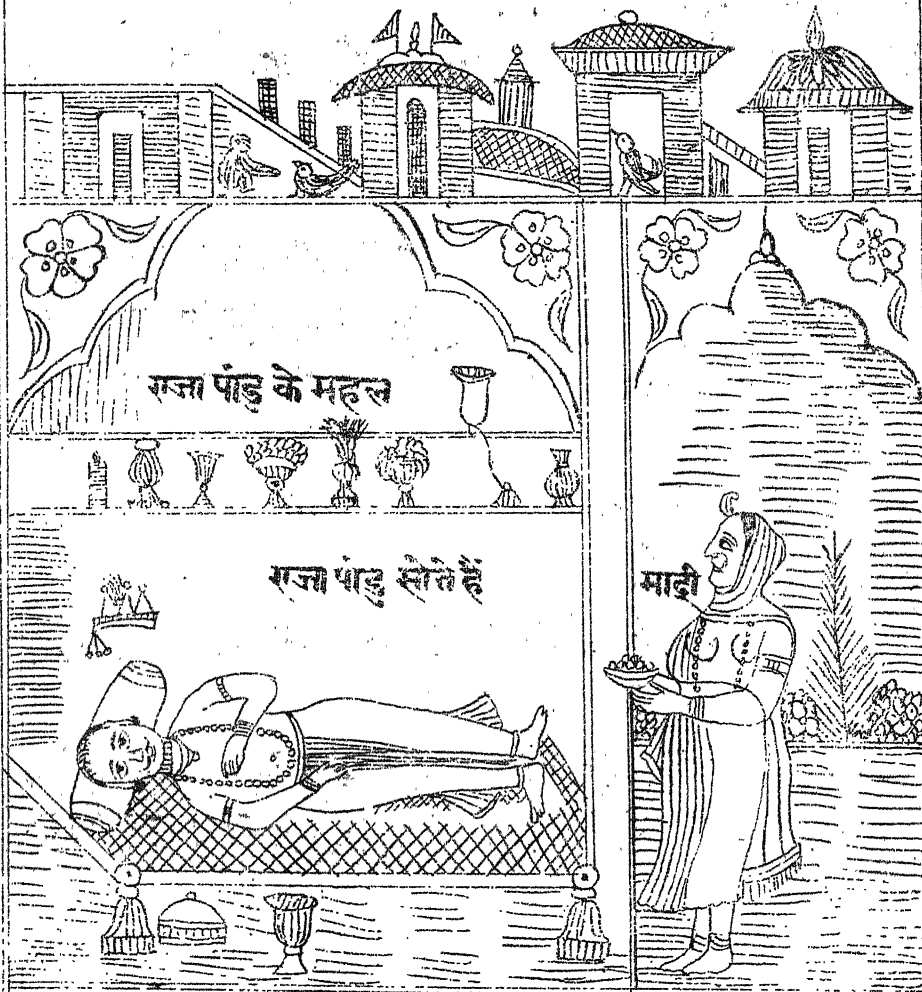
तबहीं सुख संजोग मे भूपति छांड़े प्रान ॥ अंधकार दुख को जगत भूप अथयो भान ॥ २६ ॥ शोक कुटुंबिनि के भयो नर नारिन उर दुःख ॥ रहो नचारो वर्ण में काहू के उर सुःख ॥ २७ चौपाई ॥ रिषिन आय कुंती समुझाई ॥ करता गति सो कहा बसाई ॥ सहदेवन कुल माद्री लए ॥ मोह छांडि कुंती को दए ॥ २८ ॥ माद्रीउवाच ॥ ज्यौं अपने तीनौ सुत जानौ ॥ त्यौंमो पुत्रन सों हित ठानौ ॥ यह कहि उठी शीघ्रही कामिनि ॥ भूपति संग भई सह गामिनि ॥ २९ ॥ जब यह सुधि भीषम को गई ॥ सहित विदुर बहु चिंता भई ॥ कीनो पांडु नृपति को सोग ॥ खान पान बहु भूल्यौ भोग ॥ ३० ॥ दोहा ॥ चलि आये ते इंद्र पथ समुझाये नर नारि ॥ लै पांचौ पुत्रनिचले कुंती जुत सुख कारि ॥ ३१ ॥ नगर हस्तिना पुर गये सब ही लै सुख पाइ ॥ गंधारी उर सुख भयो देखत बहु पछिताइ ॥ ३२ ॥ गंधारीउवाच ॥ दुर्जोधन की सब करौ सेवा तन मन लाइ ॥ आधी नृपता लै जिये धर्म पुत्र सुख पाइ ॥ ३३ ॥ इति श्री महा भारत पुराणे विजय मुक्तावल्यां कवि छत्रसिंह विरचिता यां अर्जुन सहदेव नकुल अवतार वर्णनो नाम पंचमो ऽध्यायः ॥ ५ ॥ ॐ ॥

॥ दोहा ॥

दुरजोधन को आदिदै सत बंधव बल बीर ॥ इतहि पंच सुत पांडु नृप तेखेलैं इक तीर ॥ १ ॥ रखत उर मे दुष्टता कौरव भांति अपार ॥ ताको बारुनबांकरइ जो सहाय करतार ॥ २ ॥ मत्त सहस दश भीम बल दीनो त्रिभुवन नाथ ॥ चाहत बांध्यौ ताहि बल जुरि कौरव इक साथ ॥ ३ ॥ सुंदरी छंद ॥ मंत्र कियो इहि भांति सबै
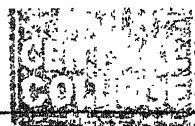
जन॥भीमहि बांधो दै दृढ बंधन॥याहि दयो विधि आप महा बर॥
मारत ताहि अनाय जुधिष्ठिर॥४॥बिनहि बंधु कछू करि जानहि॥
जो कहिहैं सोइ आयसु मानहि॥ते सरिता तट खेलत है सुत॥
कौरव पांडव आनंद संजुत॥५॥कौन हरावहि भीमहि को बर-
साजहु बार कछू आपनो छर॥सोवत बांधौ दै दृढ बंधन॥गं
ग बहा बहु याहि ततक्षन॥६॥दोहा॥भीमसुवायो सदन में
सत बंधव सुख पाइ॥दृढ बंधन सो बांधि करि साहत लयो
उठाइ॥७॥रह्यो मुष्ट करि पवन सुत देखत तिनके भाइ॥
के से सोये मूढ मति मोको सके उठाइ॥८॥पनिहारे बंधन सबै
सके न ताहि उठाइ॥दुर्जोधन अद्भुत गन्यौ अबलो कौ
सो आइ॥९॥दुर्जोधन बाच॥प्रथम कह्यौ तुम प्राण
बिन फिर यह बांधो आइ॥अबकंटक मेरो मिट्यो
दीजे गंग बहाइ॥१०॥बरु करि लयो प्रजंक जुत दूसा
सन धरि शीस॥चले बहावन सुरसरी संग बंधु दशबी-
स॥११॥डारो गंग प्रवाह में देख्यौ को सक जात॥
दुर्जोधन सो आयके कही सकल बिधि बात॥१२॥-
चौपाई॥सब कौरव मन आनंद भयो॥अब निज सा
ल हमारो गयो॥अब वे चारों बंधु अनाथ॥दीजै चारि
ग्राम नर नाथ॥१३॥जो कहिहो सो सेवा करि हैं॥
अब नहिं गर्ब कछू चित धरि हैं॥बंधन तोरि भीम तब
धायो॥कौरव जहां तहां चलि आयो॥१४॥सुंदरी छंद॥
देखत ही कुम्हिलाय गयो सब॥केतिक भागि चले ग्रह
को तब॥बोलत है सब कौरव या गति॥खेल कियो हम
बंधु महा मति॥१५॥खेल कियो तुम सो हम जान्यो
॥हांसिन आप ।बसा सहि ठान्यो॥❀॥❀॥

भूप जुधिष्ठिर आयसु मानहु ॥ नातरु आजु सबै तुम जानहु ॥१६॥ दुरजोधनउवाच॥ गंग बहाय दयो जब तू इनि॥ मोहि भई उर में रिस यो सुनि॥ मैं पठयो दइ बैन तहां तब॥ तू चलि आय गयो कित ह्वै अब ॥१७॥ गीतिकाछंद॥ करी झूठी सौंह इन कछु नाहि मोहि जनाइयो॥ खोलि बंधन फांसि चलिकै भंल मो ढिग आइयो॥ भीम सेन उवाच ॥ करौं भूपतिकानि तेरी धर्म सुत सिख मैं लई ॥ नातरु बचौं कत मोंहि सेरत जाय रिसि क्यौं आगई ॥१८॥ कहि बैन ये चलि सदन आयो आइ माता सों कही॥ अंध सुत मिलि दुःख दीनो सो परै कैसे सही॥ जानि कै वे छुधित मो सब बचन ककस उचरैं ॥ जब करत हैं मुख धर्म सुत की आन वे सब परैं ॥१९॥ बांधि कै गंगा बहायो दया फिर जिय मेभई॥ छोरि बंधन सकल दीने बाट गृह की मैं लई॥ कुंतीउवाच ॥ मानि दुरजोधन महीपति कानि तिन की कीजियै ॥ जो कहैं नर नाथ सोई मानि आयसु लीजियै ॥२०॥ छुधित जान्यौ भीम जब आहार ले आगे धरौ॥ भारके ते अन्न बिंजन तसहू भोजन करौ॥ उदर पूरण कै उठौ बहु बस्त्र बसननि साजिकै॥ उठि गयौ कौरवकी सभा तब दुरद सो गल गाजिकै ॥२१॥ देखिकै कुरुराज आदर हेत सो बहु बिधि करौ॥ छरस भोजन करौ तुम हित सो रसोई में धरौ॥ प्रीति तुमसो मोहिये अरु सकल अनुजनि के हिये॥ निस द्यौस देखत तोहि आनंद छिनक बिछुरे नाजिये॥२२॥ बिदुर उवाच॥ दोहा॥ सब कौरव की दृष्टि छुसि बिदुर कही यह आन॥ तू कित आयो भीम त्यों बिष

ज्यौनारहि खान ॥२३॥ सवैया ॥ आवत ह्यां बहुतै दुचितौ लखि तोहि पसीजि चल्यौ अंगहू है ॥ मानतु नाहि सबै मिलि जागत दुःख दियो बहु ना कछु है ॥ भोजन कीनो महा बिष संजुत आवहि तूकत बावरी है ॥ धर्म के नंदन जैसे बचावत काल बचाउतु हू दिन है ॥२४॥ भीमउवाच ॥ दोहा ॥ सिंघ छवन कहि क्यों जिये जो कहुं पंछी खाय ॥ मेरे कृस को ध्यान उर काल कहां नियराय ॥२५॥ कही नृपति सो मोहि तुम जोनाहो अघ बाइ ॥ सकुचि छांडि भोजन करौं बिदुर गेह जो जाइ ॥२६॥ दुस्सासन उठि तुरत ही बिदुर पठायो धाम ॥ जेवत बैठो भीम तब सजे सकल मन काम ॥२७॥ दंडक छंद ॥ रसहू अन रसहू में हांसी अरु खेल हू में गृह अरु बाहिर नेक मन ख्यौ ॥ दुष्ट दुरजोधन हलाहल के आधे आधु ताके हिये दुष्ट तानि भाजन है रच्यौ ॥ ल्याइ ल्याइ आमिख अनेक पकवान तहां खारनि खारि के समूह आगे सच्यौ ॥ कीनी न गलानि सों बखानि कबि छत्र कहै जानि बूझि पवन पूत सोई बिष पच्यौ ॥२८॥ दोहा ॥ जितनो ल्यावत खार कछु ठार लगै नबार ॥ बच्यौ रसोई में नकछु जेयें कैयो धार ॥२९॥ दोधक छंद भीम चल्यौ तबही गृह आयौ ॥ कंचन पालकि धाम बिछायो ॥ सोइ रह्यौ मन आनंद कीनो ॥ सोधि तहां सत्त बंधव लीनो ॥३०॥ रैन गई तब कौर ब धार ॥ कुंतल की तनया ढिग आये ॥ सोवत भीम कहां सुख पायो ॥ खेलन को अब क्यौं न जगायो ॥३१॥ जागि उठ्यौ चलि सो तहं आयौ ॥ दुष्टन के मन में भ्रम छायो ॥

कहौ तुम सों मति भाउ ॥ चौस पांच में लीजे दाउ ॥ पर मेरे है महा पिरात ॥ ताते मोपै चल्यौ न जात ॥ ४२ ॥ दुश्शासन [illegible] नाम ॥ बक सो अंत कहौं सति भाउ ॥ तब हम छांडै अपनो दाउ ॥ ठाढ़े भीम सेन यौं [illegible] दाउ बिरानो कैसे राखे ॥ ॥ ४३ ॥ दयो दुश्शासन दंड [illegible] ॥ पठौ सौ कोस एक पैजाय ॥ ढूंढ़त भीम लाय यौं तहां ॥ कौरव बंधु हुते सब जहां ॥ ॥ ४४ ॥ दुश्शासन फिरि उत सौं धाइ ॥ चाहत दंडहि देऊं चलाइ ॥ पकरौ भीम बीचही आय ॥ सक्यौ न दूरि दंड पहुंचाय ॥ ४५ ॥ तब दूसासन बट को धायो ॥ अंध पर पवन पूत कैपायो ॥ उतरि दाउ दुश्शासन दीजै ॥ अब कछु लोभ न आपन कीजै ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ सब मिलि बट पर चढ़ि रहे सुने नही कोउ बात ॥ भीम गह्यौ द्रुम मूल तब हर्षवंत हैं गात ॥ ४७ ॥ गहि यौं गाढ़ी डार को रहि यौं सबै सम्हारि ॥ पवन चलायो [illegible] तब सनकत गिराये मारि ॥ ४८ ॥ दंडक छंद ॥ एक परे [illegible] मुख एक गिरे उर्द्ध मुख धुकि धुकि परत धरा धरा धरकत है ॥ एक लोट पोट है के चोट खाइ [illegible] गहे एक अध पर साखा गहे लरकत है ॥ एक दूर [illegible] उठि भागत है डारि - डारि कंपि कंपि थर थर [illegible] फरकत है ॥ अंध सुत बंधु सत डारि और डारिनि ते [illegible] हू भूमि - घूमि भूमि परे [illegible] ॥ ४९ ॥ [illegible] बराह गृह को भजे गहे भीम [illegible] ॥ सब कौरव [illegible] गयौ उबरे हाहा खाय ॥ ५० ॥ [illegible] मही पाल कौ सब बीती कथा सुनाइ ॥ रोस वंत [illegible] भयौ सुनि कै बहु - दुख पाइ ॥ ५१ ॥ दुर [illegible] उवाच ॥ दोहा ॥ सकुरव

वैर नकीजिये रहो सकल अगाह ॥ तौलाजौं सुनि जो उन्है ठौर नदेहु छुटाह ॥ ५२ ॥ इति श्री महा भारत पुराणे बिजय मुक्ता वल्या कबि कृत बिरचिता यां - भीमसेन कौरव संबाद बर्णनो नाम षष्टो ऽध्यायः ॥ ६ ॥

सोरठा ॥ खेलत येकहि साथ कौरव पांडव अनुज सब भारत कंदुक हाथ जैसे ससा बहीर को ॥ १ ॥ दोहा ॥ उछरी कंदुक तिहि समय परी कूप में जाय ॥ काढ़न को सब बंधु मिलि साजत किते उपाय ॥ २ ॥ गीतिका छंद ॥ कूप तट रिषि द्रोन आये निरखि या बिधि सों

कहै ॥ नहीं हैस्समरत्थ कोऊ काढ़ि कंदुक को लहै ॥ बंस -
क्षत्री को लज्या वत जतन नहि करि आवही ॥ काढ़ितुम
को देहुं यह चण सीक जो कोउ लावही ॥ ३ ॥ आनि आ
पी सींक ताकरि धनुष तावै ॥ तिहिं करयौ ॥ बाण ताही को
रच्यौ तिहि काल धनु ऊपर धरयौ ॥ लग्यौ कंदुक मांहि
सो सर साक दूजो कर लयौ ॥ करि कर्म अद्भुत बेगि
देहखु माहि हीद्रष सोदयौ ॥ ४ ॥ दोहा ॥ यहि बिधि बे
धी सींक सो सींद कूप मंझार ॥ आन सींक गहि काढ़ि
यो गेंद छन तिहि बार ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ देखत सकल अ
चम्भै रहै ॥ समाचार भीषम सों कहै ॥ लयो पितामह -
बिदुर बुलाई ॥ द्रोण बिप्र ढिग पहुंचे आई ॥ ६ ॥ तेहि[illegible]
आये आपने गेह ॥ करि सनमान रच्यौ बहु नेह ॥ सब
सिसु तापहं बिद्या पढ़ै ॥ [illegible] चाउ सौगुनो बढ़ै ॥
अस्त्र शस्त्र बिद्या सब जानी ॥ बिदुर पिता मह के मन
मानी ॥ तिन में अर्जुन भौ [illegible] गुरप्रसाद पायो
गुण भारी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ देख्यौ बालसिसुन को तब गुरु
द्रोण प्रभाउ ॥ कर्यौ अखारो सकल मे बोले राजा राउ ॥
॥ ९ ॥ त्रोटक छंद ॥ रबि पुत्र तहां तब कर्ण गयो ॥ कुरु
नंदन साथ मिलाप भयो ॥ अति आदर भाउ बिसेख
कर्यौ ॥ हित सो नरनायक [illegible] ॥ १० ॥ मन दंतनि
के बहु मंच बने ॥ बहु चित्र बिचित्र अवास [illegible]
बैठे पितामह आदि सबै ॥ निरखैं सिसु कौ कुरु लोग
सबै ॥ गुण की रचना [illegible] जानही ॥ लखि अद्भुतबर
नत लोग तहीं ॥ भट और न अर्जुन की सरि हैं ॥ -
गहि के धनु को समता [illegible] हैं ॥ १२ ॥ यह बात सुनी

दुर्जोधन जबही॥प्रगट्यौ उर कोप महा तबही॥धनु लै तब अर्जुन पास गयौ॥अवलोकि सुरेषहि छाइ गयौ ॥१३॥ कर्ण उवाच॥ तोमर छंद॥ अब समर मोसों माडि सब देहु बातनि छांडि॥ सजि बाण तू डर डारि॥ अब पांडु पुत्र सम्हारि॥ अर्जुन उवाच॥ साजि तो कह बान। यह नाहिं मेरो स्थान॥ निज होइ भूपति कोय॥पुनि-समर तासो होय॥१५॥दोहा॥ कैसे कहौं बराबरी मोसों तोसों आय॥ तूसुत है निज सूतको नही अवनिपति राय॥१६॥ सुनि दुर्जोधन कोपकरि कीन्यौ करण भुव राय॥टीको नृप ताको कयौ सुभ घटिका सुख पाय। ॥१७॥ सवैया॥ अर्जुन के सुनि बैन सरोष तहां कुरु राज महा रिस भीनो॥ देस दियो सब कोसु दियो बहु बाजि दैसाजि कै वाहन दीनो॥ भूषन दै गज भूषन भूपति भूप कियो कबि छत्र नवीनो॥ राज दियो सुख साजि दियो सब काज के कर्ण महीपति कीनो॥१८॥ दोहा॥ जुरे कर्ण नर नाह तब अर्जुन सों करि जुद्ध॥ दुन्यों धनुर्धर धीर अति करत अमित गति जुद्ध॥ ॥१९॥ देखै जननी पुत्र बिधि करत दृष्टि सब लाय॥ कही महा अकुलाय सुत दोऊ राखि गुसाय॥२०॥ पांच बार धर मूरछो कर्ण सुभट बलि बंड॥ बार सात अर्जुन धुको बिक्रम कियो अखंड॥२१॥ दोऊ बरजे द्रोन गुरु दोऊ सिसु इक सार॥राखि अखारो सम दियो लोग सकल तिहि बार॥२२॥ दुरजोधन लै करण को गये आपने धाम॥ आजु पैज राखी महा सुनि रबि सुत गुण ग्राम॥२३॥

द्रोणाचार्य उवाच॥ चौपाई॥ धनि धनिसुरपति सुत सुख दाई॥ सबते तुम पौरुष अधि काई॥ यह कहि अपने कंठ लगायो॥ हैहै तोतें जो मन भायो॥२४ जाडर करण कर्यौ नर नाह॥ तोहि निरखि दुरजो धन दाह॥ गुरु दक्षिणा सकल मिलि देहु॥ द्रुपद जीति मेटौ संदेह॥२५॥ अर्जुनउवाच॥ जो आज्ञा मोहि देहो आप॥ सोई करि हौं तुम परताप॥ प्रथ महि दुर्जोधन सो कहो॥ यह गुरु दक्षिना उनपै लहो॥२६॥ जोवे यह करि सकै न आजु॥ तब सारौंगो हौं सब काजु॥ यह सब कही द्रोण तहँ जाय॥ कौरव सर्नौ बनू सुख पाय॥२७॥ किये द्रुपद सो सन्मु ख जुद्ध॥ तब पंचाल कियो बहु क्रुद्ध॥ बाननि सु सौ समर भुव आइ॥ अंबर लीनो तन छिनवाय॥ ॥२८॥ दंडक छंद॥ द्रुपद सो जुरे अंग सोदर सकल संग लीनो रण रंग महा सूरनि के गण में॥ बाननि आकास छाय दीव समुदाय जुद्ध क्रुद्ध बाढ्यौ अ दुद्ध वीरनि के मनमें॥ केते सरजाल को प्रयोग कि यो पांचाल कौरव बिहाल काहू धीर नहीं तन में॥ सेना अकुलानी देखि राख्यौ छत्र कुल पानी लेखि पांडु पुत्र पाँचौ तहाँ आइ गाजे रण में॥ २९॥ दोहा अरजुन करि संग्राम बहु जीतो सो नर नाथ॥ आन्यौ बांधि सु गुर निकट चकित भयो नरनाथ ॥३०॥ चौपाई॥ डार्यौ गुरुके चरननि सोई॥ देखत अ द्भुत बात सब कोई॥ बाल मित्रता की सुधि करी॥ विप्र द्रोण करुणा हिय धरी॥ ३१॥ आनि छित भूप

ति कंठ लगायो॥ तुम तें भयो सकल मन भायो॥ धनि अर
जुन गुरु द्रोण पुकारे॥ तो बिनु मो कारज को सारे॥३२
युधिष्टिरउवाच॥ सुनि अर्जुन सोदर गुण ग्राम॥ आजु
करों नीको संग्राम॥ भयो हमारो सब मन भायो॥ दुर
जोधन को गर्भ नवायो॥३३॥ द्रुपद राय बिलख्यो गृह
गयो॥ महा सोच उर अंतर भयो॥ द्रोणहि हित कै
परिहु सुसारैं॥ ऐसे कोटि बिचार बिचारैं॥३४॥ पुत्र
प्रिरवंढी ताके धाम॥ तातें सरे नहीं मन काम॥ जज्ञा
रम्भ बोलि द्विज कीनो॥ भूपति अति करुणा रसु
भीनो॥३५॥ दोहा॥ जज्ञ कुंड ते तब कढ़ी कन्या रूप
निधान॥ कै रति सची पुलोमजा है मेन का समान॥
३६॥ नाम द्रौपदी तब भयो निरखत दुहित्ता नैन॥
धृष्ट दुवन पुनि कुंडते कढ़्यो पुत्र जनु मैन॥३७॥
द्रुपद उवाच॥ या कन्या या पुत्र तें हैहै सब मनकाम
पूरण करि कै जज्ञ को हर्षो भूपति धाम॥३८॥ तब
ही जज्ञ सिराय के सब समंद रिषि जाल॥ वर्णवर्ण
सुबरण सहित सुरभी देति हैकाल॥३९॥ इति श्री
महा भारत पुराणे बिजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र सिं
ह बिरचिता यां अर्जुन बिजय वर्णनो नाम सप्त
मो ऽध्यायः॥७॥
दुर्जोधन उवाच॥ त्रिभंगी छंद॥ कहा मति कीजे क्यों
जग जीजे वे सब कीजे उर धरिये॥ कछु मंत्र विचारैं जे
ज्यौ हारैं भीमहि मारैं सो करिये॥ कछु विंजन की
जे बहु विष दीजे बोलि सुलीजे भोजन कों॥ सुनि
धावन धाये॥ तुरतहि लाये बहु भाये भूपति मनकों

॥३॥ अति आदर की जो बहु सुख भीनो ताहि तबै ॥ मन सुख भये भारे आंध दुलारे आय जुहारे बंधु सबै ॥ निस दिन तुम आवत मन करि आवत सरसावत आनंद घने ॥ सबही सुख पायो नेह बढ़ायो मन भायो वह को बरनै ॥ २ ॥ भीम सेन उवाच दोहा ॥ सेवक जानत मोहि तुम कृपा करत सब कोइ ॥ ताते दिन प्रति की इहां आवन को मन होइ ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ सहस लाष पनवारो आयो ॥ पवन पूत जेवन बैठायो ॥ दस बीसक जन परसत धाई ॥ सोई लेय छिनक में खाई ॥ ४ ॥ दंडककंद दुष्टता को पूर अति तामस को मूर महा क्रूर दुरजोधन रहतु तासों क्रोध में ॥ काल कूट फोरि फोरि जोरि जोरि केते बिष घोरि घोरि डारे बहु भोजन असेष में ॥ ब्यंजन अपार [illegible] के यो भार आनि कीनो हलाहल आधे आधु [illegible] में ॥ लावत ही हारि जात खार जेतो डारि जात भीम सेन खाि जात पातरि निमेष में ॥ ५ ॥ सवैया यद्यपि आनत चित्त कछू नहिं जद्यपि भाव महा छलको ॥ जानति जानतु भोजन स्वातु नहीं डरु ताहि हलाहल को ॥ भोजन ब्यंजन छंद घने सु किते कनि जेयन लग्यो पल को ॥ दृष्टि इतै उत सोन करै नकरै सुतौ पान कहूं जल को ॥ ६ ॥ दोहा ॥ भोजन करि बीरा लयो चल्यो आप ने गेह ॥ छाय गयो लिहि काल बिष अंग अंग सब देह ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ पवन पुत्र जब बाहर आयो ॥ जान्यो भीम महा बिष खायो ॥ आई लहरि गिरो बिकराल ॥ तब नहं सोवत बारंबार ॥ ८ ॥ तीनो मोलघु सादर आइ ॥ तिन की इन सों कहा बसाइ ॥ भूपति मन में नेक न क्रोध ॥ कौरव सों को करै बिरोध ॥ ९ ॥ यों सुमिरत

दोहा॥ बासुकि दुहिता आहिमैं अहिल मती सो नाम॥
गवरि कृपा पाये पुरुष मो गृह करि बिश्राम॥२७॥
अब अपनी सब विधि कहो कोहो आप निदान॥
कौन बंस का नाम है किहि कारण ह्यां आन॥२८॥
भीम सेन उवाच॥ सोम बंश हम सुखद निय कुंती मातु सुजान॥ भूपति जंबू दीप के माँहि मंडल में आन॥
२९॥ तव संग दीसैं ब्याल बहु कहो कौन यह भाउ॥
जिते तिते ये देखियत सो सब बरनि सुनाउ॥३०॥ *॥
अहिल मती उवाच॥ ये पियूष के कुंड नव जग की जीवन मूरि॥ रखवारे तहँ सर्प बहु रहे चहूं दिसि पूरि॥३१॥ भीम सेन उवाच॥ दोधक छंद॥ मैं अब कुंड सकल लखि पाये॥ सोखौं सबै करौं मन भाये॥
अहिल मती तब बिनवै ताहि॥ यह कछु बातन नीकी आहि॥३२॥ जैहैं ब्याल किते लिपटाइ॥ रंचक सुधा सको नहि खाइ॥ करि बिवाह जो मोसों लेह॥ जानि हितू मानै सब नेह॥३३॥ दंडक छंद॥
भारे भारे ब्याल महा कारे कारे बिकराल काल हू के काल जहां तहां छाइ जायंगे॥ आनन की ओर जे स्रवत बिष ज्वाल जोर घोर घोर चहूं ओर कहां धौं समाइंगे॥ सप्त मुखी एक आह मुखी ते अनेक एक एक मुखी आसी बिष आइ लपटाइंगे॥ जोर दोऊ हाथ कहौं मानो प्रान नाथ प्यारे देखि ऐसे साथ कैसे धीरज धराइंगे॥३४॥ नाराच छंद॥ दुरै न मंत्र मूरि एक एक ब्याल जोड़सें॥ करो विचार कौन आप संग आय जो रसें॥ कछू सुने न नारि

बात भीम सेन यों कहै ॥ सरोष मोहिं देखि कें कहो सु
कोइहां रहै ॥ ३५ ॥ भुजंग प्रयात छंद ॥ लखे कुंड नैना नि
सोखें अबै हों ॥ सबै नाग के जूथ को त्रास देहों ॥ चल्यौ
धाय कें नारि यों चित्त सोचै ॥ करै दुःख सो नीर नैना
नि मोचै ॥ ३६ ॥ अहिल मती उवाच ॥ कहा कर्म कीनो
मुया मैं जियायो ॥ दुहूं भांति सों काल ह्वै ख्वान आयो ॥
करै जो कहूं यह पराजै पिता की ॥ बिनासै किधौं
जुद्ध मैं देह याकी ॥ दुहूं भांति मोको महा दुःख ह्वैहै ॥
अभै दान मोको कृपा सिंधु दैहै ॥ महा क्रोध ह्वै पवन
को पूत धायो ॥ हते नाग सो कुंड में पैठि आयो ॥ ३७
महा क्रोध कीनो सबै व्याल धाये ॥ चहूं ओर घेरे सबै
कुंड छाये ॥ उठ्यो कोपि कें भीम धायो तहां ते ॥ भगे
नाग सो नैन देख्यो जहां ते ॥ ३८ ॥ दंडक छंद ॥ एक
मारे तोरि कें मरोरि मारे एकै नाग एकै मारे मींडि
कें कहा लों कहों करनी ॥ एकै धाय कै धुकाय दये
धांवत हीं धर धर धर करत है एकै परे धरनी ॥ एकनि
के कारे फन फर फर फर करत थर थर कंप भगे
एकै लेलै धरनी ॥ भागि भागि एकै गये बासुकि नरे
श आगे जायकै अकह कह बात सबै बरनी ॥
३९ ॥ नागउवाच ॥ चौपाई ॥ आयो असुर एक अति
भारी ॥ कोंहू न मानत आन तुम्हारी ॥ कुंड एक क
रि लीनो पान ॥ मारयो सब नागनि को मान ॥ ४० ॥
चौखन कुंड सकल कहे कहै ॥ पर्यो काहू सो सुभि
लहै ॥ बासुकि कहै असुर नहि होई ॥ नृपति जुधि
ष्ठिर बंधव सोइ ॥ ४१ ॥ भीम सेन है ताको नाम ॥ कीहै

थल जीत्यो तिहि संग्राम॥वा बिनु हतो बली को और॥सोम-बंस सुभटन सिर मौर॥४२॥दोहा॥जुद्धिष्टर नर नाह की देइ दुहाई धाइ॥भीम सेन कुंडु निकट सकै मनीयरे जाइ॥४३॥चौपाई॥आय रजाइस धामन धायो॥तुरतहि पवनपुत्र ढिग आयो॥आनि युधिष्टिर नृपकी दीनी॥कानि भीम कुंडनि की कीनी॥४४॥भीम सेन उवाच॥जौन दुहाई देते आई॥कुंडल सकल होले सोखाई॥कौने तुमे वता यो भेद॥यह मन में बहु उपज्यौ खेद॥सुधि पाई वासुकि उठि धाये॥भीम सेन तब कंठ लगाये॥बहु सुख संजुत लै गृह गये॥रूपष्ट कुली मन आनंद भये॥४५॥दोहा॥शुभ घटिका शुभ लग्न गनि शुभ वासर शुभ बार॥आहिल मती भीमहि दई करि बिवाह सब चार॥४७॥पाइ दाइजो व्याहि कै बिधु बदनी बर नारि॥हिय हुलास कीनो महा बदन मयंक निहारि॥४८॥बहु प्रताप पूरण कला भीम सेन ज्यौं भान॥फूलति लखि अंबुज मुखी सब गुण रूप निधान॥४९॥सोरठा॥धर्म पुत्र भुव राय सहदेव सों यह कही॥यह संदेह मोहि आय भीमहि भयो बिलंब बहु॥५०॥सहदेव उवाच॥गयो बीर पाताल भूपर नहीं सु भूमि पति॥कौरव कर्म कराल करि भोजन में बिष दयो॥५१॥दोहा॥दीनो गंग बहाइ सो परयौ पतालहि जाइ॥वासुकि तनया तिन बरी रहत तहां सुख पाइ॥५२॥पठयो धावन भूप तब पहुंच्यौ भवन पताल॥बोले हो तिन सों कही जुधिष्टिर भूपाल॥५३॥पवन पुत्र मांगी बिदा

बातु कि पै सुख पाइ ॥ नाय मास तिन को बल्यो अहिल मती संगलाइ ॥ ५४ ॥ चौपाई ॥ सबनागनि मारग दरसायो निकसि भीम भुव ऊपर आयो ॥ धर्म पुत्र के आनंद भयो। कुंती को सब दुख मिटि गयो ॥ ५५॥ सकल अनुज मिलि आनंद ठयो ॥ महा दुखित कुरुनंदन भयो ॥ दयो दुष्ट सुरसरी बहाई ॥ कहो कहां ते प्रगटयो आई ॥ ५६ ॥ सकल जगत अपजस ह्वै गयो ॥ अब यह सालु हमारो भयो ॥ अब कछु ऐसो करो विचार ॥ भीम सेन को सकिये मार ॥ ५७॥ राजा युधिष्टिर उवाच ॥ दोहा ॥ अंध सुतनि को मान हति कियो सुजस संसार ॥ गांधारी को गर्व अब गयो बार इहि बार ॥ ५८ ॥ इति श्री महा भारत पुराणे विजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र सिंह विरचितायां भीम सेन बिवाह वर्णनो नाम अष्टमो ऽध्यायः ८

दोहा ॥ आश्विन कृस्ना अष्टमी नर नारिनि की भीर ॥ पूजन गज नारिनि सजे भूषन बसन शरीर ॥ १॥ महा मलिन कुंती भई अर्जुन निरखी नैन ॥ कहा बिसूरति आज तुम सो कहि मोसों बैन ॥ २ ॥ कुंती उवाच ॥ मेरे पांचों पुत्र तुम वै सत बंधु बिचारि ॥ सौ गौंदा ले आवही सकल मृत्तिका डारि ॥ ३ ॥ करि गज पूजे आजु सो गंधारी सुख पाइ। तिन सों हम सों कौन विधि करी बराबर जाइ ॥ ४ ॥ अर्जुन उवाच ॥ पंच पुत्र तेरे बली क्यों मलीन बिचारित ॥ ऐरावत आनों दुरद तेरे पूजन हित्त ॥ ५ ॥ सवैया ॥ काहे को माय बिसूरति याबिधि बाण अनेक तानि अंबर छाऊं ॥ बाट करौं सर जाल पटै नभ भूमि अकासहि मेंद कराऊं ॥ मान हतौं दुरजोधन को

बल कौरव को सब गर्ब नवाऊं॥ आनो भुजा बल सों ऐरावत अर्जुन तौ तुव पुत्र कहाऊं ॥ ६ ॥ दोहा ॥ करि प्रणाम गुरु द्रोण को लीनो धनुष उठाय ॥ हित ऐरावत सुरपुरी दीनो बाण पठाय ॥ ७ ॥ अर्जुन इषु देवन लखें कह्यौ इंद्र सुनि लेहु ॥ तुम सुत मांगत तव दुरद करो कृपा सो देहु ॥ ८ ॥ जो न देहु ऐरावतै तो यह बरु करि लेहु ॥ अमर पुरी भट भंजि के दुख देवनि को देहु ॥ ९ ॥ देन कह्यौ वारण सुनी देवनि की मनु हारि ॥ क्यौं धरि जैहैं स्वर्ग तैं सो सब कहो बिचारि ॥ १० ॥ चौपाई ॥ सब देवन मिलि बाण पठायो ॥ भूतल अर्जुन के ढिग आयो ॥ ऐरावत को मारग कीजै ॥ इहि विधि [illegible] पन लीजै ॥ ११ ॥ अर्जुन उवाच ॥ बाण अनेकनि अंबर छाऊं ॥ ऐरावत को बाट बनाऊं ॥ इंद्र सभामें [illegible] यो ॥ देवनि इंद्रहि जाइ जनायो ॥ १२ ॥ दोहा ॥ आज्ञा सुरपति तब दई साखि दये सुर पाल ॥ पूजा करि पठवे इहां वारण याही काल ॥ १३ ॥ आयो पत्री भूमि को अर्जुन लखिये भाइ ॥ निकसि नगर तैं सुभट तब लीनो धनुष चढ़ाइ ॥ १४ ॥ करि प्रणाम गुरु द्रोण को हंसहि सीस नवाइ ॥ सर पंजर पूस्यौ तबै लयो व्योम सब छाइ ॥ १५ ॥ सवैया ॥ व्योम को पठाये बाण प्रथम सहस्र एक दूसरे सहस्र दश स्वर्ग को पठाये हैं ॥ तीसरें अयुत पांच चौथे लक्ष एक सर एक कोटि पांचये आकाश माहिं छाये हैं ॥ षष्टमे करोर दश अर्ब एक सातयें सुकहां लौं बखानों सर जाल जेते धाये हैं ॥ पूस्यौ सुर लोकते धरा लों सर पंजर बिलोकि अंध पुत्र सत बंधु तैं सताये हैं ॥ १६ ॥

॥२६॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ धनि अर्जुन तैं राखि यों लोकलोक में नाम ॥ अब नकरैं गे गर्ब वे रहे ससोके धाम ॥२७
दुर्जोधन को आदिदै भये गर्ब करि हीन ॥ कैक सुहाय न धाम धन छिन छिन ह्वै गये छीन ॥२८॥ गंधारीउवाच ॥
कहा भयो सुत सो जने सरै नतिन सो काम ॥ जायेअर्जुन भीमउनि धनि धनि कुंती बाम ॥२९॥ देखि पराक्रम इकुन के लखों नही कुस रात ॥ सैहैं तुमतें राज वे यह सूरुति है बात ॥३०॥

दोहा॥लाज भई दुरजोधनै दूसासन के चित्त॥याके-अमित्त प्रकार करि कुंती पुत्रनि हित्त॥३१॥सवैया॥राज सुहाय नकाज सुहाय नलाज सुहाय नही मनमाही॥ग्राम सुहाय न धाम सुहाय न बाम सुहाय हिये-सुधि नाही॥देश सुहाय नकोस सुहाय सुकौरव के मन रोम कृपा ही॥खान सुहाय नपान सुहाय सुहाय न पंडु के पुत्र की छाही॥३२॥दुरजोधन उवाच॥दोहा॥अर्जुन भीम भये बली कीजे कछू उपाइ॥सब मिलि ऐसो कीजिये सालु हमारो जाइ॥३३॥इति श्री महाभारत पुराणे बिजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र सिंह बिरचितायां ऐरावत आगमनो नाम नवमो ऽध्यायः॥९॥॥

॥दोहा॥

गंधारी भ्राता सकुनि बोलि लयो अकुलाय॥भीषम रूप बोले बिदुर मंत्र काज सुख पाय॥१॥दुरजोधन उवाच जैसे छीजें पंडु सुत सो मति कहो बिचारि॥बीचहि-बोले सकुनि तब देहु गेह में जारि॥२॥बरून नगर-ले कोटि रचि तामें दीजे बास॥चहुं दिशि अगिनि-पजारिये होइ सबनि को नास॥३॥चौपाई॥भीषम मंत्र कहन नहिं पायो॥सकुनि कह्यो सो नृप मन भायो॥सम ही सोई कोटि करावहु॥बेगहि चलो चार जनि लावहु॥४॥सवैया॥तेल भरे घट आनि धरे घृत के भरि कै घट केते सवारे॥तूल है मूल मंसार अपार सुलाख मिले किये गंधक गारे॥अंतर सूत निरंतर काठ बनाय के पावक धाम सुधारे॥चित्रत चित्र सवारि दिवालनि देखिये सदन सबै उजियारे

॥५॥ दोहा॥ बर्ष दिवस बीते सकुनि कह्यौ नृपति सौं आय॥ सपरयो मंदिर पंडु सुत दीजै तहां पठाय॥ ६॥ गीतिका छंद॥ बोलि लीने बिदुर भीषम लै सभा बैठारि यो॥ नृप युधिष्ठिर आदि दै सब पंडु पुत्र हंकारि यो॥ बात भीषम पै कहाई मानि आयसु लीजिये॥ तुम हेत मंदिर बरणा रच्यो बास तामैं कीजिये॥ धर्म सुत के हर्ष उपज्यो तुरत सब रथ पर चढ़े॥ राज आज्ञा मानि कै जुत मातु पुर बाहिर कढ़े॥ बिदुर साथ चले पठावन सकल सिक्षा ते कहैं॥ बैठि कै पर सदन मैं निश्चिन्त भूपति ना रहैं॥ ॥८॥ चौपाई॥ अति सचेत रहियो गृह माहीं॥ आप उठा यो तुम वह नाहीं॥ जाय बासुनी गृह की लीजौ॥ आप सूझ तौ सब कछु कीजौ॥ ६॥ पैठन भेद जु कोई आवै॥ सोनहि भेद कछू लखि पावै॥ बुधि दै बिदुर गये फिरि ग्राम॥ पहुंचे नृप चलि ताही धाम॥ गेह प्रवेस कियो भुवपाल॥ सनमुख छीक भई तिहि काल॥ सह देव कहै सुनो महराज॥ रहहु इहां नहिं नीको काज॥ ११॥ नकुल उवाच क्यौं न हस्तिना पुर पगु धारो॥ जिय मैं कहा बिचार बिचारो॥ कही भूप उहि पुर नहि जैहैं॥ दुख सुख बीर इहां हम रैहैं॥ १२॥ यह दुख बिदुर पितामह पायो॥ सो भ्रातनि उर आनंद छायो॥ बिदुर कह्यो सबतें सो देख्यौ॥ पावक पुंज धाम सो लेख्यौ॥ १३॥ सावधान निस बासर रहैं॥ मरम न काहू सौं कछु कहैं॥ दुरजोधन प्रतिहार बुलायो॥ भेद सकल दै ताहि पठायो॥ राजाउवाच॥ हम सौं अन्तर करि तुम जाहु॥ जहां जुधिष्ठिर रहैं नरनाहु॥ भूंजे कपालिनि सो बारो धाम॥ करि हौ सब

तुम पूरण काम ॥ १५ ॥ सुंदरी छंद ॥ आयसु पाय गयो वह ता पल ॥ जाय प्रणाम कियो पलही पल ॥ और कहे दुरजोधन के दुख ॥ पेर विश्वास कहै हित को मुख ॥ १६ ॥ दोहा ॥ बचन सम्हारे बिदुर के कपटी उर पहिचानि ॥ सब बिधि सकल सचेत है कह्यो पवरि मग आनि ॥ १७ ॥ मालती छंद ॥ भीम सिधायो सुरंग खनायो ॥ बन कहं कीनो पंथ नवीनो ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ हमहिं भरे ज्यों कौरव जानौं ॥ ऐसे सब मिलि कै मति ठानौं ॥ भिक्षुक पंच दिवस इक आए ॥ जननी वृद्ध संग ते लाए ॥ १९ ॥ देखि भीम यों कहै बिचारी ॥ बनमें जाहिं इन्हें सों जारी ॥ बहु बिधि भोजन तिनहिं कराए ॥ उत्तम ठाम तहां पौढ़ाए ॥ २० ॥ दोहा ॥ जबही बीती अर्द्ध निशि सोवत सबही जानि ॥ कही भीम नरनाह सों चलौ बिपिन सुख दानि ॥ २१ ॥ सुरंग बाट सब मिलि कढ़े लै जननी लिहि काल ॥ लैपावक तब पौरि पर भीमहु गयो उताल ॥ २२ ॥ ऊंकद ई प्रति हार सिर दीनी पौरि जराइ ॥ महल महल परि जारि कै गयो भूप पै धाइ ॥ २३ ॥ दोधक छंद ॥ बाट लई बन को उठि धाये ॥ मंदिर दुर्गम कोटि कराये ॥ मूंदि गयो मग कोउ न जानै ॥ जात चले थकि कै हह राने ॥ भीम महीपति कंध चढ़ाये ॥ पार्थ नबै उर सों लिपिटाये ॥ बंधव दोइ लये एक वारी ॥ सीस धरी जननी सुख कारी ॥ २४ ॥ लै दश कोस गयो बन माहीं ॥ भय जिन के मन में कछु नाहीं ॥ धाम जरयौ सुनि कै कुरु राई ॥ बैठिसभा

बहु ते पछि ताई ॥ २६ ॥ मुख बाढ़ौ आनिही उर माहीं देखत लोगनि के पछि ताहीं ॥ साल मिल्यौ उर को यह जान्यौ ॥ क्रुद्ध भयो तब दे करि पान्यौ ॥ २८ ॥ दोहा ॥ न यो जन्म जान्यो तबै सत बंधव उर फूल ॥ बड़ी कृपा करता करी नसे हमारे सूल ॥ २६ ॥ उन पांडव बन को गये उलरे बट की छांह ॥ सब सोये पछे जगे भीम सेन बन मांह ॥ ३० ॥ नर देही को बास लहि आई त्रिय गल गाजि ॥ नाम हिडंबी राक्षसी घोर महा बपु साजि ॥ ३१ ॥ तन दीरघ दीरघ उदर दीरघ दंत कराल ॥ दीरघ मुख दीरघ श्रवण दीरघ नख सुबाल ॥ ३२ ॥ आई गर्जत नारि वह भीम न मानी संक ॥ तरवर लै साम्ही गयो करी नभय कछु अंक ॥ ३३ ॥ देखत साहस भीम को भई परम बपु बाल राका शशि षोडस कला रूप लख्यौ तिहि काल ॥ हिडंबीउबाच ॥ दोधक छंद ॥ मो मन रोचक आपुन मानो ॥ आपु त्रिया करि कै उर जानो ॥ मैं तुम देखि बली बर कीनो ॥ नित्त बसों तब आयसु लीनो ॥ ॥ ३५ ॥ आइ हिडंब तहां तब गाज्यौ ॥ भीम हुते द्रुम लै कर साज्यौ ॥ को कहि नारि कहां यह आयो ॥ भेद कछू नहिं मैं अब पायो ॥ ३६ ॥ हिडंबी उबाच दोहा ॥ मेरे बीर हिडंब यह कीजे युद्ध निसंक ॥ कछु बिसमै जिय जिनि करो लज्या धरी न अंक ॥ ३७ नहिं गाजत धीरजु रह्यो तेरो बुद्धि निधान ॥ यह न कछु तेरो करै हति बरया है निदान ॥ ३८ ॥ भीमसेन उबाच ॥ चौपाई ॥ तेरो भाता भरोसो मो[illegible] कैउत

त रिस लागै तोहि ॥ जब याकी तू होहु सहाय ॥ तब काहि मेरो कहा बसाय ॥ ३९ ॥ हिडं बीउबाच ॥ दोहा ॥ जानति तोको प्राण पति नहि राखति चित और ॥ तोस म यामें बल नहीं हति हिडंब यह ठौर ॥ ४० ॥ भयो असु र अरु भीम सो अति गति मुष्टि प्रहार ॥ मल्लजुद्ध करि धर परे द्वै दोऊ बिकरार ॥ ४१ ॥ निकट नपायो भीम जब जागे बंधव चारि ॥ निसचर सों मंडत समर अब लोकौ सुख कारि ॥ ४२ ॥ त्रोटक छंद ॥ अब लोक त भीमहि लाज भई ॥ तब दानव के भुज कंठ दई ॥ बरु कै वह दानव बीर हयो ॥ सब बंधव को बहु सुः ख भयो ॥ ४३ ॥ गीतिका छंद ॥ धर्म सुत को मांगि आयु सु सीख कुंती पै लही ॥ तब हिडंबी भीम ब्याही विधि करी जैसी चही ॥ रहत बीते दिन किते ता बिपन में सु ख साजही ॥ कंद मूल नि खात खनि खनि जीविका यों राखही ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ रहत किते दिन जब भये ताका नन के धाम ॥ पुत्र हिड़ंबी के भयो धर्यौ घरूका नाम ॥ ४५ ॥ बीति किते दिन तब गये तज्यौ बिपन वह ठाम छांड़ि घरूका ता थली पहुंचे इक चक ग्राम ॥ रूपक परिया को सजे रहे एक द्विज धाम ॥ उद्यम करि भोज न करैं सब बंधव गुण ग्राम ॥ ४७ ॥ इति श्री महाभा रत पुराणे बिजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र सिंह बिर चिता यां घरूका जन्मवर्णनो नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

॥ त्रिभंगी छंद ॥

इक चक नगरी सब गुण आगरी कीरति बगरी सक ल दिशा ॥ पुर नर सब गाजत इहि बिधि राजत साज

त सोक नद्यो सनिपा॥ भव कंपत थरथर बक दानव डर घर घर सोच सकोच महा॥ नित प्रति नर मारै किते संघारै बरनो निसचर कर्म कहा॥१॥ दोहा॥ नास जानि पुर नर सबै तब यह कियो बिचार॥ दिन प्रति दीजै एक नर चैन लहै संसार॥२॥ निसि चरसौं कीनो बिनै सबही मिलि तहं जाइ॥ प्रति दिन को तुव भक्ष हित नर यक पहुंचौ आइ॥३॥ मानि बिनय प्रति द्यौस को भक्ष एक नर लेहि॥ जाको जबही औसरा सो भक्षन तेहि देहि॥४॥ द्विज तरुनी के धाम जहं बसत युधिष्ठिर राइ॥ ताके सुत को औसरो पहुंच्यौ इक दिन आइ॥५॥ * ॥ * सोरठा॥ द्विज तरुनी अकुलाइ बार बार घर मूरछै॥ फिरि फिरि यह पछिताय कौंन काल्हि यह पुत ज्यौ॥६॥ दोहा॥ मोह महा देखत भयो कुंती के उर आइ॥ तत छिन वाको दुख कह्यो भीमहि पास बुलाइ॥७॥ भीमसेन उवाच॥ चौपाई॥ याके सुत के पलटे जैहों॥ फिरि मिलिहों जो जी बतरैहों॥ भोजन दानव हित जो भयो॥ भरि कै महिष भीम संग लयो॥८॥ दानव ठौंड तहां चलि आयो॥ बैठि भीम तहं भोजन खायो॥ धायो असुर क्रोध करि भारे॥ बज्र पात सम दो हाथ मारे॥९॥ दोहा॥ मुष्टि प्रहार करो असुर आपु शक्ति अनुसार॥ भीम न आन्यो चित्तमें भोजन भखे अहार॥१०॥ दोधक छंद॥ भारत ही सब भोजन खायो॥ संक नहीं अपने उर लायो॥ बीर दुहू मिलि के रण

कीनो ॥ कोउ नहीं तिन में बल हीनो ॥ ११ ॥ जुद्ध भयो अति ही गति ऐसो ॥ राघव रावण को रण जैसो ॥ ग्रीव दयो पगु दुष्ट संघारो ॥ ऐंचि तबै पुर बाहिर डारो ॥ १२ ॥ दोहा ॥ ठाढ़ो कीनो पवरि पर मृतक असुर सो लाइ ॥ प्रात होत पुर नर सकल निरखि भगे अकुलाइ ॥ १३ ॥ सबही को संका भई सकैं न नियरे जाय ॥ है दानव निरजीव यह कही भीम तहं आय ॥ १४ ॥ भीमसेन ढिग जाय के संभ्रम दियो भगाय ॥ यह गति जानी व्यास मुनि तबही पहुंचे जाय ॥ १५ ॥ श्रीव्यास उवाच ॥ पवन पुत्र मारो असुर सब जग भयो चवाउ ॥ अब सिख मानो बेगि ही नगर कंपिला जाउ ॥ १६ ॥ मानि सीख रिषि व्यास की तिहि पुर पहुंचे जाइ ॥ होत सगुन सह देव सों कही नृपति सुख पाइ ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ कैसे सगुन भये अब भाई ॥ सो अब मोसों कहि समुझाई ॥ सुनहु गुसाइ सगुन प्रभाव ॥ होइ लाभ चित चौगुन चाव ॥ १८ ॥ आमिष लीने देख्यो स्वान ॥ गयो दाहिनो उत्तम जान ॥ लीनो अर्जुन धाय छुटाइ ॥ लाभ बहुत पहि चानो राइ ॥ १९ ॥ रहे सु कुंभ कार गृह जाय ॥ पंच बीर संग कुंती माय ॥ इहि बिधि बीति काल बहु गयो ॥ भूपति द्रुपद स्वयंबर ठयो ॥ २० ॥ दोधक छंद ॥ सोहत पंचनि की अवली अति ॥ देखत ताको मोहति है मति ॥ उज्जल हैं गज दंत महा छबि ॥ जोर मनो दुति बर्णत हैं कबि ॥ २१ ॥ आय जुरे भुव के सब भूपति ॥ है जग में जिनि की बहु कीरति ॥ कौरव सेन तहां सब सोहत्ति ॥ दीरघ सायर सो मन मो

हति ॥ २२ ॥ दोहा ॥ यज्ञ द्रुपद भूप कै भयो आये सब रिषि राइ ॥ रच्यो द्रोण गुरु जंत्र नभ एहा बेध बनाइ ॥ २३ ॥ रा रख्यो परम कठोर धनु मीन जंत्र के पास ॥ ह्वैहै सो समर्थ्य जगत बेधै जंत्र आकाश ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ तप्त तेल सौं भरो कराह ॥ राखो नीचे तब नरनाह ॥ तरे दृष्टि करि देखै काई ॥ मीन जंत्र जो बेधै आई ॥ २५ ॥ ता उर कन्या ताही काल ॥ वाही भूप यह डारै माल ॥ बारन चढ़ी फिरै सो बाल ॥ लीने हाथ पुहुप की माल ॥ २६ ॥ दंडक छंद बेनी ज्यौं फनीन्द्र और इंदु सो मुखार बिंद सन चंपक हास मोहत है मन को ॥ खंजन चपल गति भंजन है ऐन नैंन अंजन सहित मन रंजन है घनको ॥ अधर चिवुक चारु बाहु है सुढार कुच कनक कलस रंग कंचन सो तनको ॥ कदली के खंभ से जुगल जंघ छवि कवि को मल कमल जिमि बानिक चरन को ॥ २७ ॥ चौपाई देखि कुमरि सब उमहे राई ॥ करि करि गर्ब छुयो धनु आई ॥ तानि सकै नहिं सकै उठाई ॥ गये सब उनके मुंह कुम्हिलाई ॥ कौरव सब बंधव पचि हारे ॥ सबही के मुख ह्वै गये कारे ॥ दुर्य्योधन तब सकुनिहि देखि ॥ करत धरषना कुमर बिसेखि ॥ २८ ॥ दुर्य्योधन उवाच ॥ सवैया ॥ सूर नहीं सूरनि में क्रूर महा क्रूरनि में दुष्टता सों पूरण है पूर उर बाई को ॥ मूढ़ महा मूढ़नि में गुनिन मंत्र गूढ़नि में पगानकि आरूढ़नि में संग्रह नवाई को ॥ ऐसो आगि बे को है कुटेव टेव टेकी जिहि तासों एक पैका जोन खोज है भलाई को ॥ नाहि बली बलिन में छली महा छलिन में सु देखि

द्रौपदी का स्वयंबर होना तथा अनेक राजा बैठे हुए वहां ब्राह्मण का भेष धरि पांचों पांडवों का जाना
कड़ाह पर टंगी हुई मछली नीर से बेधना अर्जुन का
अर्जुन
पांचों पांडव
राजा
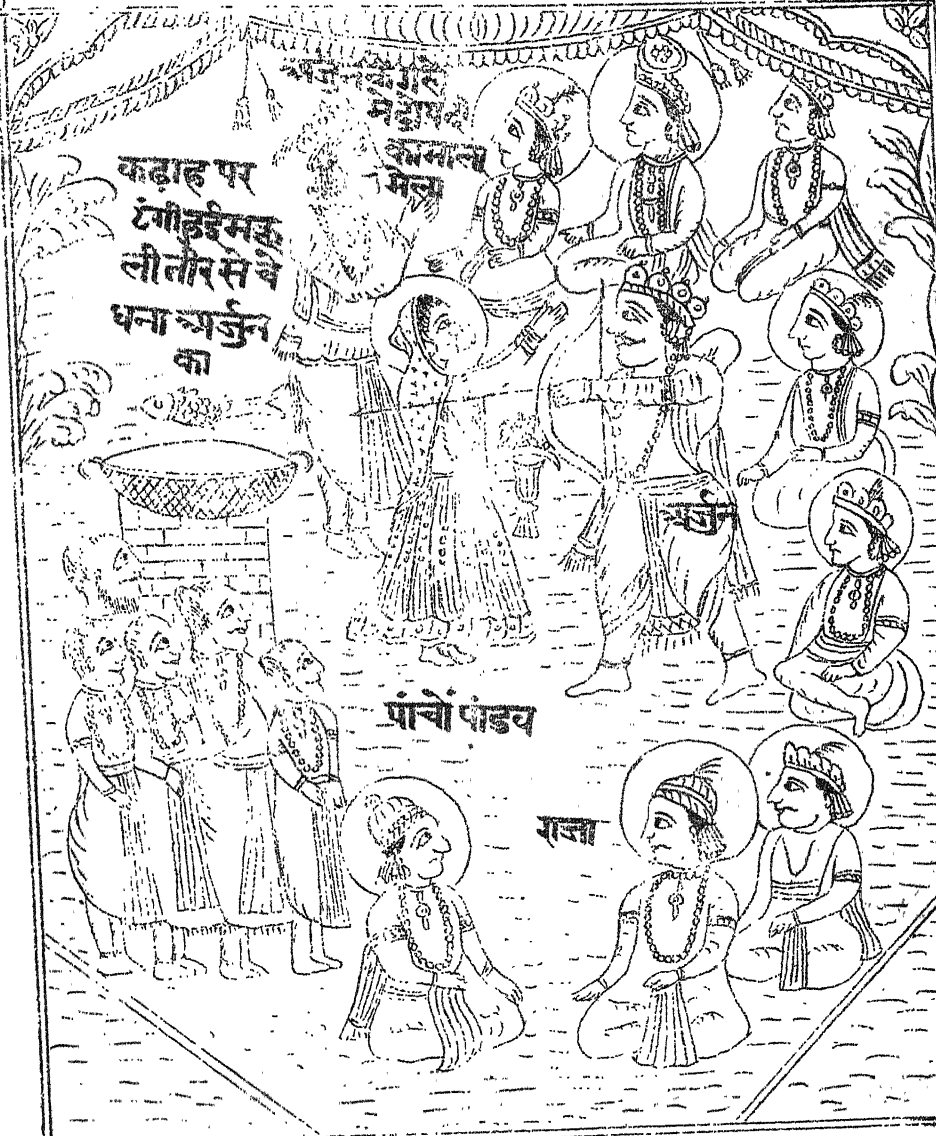
थे न मुख ऐसे कुटिल कसाई को ॥ ३० ॥ दोहा ॥ बारे ला
क्षा गेह में पंडु पुत्र दुहि जाइ ॥ होतो जीवत पार्थ जो लेतो
धनुष चढ़ाइ ॥ ३१ ॥ जंत्र बार दश बेधतो महा बीर बल
वंड ॥ सुनि पुनि कोप्यो कर्ण तब बाढ़यो कोप अखंड
॥ ३२ ॥ कर्ण उवाच ॥ जो मारें अब दुपद सुत कौन छुड़ा
वै तोहि ॥ मरो मर्म न तूलहै कानि भूप की मोहि ॥ ३३ ॥
॥ सोरठा ॥ चल्यौ कर्ण धनु पास बरजि कृस्न तब यों -
कही ॥ छांडि देहु यह आस बेध्यौ जाय न जंत्र यह ॥
॥ ३४ ॥ दोहा ॥ जो बेधो इक बाण सों तो जग में जस
होत ॥ हारे होय कलंक बहु और लाजि है गोत ॥ ३५ ॥
रूप कपरिया को किये अर्जुन बचन प्रकाश ॥ नहीं स
भा समरत्थ कोउ बेधै जंत्र अकास ॥ ३६ ॥ दुपद उवा-
च ॥ चौपाई ॥ के भूपति के तपसी होई ॥ एहा बेध क-
रै जो कोई ॥ ता उर कन्या तेही काल ॥ डारै अमल
कमल की माल ॥ ३७ ॥ तब चलि अर्जुन आगे गयो ॥
धनुष चढ़ाय हाथ सों लयो ॥ अति कठोर जान्यो धनु
जबही ॥ भीम सेन मुख चाह्यो तब ही ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ भी
म सेन बलवंड गति अर्जुन की पहिचानि ॥ कोमल क-
रि धनु पार्थ कर दयो बार दश तानि ॥ ३९ ॥ लै धनु
गयो कराह तन इक टक ताहि निहारि ॥ झांई पाई मी
न की रह्यौ ध्यान उर धारि ॥ ४० ॥ दीठ मूंदि मन एक
करि बेध्यौ सो सर येक ॥ फोरि गयो इषु दृगनि
को कौतुक करत अनेक ॥ चौपाई ॥ चूकि गयो
नर एक बखाने ॥ बेधि गयो सर एक तें जाने ॥
बाल लियें कर मालहि आई ॥ अरजुन के तब

ही उर नाई ॥ देखत कर्ण महा रिस भीनो ॥ दारुण क
र्म महा इन कीनो ॥ ४१ ॥ लै तपसी अब याको जैहै
लाज सबै भुव पालनि ऐहै ॥ ४२ ॥ दोहा ॥ कर्ण चढ़ायो
कोपि धनु देखत सब भूपाल ॥ निरखि सोच उर
में भयो विकल भई उर बाल ॥ ४३ ॥ अरजुन उवाच ॥
सवैया ॥ चंद्र मुखी कत सोच करै जिय गर्ब हरौं कुर
नंदन कोतो ॥ आजु करौं छिन में रण में जय जुद्ध जुरै ज
म आय कै जोतो ॥ हौं समरत्थ अकेलोइ बे किनि सोद
र जूझहि धायकै सोतो ॥ जोन बधौं तौ लजाउं पिता कहं
अर्जुन नाम कहाइ कौं तो ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ कोपे दोऊ बी
र रण रह्यो बाण नभ छाइ ॥ लोपे सूरज तम भयो उप
मा कही नजाइ ॥ ४५ ॥ देख्यौ करण प्रचंड रण पार्थ को
पि ज्यों काल ॥ रुद्र बाण बेध्यौ कवच बिकल भयो बे
हाल ॥ ४६ ॥ तबहि करण छांड्यौ समर जय जय करि -
तिहि काल ॥ दुरजोधन हूत भीम सो कीनो जुद्ध कराल ॥
४७ ॥ करणउवाच ॥ अरे कपरिया कौन तू मोसों कहि
सत भाइ ॥ तेरे सर ऐसे लगैं ज्यौं अर्जुन के घाइ ॥ ४८
यों कहि करण बरइ गौ भिरे भीम भुव राइ ॥ मल्ल
जुद्ध करि बीर दोउ थाकि रहे अकुलाइ ॥ ४९ ॥ चौपा
ई ॥ बर करि भूपति भीम उछार्यो ॥ मल्ल जुद्ध करि भू
परडार्यो ॥ जयजय कार पार्थ तब कर्यो ॥ सम्हर्यो
भीम कोपि तब लर्यो ॥ ५० ॥ मार्यो गुरज गिर्यो भुव
राउ ॥ ठाढ़ो भीम करै नहिं घाव ॥ चेति फेरि यों कहै
नरेस ॥ तू को सुभट तपी के भेस ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ ॥
पवन पुत्र अरु पार्थ के ऐसे हुते प्रहार ॥ वै सोई मैं

तु लख्यो बल दीनो करतार ॥ सोरठा ॥ सहदेव तहं आय ग
हि कर लै भीमहि गये ॥ द्रुपद सुता संग लाय पहुंचे कुंती
निकट सब ॥५३॥ युधिष्टिर उवाच ॥ चौपाई ॥ सुनि सुनि मा
त महा सुखदाई ॥ आजु कछू हम भिक्षा पाई ॥ तुम आज्ञा
सब बंधुव मानैं ॥ सो तजि और न चित्तहि आनैं ॥ ५४ ॥ कुं
ती उवाच ॥ दोहा ॥ पांचौं बंधुन सों तम्है पुत्र आय बहु नेहु ॥
जो कछु पाई भीख तुम बांटि सकल मिलि लेहु ॥ ५५ ॥ अ
र्जुन उवाच ॥ माता को सुनि सुखद प्रिय बचन न मेटयो जा
इ ॥ मुख जोयो तब पार्थ को पंचाली अकुलाइ ॥ ५६ ॥ नि
रखी कुंती द्रौपदी मनही मन पछिताइ ॥ बचन अनैसो
मैं कह्यो पुत्र नसकैं नसाइ ॥ ५७ ॥ आये हलधर कृस्न
तहं जानत सगरो भाउ ॥ करि कुंती को बंदना मिले जु
धिष्टिर राउ ॥ ५८ ॥ तब बिचारि कै द्रुपद नृप धृष्ट दुम्नन
सुत बोलि ॥ आप कपरिया को भये भेद लेहु सुत खोलि
॥ ५९ ॥ सुंदरी छंद ॥ नीच कि धौं कोउ उत्तम है नर ॥ कौ
न में कि बसैं पुर सुंदर ॥ श्री जदु नंदन भूपति है जहं ॥
आय दुसो सुत भूपति को तहं ॥ ६० ॥ बात बितीत कहे
भुव भूपति ॥ कृस्न सुनी बहुधा हरखी मति ॥ पूछत पार्थ
हि यों जदु नायक ॥ तैं सुख आजु दयो सुख दायक ॥
॥ ६१ ॥ दोहा ॥ राहा बेध करयो भलो सुनि हो पार्थ सु
जान ॥ गर्ब नवायो करन को मारे कौरव मान ॥ ६
अर्जुन उवाच ॥ सवैया ॥ कष्ट परयो जबही जहं आय
के राखी तहीं सब पैज हमारी ॥ मांरु स्वयंबर द्रौपदी
कै अति कर्णहि गर्ब बढ्यो तहं भारी ॥ जीति कै वीर
धनंजय धीर सु आजु लई बल कै बर नारी ॥ कीज

हौ सरतौ किहि भांति जो होते सहाय न आप मुरारी ॥६३॥
दोहा ॥ भलो दिखानो करण रण यहै सराहै उं ताइ ॥ भीम कहे करु राज हरि बढ़ो बली यह आइ ॥६४॥ मैं अघ वायो जुद्ध मैं धनि दुर्जोधन राउ ॥ हनतो येक निमेष जो करते सबै सहाउ ॥६५॥ चौपाई ॥ धृष्ट दुम्नत सबरी गति जानी ॥ कही पिता सों सब सुखदानी ॥ वे छत्री कुल उत्तम आहिं ॥ नहीं कपरिया जानो ताहि ॥६६॥ हरि हलधर तिन पै चलि आये ॥ देत बड़ाई बहु गुन गाये ॥ यह सुनि भूपति फूल्यौ हियो ॥ बिधना सब मन भायो कियो ॥६७॥ दुपद उवाच ॥ चामर छंद ॥ साजि साजि बाजि राज मत्त दंति गाजि के ॥ चर्म बर्म अस्त्र शस्त्र चीर द्रव्य सजिकै ॥ जायकै अवास द्वार बस्तु सो रखा द्वयो ॥ देखि के तपिनि को सुकर्म मर्म पाइयो ॥६८॥ दोहा ॥ आयसु दीनो भूप जो सोई कीनो जाइ ॥ मंडप छायो विधि सहित मुक्तनि चौक पुराइ ॥६९॥ गीतिका छंद ॥ आइ कै तहां पंच बंधव सकल सो जनि हारियो ॥ नकुल लखि बाजी सराहै पार्थ धनु टंकारियो ॥ भीम फूल्यौ देखि कुंजर खरी सहदेव कर गह्यौ ॥ नृपति सब देखत सराहत हाथ तिन कछु नालह्यो ॥७०॥ देखि या बिधि द्वार भूपति परम सुख हिरदै भये ॥ है देव गंध्रव कहा कोऊ भेष तपसी को लये ॥ बोलि लीने पार्थ भीतर द्रुपद नृप सुख पाइ कै ॥ तब यों कह्यौ हँसि भीम जेठो प्रथम ब्याहै आइ कै ॥७१॥ सुनि भयो बहु संदेह भूपति नीच कोऊ है महा ॥ पंच जन त्रिय एक ब्याहै भूलता बरनो कहा ॥ बोलि पठये व्यास आये कही तिन सो बिधि सबै ॥

एक पति है धर्म पुत्री कही रिषि सों यह सबै ॥७२॥ दोहा ॥ जेठो व्याहै जा त्रियहि लहुरे की है माय ॥ लहुरे की त्रियजेठके सुता बराबरि आइ ॥७३॥ व्यास उवाच ॥ सोम बंश ए पंडु सुत एक जोति मन एक ॥ पूरब जन्म सुरेश ए सुनिये सहित बिबेक ॥७४॥ पंच इंद्र इनि वहि जनम पायो शिव बरदान ॥ पंडु नृपति गृह अवतरे क्षत्री रूप निधान ॥७५॥ रिवि कन्या है द्रौपदी सेये शिव चित लाइ ॥ पंच कला कै देहु बर यह बांछौं सुख पाइ ॥७६॥ दिव्य दृष्टि कै नृपति को दरसायो ब्यौहार ॥ देखे ऐकै जोति तहं पंच इंद्र अवतार ॥७७॥ द्रुपद उवाच ॥ चौपाई ॥ तुम बिन को संभ्रम हि भगावै ॥ तब छिति नायक रिषि गुण गावै ॥ नृप बिवाह की सब विधि ठानी ॥ बोलि जुधिष्टिर सब सुख दानी ॥७८॥ तिन की भांवरि करि नरनाह ॥ फिरि चारों का करयो बिवाह ॥ दुहूं कुलनि की विधि ही जैसी ॥ भांति भांति सब कीनी तैसी ॥७९॥ पंच पुरुष को कन्या दीनी ॥ बिदा दाइजौ दै करि कीनी ॥ हय हाथी पट भूषन घने ॥ दासी दास दिये को गने ॥८०॥ दोहा ॥ लैदल परि गह गृह चले द्रुपद फिरे पहुंचाइ ॥ गये हस्तिना पुर सबै आप सदन सुख पाइ ॥८१॥ सुनि दुर्जोधन के भयो अंग अंग अति दाह ॥ नेक सुहाय न द्यौस निसि चकित चित्त नरनाह ॥८२॥ इति श्री महा भारत पुराणे बिजय मुक्तावल्यां कबि छत्र सिंह बिरचितायां बक दानव बध द्रौपदी बिवाह बर्णनो नाम एकादशो ऽध्यायः ॥११॥११॥

दुर्जोधन उवाच ॥ दोहा ॥ ॐ ॥

ग्राम धाम आपनो लयो पांचो बंधव आय॥ कहो बंधु कीजै कहा इन सों कछु न बसाय॥१॥ बरुण नगर को आदि दै कीने कित्ते उपाय॥ तबहूं मुये न पंड सुत फेरि प्रगट भये आय॥२॥ तपी भेष आये हुते भूप दुपद अस्थान॥ हम काहू जाने नही मारे सब कै मान॥३॥ भीषम बिदुर बुलाय कै बूझे मंत्र सुजान॥ कौन उपाव करैं कहो सो मत देहु निदान॥४॥ भीष्म उवाच॥ अपकारी तुव बंधु नृप उनको कछू न खोरि॥ महा सयानी पवन सुत अवगुन सहै करोरि॥५॥ बरजो अपने संदनि अवगुण करै न कोइ॥ अति सनेह तुमसों उनहि ताही दिन नृप होइ॥६॥ राजा उवाच॥ दोष लगावत हो हमें उन को भलो सुहाइ॥ सकुनि कह्यो यह मंत्र तब बीच बैठि कै आइ॥७॥ कत्त बूझत भीषम बिदुर यहै मानि मन लेहु जो कछु उन को देस है उन्हें आपु सो देहु॥८॥ गयो नृपति धृतराष्ट्र पै सुनि भूपति यह बात॥ सकुनि कही सोई कह्यो पितु के आगे जात॥९॥ बोलि जुधिष्टिर तब कही सुनि विनयो सो मानि॥ रह्यो इंद्र पथ जाइ कै आपु ग्राम उर जानि॥१०॥ चौपाई॥ मानि रजायसु चले नरेशा॥ सुबस इंद्र पथ कीनो देशा॥ मनि मय खचित बने सब धाम॥ मनहु लसत सुरपति के ग्राम॥११॥ फटिक थम्भ की जागति जोति॥ होइ सूर किरन नितैं होति॥ बापी कूप सुनीर तड़ाग॥ दिसि दिसि दीसत सुंदर बाग॥ कल्प बृक्ष से द्रुम मन मोहैं॥ फूले फलैं कहूं रितु सोहैं॥ चंचल हय अति धाम बिराजैं॥ तमके सुत से कुंजर गाजैं॥१३॥ भाट भले बिरदावलि

गावत ॥ जो मन बांछित सोई पावत ॥ भूप जुधिष्टिर आज्ञा होइ ॥ चारों बंधु करत हैं सोइ ॥ १४ ॥ करत सबै आनंद मन भाये ॥ एक दौस नारद मुनि आये ॥ आदर करि बहु आसन दीनो ॥ तब रिषि बचन प्रगट यों कीनो ॥ १५ ॥ तीनिहु लोक जातु हों जहां ॥ अति आतिथ्य करत सब तहां ॥ मेरो बचन नमेटै कोइ ॥ जोई कहों वहै पै होइ ॥ १६ ॥ रिषिरु वाच ॥ तुम हो सोदर पंच सनेह ॥ तरुन द्रौपदी है तुम गेह ॥ मिलि सब बंधव यह मन धरो ॥ मो आगे सब बाचा करो ॥ १७ ॥ जौलों बीति जांय षट मास ॥ एक रहै द्रौपदी अवास ॥ अवधि मांझ दूजो जो जाइ ॥ बारह वर्ष होइ बन ताइ ॥ १८ ॥ सब ही मिलि कै आज्ञा मानीं ॥ स्वर्ग सिधाये रिषि सुखदानी ॥ प्रथम नृपति की बारी भई ॥ पांचाली सज्या पर गई ॥ १९ ॥ द्विज की सुरभी चोरनि लीन्ही ॥ आय पुकार बिप्र तहां कीन्ही ॥ सुनै न कोऊ लगे गुहारि ॥ सो तब धयो पुकारि पुकारि ॥ २० ॥ द्विजउवाच ॥ ॥ छप्पय ॥ क्षत्री कुलहि कहाइ आप जग अपजस लावत ॥ सुरभी बिप्र गुहारि क्योंन तुम पापी धावत ॥ कायर ह्वै कित रहे मूढ़ तुम धामनि गहि गहि ॥ और न जानैं नाम रटै यह अर्जुन कहि कहि ॥ त्रीय काज सुरभि द्विज काज जो नहि इन को उप करहि ॥ द्विज दोष लगै तापुरुष कों घोर नरक में सो परहि ॥ २१ ॥ अर्जुन उवाच ॥ दोहा ॥ रहि रहि बिप्र सुजान तू जागन दै नरनाथ ॥ बिनती करि तबही चलों लै कृपान धनु साथ ॥ २२ ॥ सोरठा ॥ धनु न हमारे हाथ धरो सबन

में विप्र तहें ॥ द्रुपद सुता नर नाथ पौढ़े ताही धाम में ॥२४॥ त्रोटक छंद ॥ द्विज एकहु बात नमानतु है ॥ सुख बैन कुबैनन आनतु है ॥ रचि कै सब बात बनाव न छोडहु ॥ लहि पाप महा सिर आपहि ओडहु ॥ डरि आपहि सो अकुलाइ मनै ॥ चित में द्विज को अपमान गनै ॥ नृप धाम गयो धनु बानु जहां ॥ दृग ओझिल बाद दई जु तहां ॥ तबही वर बीर चल्यौ धनु लै ॥ मुकराइ दई सुर भी बतु लै ॥ रिषि नारद बैन धरै मन में ॥ हित तीरथ वेगि चलो बनमें ॥ २५॥ अब-लोकि सुदेव नदी जबही ॥ हित मज्जन पत्थ धसौ तबही ॥ लखि नाग सुता लगि दृष्टि रही ॥ अवलोकि तहीं तब बांह गही ॥ २६॥ गहि ताहि पतालहि लै सु गई ॥ वह ब्याल सुता अति मोह भई ॥ तुम तो वर ईश्वर मोहि दये ॥ अति निठुर क्यों तुम नाह भये ॥ २७॥ अर्जुन उवाच ॥ रिषि नारद को हम बैन लसौ ॥ अब या विधि तीरथ पत्थ गह्यौ ॥ व्रत भंग महा तिय अंक भरै ॥ बहु तीरथ की हम जात करै ॥ २८॥ यह अपने जी महं नेम धरों ॥ फिरि तो कहं सुंदरि आइ वरों ॥ इमि ब्याल सुता तब बात कहै ॥ इहि भांति नहीं तुव धर्म रहै ॥ २९॥ चलि हो मम बैन नसाइ जबै ॥ पुनि जाय अकारथ धर्म सबै ॥ पुनि ता संग पत्थ बिवाह भयो ॥ तहं केतिक द्यौस बिराम लगो ॥ त्रिय नाम उलूपिहि गर्भ भयो ॥ सुत मन्मथ ज्यों अवतार लयो ॥ उर तीरथ की तब सुद्धि भई ॥ कहि पत्थ तबै गहि बाट लई ॥ ३०॥ उलूपी नाग कन्या उवाच

सुनु प्रान पती इक बात कहौं॥किहि भांमिनि हौं कुप्रालात सहौं॥द्रुम दाडिम को दरसाद्द दयो॥ज व जान्हु जू यह सूखि गयो॥३२॥दोहा॥तब संदेह भो प्राण को कीजो नागरि नारि॥आयो निकसि पतालते तीरथ हेत्त विचारि॥३३॥सोरठा॥ नैमि षार चलि जाय परसि वनारस को गयो॥वाराणसी न्हाय गया तृपत्ति कीने पित्तर॥३४॥ दोधक छंद॥सागर संगम गंगा गये जू॥दौस कित्त वनमें बिनये जू॥न्हाइ तवै मथुराहि चले जू॥ देखत आश्रम कुंड भले जू॥३५॥न्हाइ न ताजल में नर कोई॥जाइ लखै फिरि आवत सोई॥ बिप्रनि कों लखि पार्थ कही यों॥पैठत कोऊ न मध्य कहो क्यौं॥३६॥बिप्र उवाच॥यामें जंतुर है अतिभारी॥सोजरा जीवन को दुख कारी॥पार्थ नहीं कछु त्रास कस्यौ जू॥लै पग ता जल मांझ धस्यौ जू॥ ॥३७॥आय गह्यौ पग ता छिन मांही॥अर्जुन के उर भै कछु नाही॥लै जल ते वह बाहर आनी॥ ह्वै गइ सो त्रिय रूप सयानी॥३८॥अर्जुन सो वह बैन कह्यौ जू॥श्रापदियो रिषि पाप गयो जू॥ता जल ते तिय पांच कढी यों॥मान सरो वर इंदु त्रिया - त्यौं॥३९॥दोहा॥पांच त्रियनि को मोक्ष करि चलि अर्जुन बर बीर॥तज्यो द्वार मग तव गयो मानिक पुर रण धीर॥४०॥सोरठा॥त्रिय वाहु बर बाहु जीत्यो क्षिति मंडल घनो॥राजैं तहं नरनाह सकल जगत को काम तरु॥४१॥दोहा॥ताके दुहिता

इंदु मुखि चित्रांगदा सु नाम॥ रूप बहि क्रम उर व
सी बिज्जुल तासी बाम॥ ४२॥ सोरठा॥ कनक बरण
तन ज्योति लसत नील पट ओट ज्यों॥ जगर मगर
दुति होति मानो घन में दामिनी ॥४३॥ नाहि निमिष
इक ताकि बिकल सकल जिय कल नहीं॥ रह्यौ पार्थ
मनि थाकि करी बसीठी बंदि जन॥ ४४॥ गीतिकाछंद
जाय नृपको तब जनायो ब्याह अर्जुन को भयो॥
मन दंती दिये बाजी द्रव्य बहु कंचन दयो॥ चारि
बर्षहि रहे ताथल पुत्र इक अर्जुन लह्यौ॥ जाहु ती
रथ जात को नर नाह सों तिनि यों कह्यौ॥ ४५॥ नाय —
माथो भूप को चलि द्वारका नगरी गयो॥ पाय सुधि
आये कृपा निधि दुःख सब के उर भयो॥ रुक्मिनी दै
आदि सब त्रिय ताहि भेटन आइयो॥ चली कौतिक
हित सुभद्रा निरखि बहु सुख पाइयो॥ ४६॥ सोरठा॥
चंचल नैननि ताकि माने पट चहुँ दिसि लखिन॥ —
रही पार्थ गति थाकि परि फंदा तर फैसफर॥ ४७॥
दोहा॥ नख सिख सकल बनी ठनी करै सकल सिं
गार॥ धीर रह्यो नहि पार्थ उर ब्याकुल तन न सम्हा
र॥ ४८॥ चौपाई॥ सबहि सुभद्रा अर्जुन देख्यौ॥ अ
पनो पति करि उर में लेख्यौ॥ प्रिव सेवा को यह सब
सार॥ दीजो मोहि पार्थ भरतार॥ ४९॥ यह सब —
बिधि श्रीहरि पहि चानी॥ तब यह अपने उर में
आनी॥ गर्भ सुभद्रा को यह भयो॥ जठर बासु म
हि दानव लयो॥ ५०॥ दीजै पार्थहि मिटै कलंक॥
श्री हरि आनी यह बुधि आंक॥ बोलि पार्थ सों यह

तब कही ॥ बसि तुम मन हैं सुभद्रा रही ॥ मैं आज्ञा दीनी हरि लेहु ॥ पाछे ह्वैहै अधिक सनेहु ॥ हरी कुमारि अर्जुन सुख पाय ॥ भई सुद्ध अंतहपुर जाय ॥ ॥५२॥ दोहा ॥ कोप भयो बलभद्र को अब अर्जुन कित जाय ॥ लाऊं गहि कै द्वारिका छांडौं भीखमंगाय ॥ ५३ ॥ कोपि चल्यौ सजि सैन बहु बरजे श्री हरि आइ ॥ को पारथ के सरस है क्यौं रण जीत्यौ जाइ ॥ ५४ ॥ हारे होय कलंक कुल जीते हू जस नाहि ॥ तातें कोपहि परिहरो चलौ द्वारिका जाहि ॥ ५५ ॥ बलभद्र उवाच ॥ तेरी यह करतूति सब कछू न जानी जाय ॥ फेरि न कछु उद्यम कियो बैठि रहे अरगाय ॥ ॥५६॥ आये अर्जुन इंद्रपथ भूपति बहु सुख पाइ ॥ लई सुभद्रा गेह में मंगल चार कराइ ॥ ५७ ॥ पुत्र बधू कुंती लखी बहु विधि करि आनंद ॥ शुभ लक्षण गुन आगरी मुख दुति राका चंद ॥ ५८ ॥ चौपाई ॥ यह बिचार श्री हरि जू कस्यो ॥ सबही सों ऐसे अनु सस्यो ॥ चलो इंद्रपथ जइये भाई ॥ जाय पार्थ को करैं सगाई ॥ ५९ ॥ लीनि गज रथ तुरी तुषार ॥ जात रूप भूषन भंडार ॥ हरि हलधर सब संग लिवाई ॥ पहुँचे बेगि इंद्र-पथ आई ॥ ६० ॥ पार्थहि बिहँसि सुभद्रा दई ॥ भामरि पारि रीति सब ठई ॥ हस्ती हय रथ भूषण दीने ॥ जाचक सबै अजाची कीने ॥ ६१ ॥ दोहा ॥ करी बिदा बलभद्र की नगर द्वारिका हेत ॥ आपु कृपा करि हरि रहे भूपति के संकेत ॥ ६२ ॥ गर्भ सुभद्रा को भयो पुत्र कला जनु चंद ॥ नाम धस्यो अभिमन्यु तब की

न्ह परम आनंद ॥६३॥ द्रुपद सुताके पंच सुत एमार भये सुख कारि ॥ मात एक पितु पांच तें पांच हुं की अनुहारि ॥ ६४ ॥ दुरजोधन संप्राय कियो रची कहा करतार ॥ हते अकेले पंच वे अब बाढ्यौ परिवार ॥ ६५ ॥ इति श्री महा भारत पुराणे बिजय मुक्तावल्यां कबि छत्र सिंह बिरचितायां सुभद्रा बिवाह बर्णनो नामद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

॥ सोरठा ॥ खेलत पासे सार अर्जुन कृस्न अनंद सों ॥ डारत दांव हंकारि अपनो अपनो भाषि कै ॥ १ ॥ अ॰ ॥ भुजंग प्रयात छंद ॥ धसो बिप्रको रूप यों अग्गिनि आने ॥ दुखी दीन ह्वै कै महा रोग छाये ॥ तहां आय के दीन बानी बखानी ॥ हरो पीर मेरी महा दुःख दानी ॥ २ ॥ कहै अग्नि मोको छुधा नेक नाहीं ॥ दया आप की जै महा जीव माहीं ॥ किते यत्न करि इंद्र को बिप्र जारयो ॥ महा कोपि कै नीर सों बोरि मारयो ॥ ३ ॥ सबै और को मैं भरो सो नसायो ॥ चल्यो हौं अबै रावरे पास आयो ॥ दहों काननै इंद्र को बीर जैसो ॥ महा रोग नासै करो काज तैसो ॥ ४ ॥ चले कृस्न जू पार्थ-को संग लीने ॥ बनै जारिबे को सबै काज कीने ॥ तबै अग्नि सों पार्थ बानी बखानी ॥ धनुर्बान नाहीं सुनो सुख दानी ॥ ५ ॥ दोहा ॥ अछय तून दीनो अगिनि आप काज पहिचानि ॥ दियो धनुष गांडीव तब नंद घोष रथ आनि ॥ ६ ॥ साजि दयो रथ अर्जुनहि तबहीं श्री जदु राय ॥ पूरब दिशि पठयौ सुभट पावक सामें जाय ॥ ७ ॥ आप रहे पश्चिम दिशा छाइ लई दिशि चा

न॥जीव जंतु ता बिपन में भाजि न पावैं जान॥८॥पूरब तें साजी अगिनि अर्जुन परम प्रचंड॥दीन शब्द रोवें सबै सावज्ज पंछि अखंड॥९॥जीव पुकार दीन रट - सुनि सुरपति सुख दाय॥तुव बन जारै अगिनि यह - यह कत तोहि सुहाय॥१०॥प्रलय काल के मेघ जे ते - बोले सुर राइ॥कोटि छानवैं एक संग बरसहु बन पर जाय॥११॥
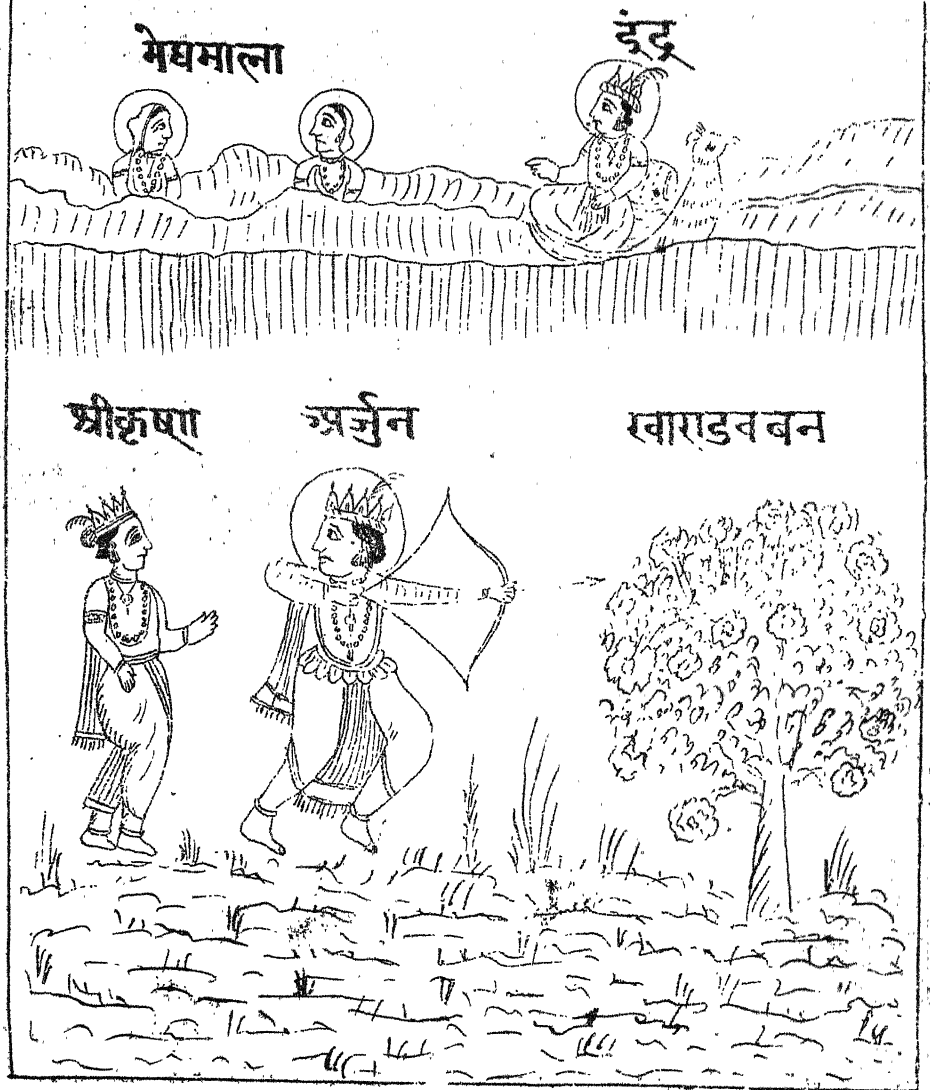
उनै आये मेघ नभ तम चारों दिशि छाय ॥ बरसीह लखि पार्थ तब लीनो धनुष चढ़ाय॥ १२॥ सवैया ॥ धाय कै पार्थ चढ़ाय लयो धनु छाड़ लयो बर अंबर बाणन॥ दौरि दवा गिनि लागि उठी द्रुम जारन साख समूल स्पानन ॥ कोपि महा मघवा बरस्यो कहूं एकहु बूंदन भीजत कानन ॥ व्यौम बिलोकत अद्भुत कौतुक किन्नर यक्ष चढ़े सुबिमानन ॥ १३॥ दोहा ॥ द्वादश जोजन लौं बिपिन करैं बूंद नहिं एक ॥ कोटि छ्यानवें जलद मिलि उद्यन किये अनेक ॥ १४ ॥ ससे स्यार साबर सुवर सेही सिंह संकोच ॥ सारे सुक सोना सबै सकल सिवाननि सोच ॥ ॥ १५॥ चिरा चील्ह चिमगादरें चातक चक्र चकोर ॥ रजत न उबरत जीव सब बचत न काहू ओर ॥ १६॥ दंडक छंद धाय धाय मेघ बर छाय छाय छिति पर बरसि बरसि हरि भागे भहराय कै ॥ झरपि झरपि झर तरपि तरपित हां जित तित नीर गये ढरि छहराय कै ॥ तरू तरू लगि आगि बरत न उबरत भागि भागि पंछी पशु बचे न पराय कै ॥ छन बलवंत बीर पार्थ को अनंत बल अगिनि तृपत कियो कानन जराय कै ॥ १७ ॥ दोहा ॥ सुनि सुनि बन की यह दशा तब कोप्यो सुर राय ॥ हन्यो बज्र बाण बली टूटि परी खंड राय ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ अर्जुन बाण लये फिरि छाई ॥ बूंद न परत कहूं बन आई ॥ सर पंजर तोरयो दस बार ॥ जोरे पार्थ बढ़े आकार इहि बिधि बन खांडव हि जरायो ॥ भाग्यो मया सुर दानव आयो ॥ राखु सरनि यह असुर पुकारै ॥ मोहि अगिनि मम जारै मारै ॥ २० ॥ दई दिलासा राख्यो

सोइ ॥ छांड़ि त्रास तोहतें न कोइ ॥ असुर कहै सुनि पार्थ सयाने ॥ तेरे करम नजाय बखाने ॥ २१ ॥ मायासुरउवाच ॥ दोहा ॥ जितने त्रिभुवन में असुर हैं तिनको श्रुति धार ॥ जब चाहै तब आइहों करों काज सब सार ॥ २२ ॥ बिदा करी अर्जुन सुभट असुर चल्यो सो धाम ॥ एरई पावक कानना सब बिधि के गुण-ग्राम ॥ २३ ॥ आये सुरपति पुहुमि में बिग्रह सकल नसाई ॥ सुतहि देखि कछु सुख भयो कछु मन में पछि ताइ ॥ २४ ॥ इंद्र सिधाये सुर पुरी चले पार्थ-ग्रह आपु ॥ चले इंद्र पथ हंस जू जिनको अमित प्रताप ॥ २५ ॥ निरखि युधिष्ठिर भूप तब कही परम सुख पाइ ॥ श्री जदु नाथ प्रताप ते तैं जीत्यो सुर राइ ॥ २६ ॥ गहि है कोऊ धनुष नहि तोको-सुनि बल बंड ॥ पूरि सुजस धर पर रह्यो सप्त दीप नव खंड ॥ २७ ॥ द्वारावति को तब गये बिदा भये जदु नाथ ॥ हंस भूपति के निकट ही सोभित बंधव साथ ॥ २८ ॥ राजा युधिष्ठिर उवाच ॥ सोरठा ॥ रचिये धाम बनाय उत्तम दीसै दूरि ते ॥ बहु बिधि चित्र कराय धवल नवल कीनी सभा ॥ २९ ॥ अर्जुन उवाच ॥ चौपाई ॥ जो तुम भूपति आयसु पाऊं ॥ नाम मया सुर बेगि बुलाऊं ॥ राजाउवाच ॥ बेगहिं बंधव ताहि हंकारो ॥ उत्तम उत्तम धाम संवारो ॥ ३० ॥ सुधि मया सुर की उर आनी ॥ आय गयो तबही सुख दानी ॥ आवत ही तिन भूपति देखे ॥ धर्म धुरंधर चित्र बिसरखे ॥ ३१ ॥ इति श्री महा भारत पुराणे

बिजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र विरचिता यां इंद्र बन खां डीव दहनो नाम त्रयो दशो ऽध्यायः ॥ १३॥ ॥ ॥

इति आदि पर्व्व समाप्तं अथ सभा पर्व्व कथनं॥ दोहा ॥

धर्म धुरंधर तिहि छिनक धर्म सुवन भुव भूप॥ कही मया सुर असुर सों कीजे सभा अनूप ॥१॥ नगसरूपिनी छंद॥ नवाय सीस बेगि कै॥ चल्यो सु बीर चित्ति कै॥ समुद्र पास सो गयो॥ सुधाम सीस कै लयो॥२॥ दोहा॥ हरना कुप्प को सदन सो लीनो तिन धरि सीस॥ लै आयो सो इंद्र पथ लखि फूले अवनीस॥ ३॥ सवैया सुंदर लील रंगीले खरे अरु पीरे हरे रचि धाम बनाये॥ मानिक लाल निके बहु जाल प्रबाल नि के खचि थंभ सुहाये॥ स्वच्छ सिला जनु दीसत नीर बने चकवा जनु पैरत धाये॥ है अमरावति तें अति अद्भुत सुंदर सदन सबै छबि छाये॥ ४॥ दंडक छंद॥ सोभा ही के सार तहां फाटक किवार बने के ते द्वार द्वार जिनै देखे बुधि भरमें॥ दिये है कि दिने है बिचारत ही भूलि रहे जानि ये सनीर पै नीर नाहीं सरमें॥ धामनि के बीच निधी चनि मरीचि कानि एजति है नीलमनि छत्र घर घरमें॥ भूप की सभा की आभा कौन सों बखानि कहै ऐसी दुति नाहीं कहूं इंद्र के नगर में॥ ५॥ दोहा॥ पट हीने से देखिये दिये नपट तिहि द्वार॥ जे सर बर है नीर जुत पृथ्वी के आकार॥ ६॥ मन भायो है के सबै गयो मया सुर गेह॥ भूपति बैठे तिहि सभा बंधुनि सहित सनेह॥ ७॥ चौपाई॥ ऋषि नारद भूपति पै

आये॥ निरखि सभा बहु विधि गुन गाये॥ ऐसी सभा नमैं
कहुं देखी॥ सब ठामनि में उत्तम लेखी॥ ८॥ रिषिरुवाच
सवैया॥ किन्नर जक्ष पुरी अवलोकत धर्म पुरी अव
लोकत फीकी॥ भोगावती अवलोकि सबै सु बिलोकि
सुरेश पुरी सुखही की॥ भूपति भूपन के धन धाम बि
लोकि फिसो नभई रुचि जीकी॥ और सभान सभा
सम लागति रावरी आहि सभा अति नीकी॥ ६॥
राजाउवाच॥ दोहा॥ तीन भुवन की बात सब जानत
हौ रिषि राय॥ सुद्धि कहो नृप पंडु की [illegible] सक
ल सुनाय॥ १०॥ रिषिरुवाच॥ चौपाई॥ सुनि [illegible]
पति बहु सुख दाई॥ [illegible] पै कही नताई॥ -
निरखत पंडुहि भयो ससोकू॥ भई कुमृत्यु गयो -
जम लोकू॥ ११॥ जज्ञ करो मिटिहै सब दोष॥ पंडु
मही पति पावै मोष॥ बिलखै भूपति बहुदुख पाइ
दै उपदेश चले रिषि राइ॥ १२॥ जज्ञ राज सू भूपति
कीजै॥ भूप [illegible] जग मैं [illegible] लीजै॥ जज्ञ बिधा
न सकल अनुसरै॥ एक राय ते रक्षा करै॥ १३॥
चंदन गारै छिति पति एक॥ एक ते लावै समिध-
अनेक॥ सहस्र धेनु सुलक्षन जुत देहु॥ पितु को -
तारि जगत जसु लेहु॥ १४॥ भूपति के मन चिंता
आई॥ जिनके श्री हरि सदा सहाई॥ यह कहि
नारद स्वर्ग सिधाए॥ [illegible] भूपति श्री हरि
आए॥ १५॥ रिषि [illegible] महीप सुनायो॥ ज
ज्ञ करो उन मोहि बतायो॥ श्री हरि कह्यो मतो
यह कीजै॥ [illegible] जग [illegible] जस लीजै॥ १६॥

तिन नर मेध यज्ञ है नाध्यौ ॥ ता हित भूपति को गन बांधौ ॥ एक घाटि सौ ऋधि पति रोके ॥ परे बंदितें मह ससोके ॥ १७ ॥ मारि ताहि हौं बंदि मिलाऊं ॥ सोक वंत सब भूप छुटाऊं ॥ भीम सेन अर्जुन संग लाए ॥ रूप क परिया के तिन ठये ॥ १८ ॥ नगर राज गिरि चलितें गये ॥ दुर्गम ठाम बिलोकत भये ॥ मध्य नगर के लागे जान ॥ बाजन बाजे हने निसान ॥ १९ ॥ जज्ञ थली भूपति हो जहां ॥ लागे जान सबै मिलि तहां ॥ रक्षक हुतौ मल्ल तिहिं द्वार ॥ बिन बूझें क्यौं चले अगार ॥ २० ॥ दोहा ॥ तिन कर पकर्यो भीम को दाहन क्यौं हूं जान ॥ तुम सों कछु सर बर नहीं कहत न बनई आन ॥ २१ ॥ भिर्यो मल्ल सो भीम सों कीनो अद्भुत जुद्ध ॥ पवन पुत्र के उर हन्यो मुदगर बहु करि क्रुद्ध ॥ २२ ॥ लरखराय भूतल गिर्यो पार्थ पछार्यो आइ ॥ चेति भीम करि क्रोध अति हन्यो गुरज उर धाइ ॥ २३ ॥ फेरि बली बर बाहु बल डारी भुजा उखारि ॥ कर्यो दुष्ट सो प्राण बिनु फटिक सिला सों मारि ॥ २४ ॥ कर्यो प्रणाम महीप को जज्ञ थली में जाइ ॥ देखत ही संदेह करि यों बोल्यो भुव राय ॥ २५ ॥ आय तपी के भेष तुम देखत बहु बल वंड ॥ मांगो जो मन कामना सोई देहुं अखंड ॥ २६ ॥ श्री कृष्ण उवाच ॥ दोधक छंद ॥ मांगत जुद्ध महीपति दीजे ॥ जी महं और बिचार न कीजे ॥ तीनहुं में जो आयसु पावैं ॥ सोई तुम सों जूझ न आवै ॥ २७ ॥ भूपति कृष्ण तहीं पहिचानें ॥ बैन

तिनुका फारो देखत नैन ॥ ३८ ॥ समुझि सैन कोप्यो बल
बीर ॥ दूनो ह्वै गयो फूलि शरीर ॥ जरासंध भुव पटकि प-
कारि ॥ दीन्हे फांक बीच ते फारि ॥ ३९ ॥ सोरठा ॥ सबरे
राजा राय मुकराये तब बंदि तें ॥ छूटि चले सुख पाय
जो पंछी पिंजरानि ते ॥ ४० ॥ छंद ॥ राजा उवाच ॥ जय जय
नंद नंदन दुष्ट निकंदन जय जग बंदन गरुड़ासन ॥ भव
भय मोचन जन मन रोचन दुखविमोचन [illegible] ॥ स
ज्जन मन रंजन दुष्ट निकंदन परम निरंजन जग करता ॥
साधु निवारो दुष्ट संहारो मारयो लोकनि के हरता ॥
॥ ४१ ॥ दोहा ॥ हरि गुण गावत भूप सब गये आपने धाम
॥ जरासंध सुत बोलि कै सुरासंध तिहि नाम ॥ ४२ ॥
नगर राज गिरि को तिलक कीनो ताके सीस ॥ अर्-
जुन भीमहि संग लै चले तिहूं पुर ईश ॥ ४३ ॥ दुरा

संधु उवाच ॥ छपै ॥ कैटभ मधु मुर हरण धरन नख अग्र -
शैल बर ॥ हिरना कुश हिरनाक्ष हरण प्रभु रदन धरणि
धर ॥ संखा सुर संहरण हरण हरि अधक बंधहि ॥ खर
दूखन नपु भंजि गंजि भंजन दश कंधहि ॥ गज राज का
ज प्रहलाद ध्रुव दया सिंधु असरण शरण ॥ नमो नमो
कबि छत्र कहि सुनारायण जग उद्धरण ॥ ४४ ॥ दोहा ॥
चलि हरि आये इंद्र पथ ताको दैके राज ॥ भूप युधिष्टि
र सुख भयो भये सकल मन काज ॥ ४५ ॥ श्री कृस्नउ
वाच ॥ पठयो बंधव आपने जीतिहि चहुं दिशा देश ॥
गये कृस्न तब द्वारिका यह कहि के उपदेश ॥ ४६ ॥ ❋
इति श्री महा भारत पुराणे विजय मुक्ता वल्यां कबिछ
त्र बिरचितायां जरा संध युद्ध बर्णनो नाम चतुर्दशो
ऽध्यायः ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥ करी कृपा चारों अनुज भूपति लये बुलाय ॥
कह्यो करो सब दिग बिजय दिश दिश जीतहु जाय
॥ १ ॥ भीम सेन पूरब गये उत्तर पार्थ सुजान ॥ सहदे
व दक्षिण गये पश्चिम नकुल पयान ॥ २ ॥ दिशा दिश जी
ते जाय सब आने बांधि महीप ॥ कीरति सो छाई ध-
रा धल थल जंबू दीप ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ सब बंधव नृप
अंक मिलाए ॥ समदे नकुल द्वारिका धाए ॥ करी बि
नय कृस्नहि लै आये ॥ नगर इंद्र पथ भये वधाये ॥
॥ ४ ॥ आये दुरजोधन गुण ग्राम ॥ अतुल रूप ताको
संग्राम ॥ कीने सकल जज्ञ के साज ॥ बोले तहां स
कल रिषि राज ॥ ५ ॥ छपै ॥ आये गौतम व्यास अ
त्रि पारासर आए ॥ बिश्वा मित्र बशिष्ट गर्ग शृंगी रिषि

धाये॥ बालमीकि दुर्बास जासु मति पारुन लहिये॥बहु
रि सुभद्रक द्रोण और नारद मुनि कहिये॥ कवि छत्र-
अठासी सहस रिषि सकल जुरे भूपति भवन॥जज्ञस्थ
ल लागे सबै बेद ध्वनि द्विज उच्चरन॥६॥ सोरठा॥भूपति
के चित चाउ रक्षक कीने सब नृपति॥दुरजोधन भुव-
राउ भंडारी सोभित तहां॥७॥दोहा॥जहां चाहिये एक
तहां द्वै दुरजोधन दानि॥ऐसौ होइ भंडार ज्यों सो राजै।
मनजानि॥८॥ जितौ लुटावै भूप धन दूनो दूनो होइ॥
देखि भरौ भंडार तब भूलि रह्यो सब कोइ॥९॥चौपाई॥
कीनो गर्ब जुधिष्ठिर राइ॥कौन आजु मेरी सर आइ॥
धनि हौं जाको भरो भंडार॥यहै सकल बस्तुनि मैं सार॥
॥१०॥कीनो गर्ब कृस्न जब जान्यो॥ यह बिचार आपने
उर आन्यो॥ कर्ण राय भंडारी कीनो॥बेगि द्रव्य ह्वै ग
यो जो हीनो॥११॥ सोरठा॥ चिंता करि नर नाह बिस्वं-
बर सों यों कही॥सुनिये त्रिभुवन नाह ऐसौ भयो-
भंडार सब॥१२॥ श्री कृस्न उवाच॥ दोहा॥ तैं कत
कीनो गर्ब मन कमल हस्त कुरु राइ॥ घटै घटावै
द्रव्य नहिं जो वह देइ लुटाइ॥१३॥ दंत करण के
कंपि उठे संके गिरि वर मेर॥है कुरु राजहि करण
को इतनोई नृप फेर॥१४॥ अज्ञा अर्जुन को दई
लंका को तुम जाउ॥जीति लंक पति को सुभट ब
हु सुबरण लै आउ॥१५॥ सवैया॥ धाय कै जाय-
चढ़ाय लयो धनु सागर बाणनि छाय लयोई॥को
रव मैं बहु बाहु परा क्रम मारग लंक को बीर कि
योई॥ माइ के गर्ब निसाचर नाथ को घोर अहंकनि

शिशुपाल
मंडप
अग्नि
कुंड
राजायुधिष्ठिर

मी हुती कृस्न जंही मर जाद हुतैं बढ़ि भाखी॥ चक्र हन्यो शिशु पाल के सीस सभा मह रंचक कानि न राखी॥ २६॥ दोहा॥ सबकै उर संका भई सब कंपे भुव राय॥ जय जय जय भाषत भये जय जय त्रिभुवन राय॥ २७॥ प्रथम तिलक हरि सिर कस्यो फिरि भूपनि के सीस॥ बिधि सों सब पहि राय के कीने बिदा छितीस॥ २८॥ इति श्री महाभारत पुराणे बिजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र सिंह विरचितायां शिशु पाल बधन बर्णनो नाम पंचदशोऽध्यायः

॥ १५॥ सोरठा ॥

दुर जोधन भुव राय न्योति बुलाये इंद्र पथ॥ कर्ण सहित सुख पाय आदर कीनो धर्म सुत॥ १॥ सुंदर मंदिर चाहि भूलि रहे कौर व सकल॥ जनु अमरावति आहि आखंडल सो धर्म सुत॥ २॥ दोहा॥ जब भीतर को नृप चले सर बर सों चित चाहि॥ जानत अमित अगाध जल पै तहँ नीर न आहि॥ ३॥ दोहा॥ बसन उठाये आप नृप भस्यो फटिक के ताल॥ गयो गर्ब सो सदन लखि भयो बिकल बेहाल॥ ४॥ आगे सर वर बावरी नीर न परै लखाय॥ जानि भूमि धोखो परयो जल अगाध में जाइ॥ ५॥ दर वाजे दीने हुते उज्जल फटिक कपाट॥ तिहि मारग अवलोकि कै लीनी सोई बाट॥ ६॥ तासा रग कुरु राजके लागी चोट लिलाट॥ तब आगे सहदेव ह्वै नृपहि सहाई बाट॥ ७॥ निरखि भूप की यह दशा पंच बीर मुसिकाइ॥ अरु हंसि द्रुपद सुता गई रह्यो नृपति मुरझाइ॥ हिम कर हत जैसे नलिन त्यों भूपति मुख देखि॥ उतराये भीजे बसन आद

र कियो बिशेषनि ॥९॥ बैठारे भूपति सभा धर्म पुत्र तिहि काल ॥ रच्यो अखारो नृत्य को बोलि गुनिन के जाल॥१०॥ आनी अर्जुन जीति कै उत्तर तें जे बाल ॥ भीम जीति-पूरब लई तें आंई तिहि काल ॥ ११ ॥ जीति नकुल सह देव बर आनी हीं जे नारि ॥ नृत्य हेत आगे नृपति ते सब लई हंकारि ॥ १२ ॥ सोरठा ॥ नृत्यत त्रिय बहु भाय सुर पति रति उलथा सहित ॥ उपमा दीजे काहि मानहुं रंभा उर बसी ॥ १३ ॥ दोहा ॥ इंद्रपुरी सम सो सभा धर्म पुत्र सुर राय ॥ नृतत त्रिया मनु मेनका तिलोत्तमा छबि छाय ॥ १४ चौपाई ॥ देखि सभा आए ज्यौं नार ॥ जेवत षटरस भोजन सार ॥ भांति भांति के व्यंजन आने ॥ नामी कहां लगि कौ न बखाने ॥ १५ ॥ जेइ उठे तब दीनो पान ॥ गये गेह तब बुद्धि निधान ॥ महा मलिन मन कछु न सुहाइ ॥ सब बंधुन सों कह्यो बुलाइ ॥ पंडु सुतन को कहु मत कीजै ॥ कहो तो देश निकारो दीजे ॥ मारत सब बिधि मेरो-मान ॥ देश तजें सो करो सयान ॥ १७ ॥ चलि धृत राष्ट्र भूप पै गये ॥ पंडु सुतन बहु धा दुख दये ॥ तब जेठे पितु मोर अंदेश ॥ पांचों बीरनि छूटे देश ॥ १८ ॥ धृत राष्ट्र बाच ॥ दोहा ॥ जब पांचों बालक हुते दीने दे-श निकारि ॥ भ्रमत फिरे बन बीथि कनि रह्यो सहाइ मुरारि ॥ १९ ॥ मन न बिचारो दुष्ट ता कारज भलो न एहु ॥ कह्यो मान मेरो उन्है जीव दान किन देहु ॥ २० ॥ यों सुनि कै उत्तरे नृपति आये आपने गेह ॥ सकुनि दुसासन क-र्ण तहां बोले सहित सनेह ॥ २१ ॥ दुष्ट चौकरी जुरि तहां कहै बिचारि बिचारि ॥ सो कीजै पांचो अनुज

दीजे देश निकारि ॥२२॥ सकुनि उवाच ॥ मंत्र विचारो एक मैं आपु मानि मन लेहु ॥ भूप इनको जूप में देश निकारो देहु ॥२३॥ जो विरोधि इनको करौ यदि शल्यानि सहाउ ॥ भूप जीति हो आजुके लहि नबधौं हू लाउ ॥ ॥२४॥ दोधक छंद ॥ मंत्र महीपति के मन आन्यो ॥ सत्य-यही अपने उर आन्यो ॥ भीषम कर्ण तहां तब बोले ॥ बुद्धि कपाट हृदय के खोले ॥२५॥ द्रोणादि आदि सबै चलि आये ॥ भेद सबै तिनको समुझाये ॥ ऐसो मंत्र कछू प्रति धारो ॥ भूप जुधिष्ठिर देश निकारो ॥२६॥ विदुर उवाच ॥ दोहा ॥ जौ लगि उन को भूप सुनि त्रिभुवन नाथ सहाइ ॥ तौ लगि काहू की कछू कैसे हू न बसाइ ॥२७॥ द्रोण उवाच ॥ दंडक छंद ॥ देखि कै परायो कछू कीजिये न अनरायो दावे बिना दायो किये हैहै महा हानिये ॥ ऐसो अबिबेकी है कुटेव टेव टेकी जिहि नेक हू तो त्रास हरि जूको उर आनिये ॥ साजत है काज तू कसाई अघ दाई कैसो हैहै अपजस यह नीके उर आनियें ॥ बंधुन सो कीजे कोऊ द्रोह उर कोह छांडो कीरति कलित जाते भूप [illegible] बखानिये ॥ ॥२८॥ दोहा ॥ पर द्रोही और कृत घनी ते अंतक बस होत ॥ दीजत नर्क अघोर में जिते संसारत गोत ॥२९॥ सुनि नृप मौन उत्तर दियो बचन कह्यो गुरु घोर ॥ मन लो लाग्यो चित्त में चितये भीषम-ओर ॥३०॥ भीषम उवाच ॥ खेल कपट को नासजो हैहै मूल बिनास ॥ बाढ़े बंधु बिरोध अति हैहै जग उप हास ॥३१॥ छप्पै ॥ जिनसे सोइ धर्म जहां

पारखंडहि कीजे ॥ बिनसै सोई प्रीति जहां हांसी मन दीजै ॥ बिनसै सोई पुत्र लाड माता पितु मंडहि ॥ बिनसै सोई वंश आप कुल करनी छंडहि ॥ बिनसै सो धन बेगही धन होते जो रिन करै ॥ सुन सुमति मारग चलो कुमति कलह नृप परि हरै ॥ ३२ ॥ बिनसै सोई बिप्र जो न षट् कर्महि साजै ॥ बिनसै मंदिर बेहि निकट सावर के राजै ॥ बिनसै सोई कथा जौन तामहं मन दीजै ॥ बिनसै सोई काज जहां पर आसा कीजे ॥ बिनसै सोई नारि प्रचंड गृह-सकल कुमति गति परिहरो ॥ सिख सीख भूप भीषम कहै सु नृप नाहि मंडल करो ॥ ३३ ॥ बिनसै सोई बधिक दया जाके उर आवै ॥ बिनसै तस्कर वेहि भेद आपनो जतावै ॥ बिनसै सोई नेह कपट जो उरमें धरिये ॥ बिनसै सोइ ब्योहार नीच सों जो कछु करिये ॥ बिनसै द्विज सेवा करत बिनसै द्रुम सरिता निकट ॥ इहि भांति सीख भीषम कहै [illegible] भूपति आगे सुघट ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ तजो जूप की चाहि सब [illegible] कहै संसार ॥ है है कलह कुटुंब में रखि राखी करतार ॥ ३५ ॥ धर्म पुत्र को भूप जो आयसु देहु बुलाइ ॥ बचन न मेटै रावरो जुठि कानन को जाइ ॥ ३६ ॥ भीषम के यों बचन सुनि भूपति गयो अवास ॥ आप बुलाये अनुज सब हित कै अपने पास ॥ ३७ ॥ पास रजाय सु शकुनि तब रच्यौ कपट को जूप ॥ निरखि करन रबि पुत्र को यों बोल्यो तब भूप ॥ ३८ ॥ आनहु बोलि जुधिष्ठिरहि यों बोल्यो सुख पाइ ॥ कपट जूप में खेलि कै लेहौं सबहि हराइ ॥ ३९ ॥ करण गयो चलि इंद्र पथ कह्यौ

भूप सो जाइ ॥ बोलत खेलन जूप सों दुरजोधन सुख पाइ ॥ ॥४॥ चले भूप यह बात सुनि भीम सेन सुधि पाइ ॥ जाइ हस्तिना पुर नहीं कही न्रपति सों जाइ ॥४१॥ जुधिष्टिर उवाच ॥ चौपाई ॥ जुवा जुद्ध को सबी भागै ॥ ताको भुव अपजस बहु लागै ॥ कह्यो भीम सों करो नकान ॥ चले भूप तब बुद्धि निधान ॥४२॥ चलो अनुज सब कसि किरबार ॥ चली द्रोपदी लिये भंडार ॥ साहन लै परि ग्रेह सिधाये ॥ नगर हस्तिना पुर चलि आये ॥४३॥ कोस एक आगे ह्वै लिये ॥ आदर भाव-अमित बिधि किये ॥ हित्त कुरि लिये सभा में आये ॥ निरखत बिदुर महा दुख पाये ॥४४॥ तब आरंभ जूप को कीनो बोलि सकुनि दुःशासन लीनो ॥ भीषम बिदुर भाव यह जान्यो ॥ कपट खेल अपने उर आन्यो ॥ ४५॥ भूप जुधिष्टिर कोतब देखि ॥ दावैं रदन करज सबि शेखि ॥ चक्रत भये चहूं घा ताकें ॥ भूपति डर कछु काहि नहि सांकें ॥४६॥ कपट खेल को कियो बिचार ॥ कौरव जीत्यो सब भंडार ॥ राज पाट आपन पो हारो ॥ बिलखब बदन भये बंधव चारौ ॥४
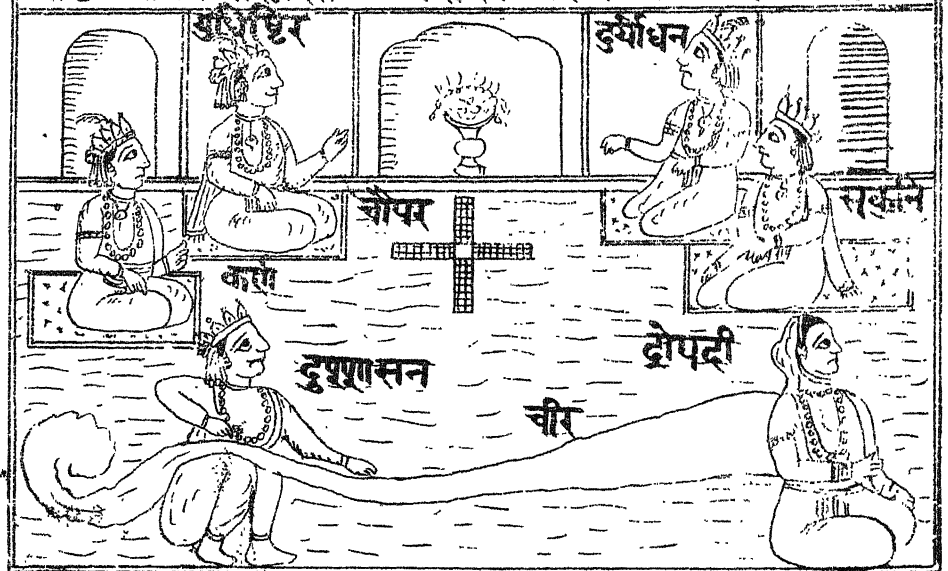
फूल्यो दुरजोधन भुव राइ ॥लयो दुसासन निकट बुलाइ ॥
तुरत जाहु नहि लागै बार ॥ल्याव द्रोपदी सभा मझार ॥
॥४८॥ इतनी बात कहत उठि धायो॥ तुरत द्रुपद तनया ढिग आयो ॥ अजुगत बात आय कै भाखी ॥ ताकी नेक कानि नहि राखी ॥ ४९ ॥दूसासनउवाच ॥ दोहा ॥जीत्यौ कौरव जूप में पुरी जुधिष्टिर हारि ॥तू दुरजोधन मन बसी चलि मेरे संग नारि ॥द्रुपदी उवाच ॥दंडक छंद ॥ सत्त धर्म पुत्र के असत्त कहूं देखिये न जाके सत्त तेज छिति छोर लौं मढ़ितिहै ॥तामें तू अधर्म कहि भाषतु है दूसासनकी रति नसत अप कीरति बढ़ति है॥ कर को करज दाबि दंतनि में बार बार मीडि मीडि हाथ ऐसे द्रोपदी रटति है ॥ मात के समान जेठ बंधु की बधू सो अब ऐसी क्यों अनैसी तेरे मुखते कढ़ति है ॥ ५१॥दोहा॥ दूसासन फिरि तहं गयो कह्यौ नृपति सौं जाइ ॥द्रुपद सुता की बिनय बहु रही गेह भुव राइ ॥ ५२॥ दुरजोधनउवाच दूसासन जिय मारि हौं लाउ द्रोपदी बाल ॥पकरि केश नहि कानि करि आनि सभा उताल ॥ ५३॥ जाय गहे कर केश तिन कीनी कछू न कानि ॥ सभा मांझ आनी पकरि आई मन न गलानि ॥ ५४॥दुरजोधनउवाच ॥ बैठि त्रिया मो जंघ पर मन मानी तू नारि ॥ मैं तुम हित सब री तजी निज तरुनी सुख कारि ॥ ५५॥ द्रोपदी उवाच॥ पापी बोलि न दुष्टता कहि न अबूझत बैन र न पाट मिटि जाय गो इहि बिधि कछू रहै न ॥ ५६॥ झुकि भूपति तब यों कह्यौ लेहु दुकूल उतारि॥ सुनि दूसासन मो निकट आइ नग्यो बहु नारि ॥ ५७॥

चौपाई॥दूसासन कर पकस्यो चीर॥भीम सेन धर हसो शरीर॥
कही जुधिष्ठिर सों अकुलाइ॥आयसु देनिय लेहुं छुटाइ
॥५८॥राजा उत्तर कछू नदीनो॥तब दूसासन उद्यम की
नो॥पंचाली सुमिरे अकुलाइ॥दीन बंधु किन करो स-
हाइ॥५६॥द्रोपदी उवाच॥दंडक छंद॥जिन की पतनी-
की तिन पतिन की तुम पति स्वावत पतित गति केसे-
के कसाई की॥रानी अकुलाइ कही फाटि हू नजाय म-
ही कैसे जाति सही दुष्ट दुसासन्दाई की॥कीनी करण
कानि नही द्रोण न गिलानि करी तजी पहिचानि बानि-
भीषम भलाई की॥जैसे प्रहलाद काज कीनो है इलाज-
त्योंहि कीजै महा राज आज लाज शर नाई की॥६०॥
सवैया॥काहू की बार सह्यो गिरि भार सुकाहू की बार-
अंगार चबाए॥काहू कीबार बिदारि अदेव सुकाहू-
की बार पयादेइ धाये॥काहू की बार को पाहन फारि
कढ़े नरसिंह के रूपहि आए॥दीन के नाथ कहाइ-
के वे गुण बार हमारी कहां बिसराए॥६१॥दंडक छं
द॥मेटी कुलरीति मानों जानि पहिचानि नही द्रोपदी
सभा में छोर गह्यो आनि चीर को॥रानी अकुलाय
कही फाटि हू नजाय मही हूजिये सहाय धस्यो ध्यान
जदु बीर को॥दीनन की लाज राखि लीजे महा राज आ
प और कहौं कासों कोऊ हीर को नपीर को॥जोर-
साथ दूसासन हाथ थाके पाथर ज्यौं छूट्यो नही क्यौंहूं-
पट रंचक शरीर को॥६२॥साहस सहित बल बाहु स-
बिलाइ गये भीषम समेत कोऊ बोलत नतट को॥व्या-
लसे बिशाल काल दंड ते कराल बाहु ऐंचि साको पट-

दूसासन भट को ॥ आस छांडि पाले की निरास बास टेरे हरि करुणानिधान प्राभ्र सुन्यो दीन रटको ॥ देह तें कढौ है पट कोटिन मढौ है छत्र द्रोपदी दुकूल बढौ जैसे सूत नट को ॥ ६३ ॥ भीम सेन भीर तजी पारथ हू पीर तजी धीर तजी धर्म उन सत्त में दृढ़ाइ कै भीषम हू बानि तजी द्रोण पहिचानि तजी कर्ण तजी निरखो बिदुर बराय कै ॥ बुद्धि कुरुराज तजी दूसासन लाज तजी ऐंचि ऐंचि हारो पट खरेई खिसाइ कै ॥ बार नाल गाढ़ करी द्रोपदी की भाई तहां संकरे सहाई जदुराई भये आइ कै ॥ ६४ ॥ खैंचत पिरनी बांहै कीनी जुध्रनेक आहै दोऊ कर मीडि मीडि दूसासन दयातु है ॥ भोडर के कत्रा भोज पत्तर के पत्ता लौं पट उघरत जातु पैन उघरत गातु है ॥ दुर्जन दुसासन छिमान गहतु छिन छीजतु बसन पैन उघरतु गातु है ॥ द्रुपद सुता को चीर पुजवत जादौं बीर अंगते तरंग सों अंबर होत जातु है ॥ ६५ ॥ दोहा ॥ पट खैंचत भट की नहीं भुजबल भये अनाथ ॥ आपुन लीनो प्यार हों बसन रूप जदुनाथ ॥ ६६ ॥ ऐंचि ऐंचि हारो पटहि दूसासन अकुलाइ ॥ थाकि रह्यो करि बल घनो रह्यो सभा अरगाइ ॥ ६७ ॥

भीम सेन उवाच ॥ दंडक छंद ॥ मारि डारों रण में निकारि डारों गर्व सर्व मूल तें उखारि डारों बाहु दूसासन के ॥ तोरि डारों जानु जंघ दुष्ट दुरजोधन के तनक करो दुष्टन के तनके ॥ चाहि मुख नृपति युधिष्टिर जू भीम कहै आयसु जो देहु तौ तो सारों काज मन को ॥ हमहिं अछत खल चीर ऐंचो द्रोपदी को धम कत हिये मांझ जैसे घाउ घन को ॥ ६८ ॥ दोहा ॥ द्रुपद

सुताको इन गह्यो जिहि कर दुष्ट दुकूल ॥ हौं बर बाहु उखा-
रि हौं तेइ भुजा समूल ॥६९॥ द्रुपद सुतहि अन्हवाय -
हौं ताके रुधिर मझार ॥ भीम पैज बोली यहै इहि विधि
बार बार ॥७०॥ भीष्मउवाच ॥ सांचहू जाये अंध के अ-
छत दृगनि जे अंध ॥ चले कहा धौं एक की वैसेही
सब बंध ॥७१॥ महिमा करुणा सिंधु की देखत है-
खल नैन॥ भये लट पटे मूढ़ भुज ऐंचत पट उबरैन॥
॥७२॥ श्राप देहि त्रिय क्रोध करि सभा भस्म ह्वै जाइ
होनी होइ सो क्यौं मिटै देखि देखि पछि ताइ ॥७३॥
सुनी सकल धृत राष्ट्र यह तत छिन ही अकुलाइ ॥
धर्म पुत्र जुत द्रौपदी लीने निकट बुलाइ ॥७४॥ समा
धान सतोष करि दीन्हे गेह पठाइ ॥ पहुंचे त्रियजु-
त इंद्र पथ पांचो बांधव आइ ॥७५॥ इति श्री महा
भारत पुराणे बिजय मुक्ता वल्यां कबि छत्र बिरचिता
यां द्रौपदी अक्षय दुकूल वर्णनो नाम षोडषो ॥ ध्या
य॥१६॥ चौपाई ॥

दुरजोधन सब अनुज बुलाइ ॥ तिनि सो कही बात अकुला-
इ ॥ कहा हमारे जीति होइ ॥ वैसुख बिलसत है सब कोइ
॥१॥ ऐसो मंत्र कछू अब कीजै ॥ उन की सकल-
संपदा छीजै ॥ पांचो अनुजनि देश निकासि ॥ तब-
ह्वै है सुख की बहु रासि ॥२॥ पठयो करण इंद्र पथ -
गयो ॥ खेलन जूप संदेसो दयो ॥ चलन जुधिष्टिर-
भूपति कह्यो ॥ न्योत पठाये जाइ नख्यो ॥३॥ खेल-
कपट को तेसब जानै ॥ कही भीम की चित्त न आ-
नै ॥ चलिकै नर पति पहुंचे जाइ ॥ आदर कीनो कौ-

र व राइ ॥४॥ खेल कपट को तब तिन ठन्यो ॥ कपट म
हा अपने चित आन्यो ॥ अभय कीजिये बचन दिढ़ाइ
जो हारै सो बन को जाय ॥५॥ बाचा बंध दुहू मिलि की
नो ॥ जूप खेल में तब मन दीनो ॥ हारो राज युधिष्ठिर
भूप ॥ हारो साहन पाट अनूप ॥६॥ हारो देश सहि
त भंडार ॥ हारो गज बाजिन को दार ॥ प्रफुलित है दु
रजोधन कही ॥ राज पाट सब हारी सही ॥७॥ बारह ब
र्ष जाय बन रहो ॥ गिरि गह्वर के सब दुख सहो ॥
॥८॥ दोहा ॥ बरष तेरही जाय दुरि जो हम लेहिं निहा
रि ॥ फिर करि द्वादश बर्ष को दैहैं तुम्हैं निकारि ॥
॥९॥ भीम सेन उवाच ॥ कपट जूप इन खेलि कै
कानन दीनो बास ॥ पाय रजायसु हौं करौं कौरव
कुल को नास ॥१०॥ नृपता लेहुं छिड़ाइ कै करौं रा-
ज भुव ध्वंस ॥ करै सकल जग बंदना छत्र धरौं-
किन सीस ॥११॥ राजा उवाच ॥ नलद मयंती की-
कथा भूप कही समुझाय ॥ द्वादश बर्ष बिपन रहि
राज करैं गे आय ॥१२॥ अर्जुन उवाच ॥ मोको आ
यसु देहु जो राज छांड़ि सब लेहुं ॥ संकट गोसी
जाय मिटि नृपता बिप्रनि देहु ॥१३॥ मिटै गोसी
चित्त को दूजे ह्वैहै धर्म ॥ आयसु देहु कृपाल ह्वै
यहै करौं हौं कर्म ॥१४॥ राजा उवाच ॥ छप्पै ॥ धन्य
धन्य नृ पार्थ खंड खंडनि जस कीनो ॥ धन्य धन्य -
भुज दंड कसो सुरपति बल हीनो ॥ धन्य धन्य -
तुव पानि कोपि धनु करत जक्त सर ॥ धन्य धनु
धर धीर दियो बिधना तो कहैं बर ॥ [illegible] कैसननी

जै रोष मन तुव सर बरि कहु को करहि ॥ संक त दुग्ग
दिग पाल धर सुधर थर थर हर हि ॥ २५ ॥ दोहा ॥ वि-
प्रनि को यह दान नहि देहु पंथ बलि चंढ ॥ बारह बर्ष बि
तीत करि करि हैं राज अखंड ॥ २६ ॥ सह देव उवाच ॥
हतौं अंध सुत अनुज सब यह मेरे जिय आज ॥ आप
बचन प्रति पारिये बनहि चलो महराज ॥ २७ ॥ राज
सिंहासन द्रव्य सब साहन अरु भंडार ॥ सब वारो
है राखि हौं कीजै यही विचार ॥ २८ ॥ बिपिन दुखी जिनि-
होहु नृप मोसों सेवक पाइ ॥ अन्न द्रव्य जुत भूप गन दे-
हों बन पहुचाइ ॥ २९ ॥ राजा उवाच ॥ चौपाई ॥ तेरो पौरुष
हौं सब जानो ॥ अतिहि सूर तनु कहा बखानो ॥ पैनिजु
बचन हमारो मानि । फेरि राज करि हैं हम आनि ॥
॥ २० ॥ नकुल पर जसो यों हठि भाखै ॥ कौरव मारों को
अब राखै ॥ आज्ञा देहु भूमि भर तार ॥ हतौं अनुज
सब लगै न बार ॥ २१ ॥ हारी पहुमि सुनीचे धरों ॥
तर की धरती ऊपर करों ॥ तापर बैठि राज नृप कीजे
सकल अरिन ऊपर पगु दीजे ॥ २२ ॥ दोहा ॥ नकुल नि-
वास्यो नृपति तब यों कहि बारंबार ॥ तोसो बलीन और भुव
जानै सब संसार ॥ २३ ॥ गहि ठाढी नर नाथ तब लघु
बंधव समुदाय ॥ तबै इंद्र पथ धाम में पहुंचे सब
जन आय ॥ २४ ॥ राजा उवाच ॥ तेरह बर्ष बिपिन ब
सि फेरि आयहैं धाम ॥ क्रोध नहीं कोऊ करो म
ना बाचा काम ॥ २५ ॥ इति श्री महा भारत पुराणे नि
जर मुक्ता वल्यां कवि छत्र विरचितायां राजा युधी
र दुरजोधन जूप बर्णी नो नाम सप्तदशो ऽध्यायः ॥ १७

इति सभा पर्ब्ब समाप्तं ॥ अथ बन पर्ब्ब कथनं ॥ ॥ ॥ ॥ मोतिका छंद ॥ राज चिन्ह तजे जुधिष्टिर भूप सब बनको चले ॥ चतुर भ्राता संग लीने हुते सूर भले भले ॥ मातु राखी बिदुर के गृह हेत बहु बिधि जानि कै ॥ राखी सुभद्रा-पुत्र जुत पुर द्वारिका में आनि कै ॥ १ ॥ द्रौपदी के पंच-सुत नृप दुपद ढिग ते राखि यो ॥ पंच बंधव दुपद त-नया सहित बन अभिलाखि यो ॥ छत्र पाट धरे सिंहा सन सदन में सुख पाइ कै ॥ भूप रथ चढ़ि बंधु जुत कानन चले अकुलाइ कै ॥ २ ॥ चलत ही इक असुर मारग बिपिन को तब रोकि यो ॥ बिकट घट अति रदन दीरघ भीम सेन बिलो कि यो ॥ गदा जुद्ध हि छांडि कै बल वंत रथ तजि धाइ कै ॥ मल्ल-जुद्ध कियो बली बहु दुष्ट अंकहि लाइ कै ॥ ३ ॥

भूमि गहि संहारि राकस बिपिन को तब पगु धरौ ॥ लख्यो बन अति सघन द्रुम बहु भांति के बहु फल-फरौ ॥ ललित ललित लवंग लति का कलित करना-सोहिये ॥ बेलि बल्ली बहु चमेली जुही जुत मन-मोहिये ॥ ४ ॥ छप्पै ॥ सोहत तरबर ताल केलि कर-नार अमृत फल ॥ सोहत कंजनि जुक्त कित्ते सरवर जल निर्मल ॥ सोहति निर्झर झरत सुथल थल सरित-अखंडित ॥ सोहत लतिका फूल भव्वर गुंजनि सुख-मंडित ॥ शीतल मंद सुगंध तहं बहत पवन अति-सुखद गति ॥ कबि छत्र रम्य अवनी सुथल निरखत होत प्रसन्न मति ॥ ५ ॥ भुजंग प्रयात छंद ॥ तहां आप ही को कुटी भूप कीनी ॥ बिलोकी बनी तापली की नवीनी ॥ छहूं काल के वृक्ष फूले फले हैं ॥ तहां कोकिला आदि पंछी भले हैं ॥ ६ ॥ तपी बिप्र केते तहां चित्त मोहैं ॥ मनौ देव देवप्रा लोके प्रा सोहैं ॥ मयूरी महूं ओर तें नृत्य साजें ॥ कहूं-हंसिनी हंसनी के बिराजें ॥ ७ ॥ दोहा ॥ तपसी मर्कट देखि रिषि कीने नृपति प्रणाम ॥ भांति भांति-करि बंदना कही नृपति गुण ग्राम ॥ ८ ॥ मोकहं होहु प्रसन्न रिषि देउ कछू उप देश ॥ दीनो सूरज मंत्र तब सुनि सुख भयो नरेश ॥ ९ ॥ जाप्यो भूप तुरंतही प्रगट भयो भू भानु ॥ कही भूप सो मंत्र को सुनिये सकल बिधान ॥ १० ॥ प्रात न्हाइ-कै भूप तुम जपियो मंत्रहि नित्त ॥ षट रस भोजन दीस प्रात पढ़ं चाऊं तुव हित्त ॥ ११ ॥ चौपाई

इहि बिधि भोजन दिन प्रति पावैं ॥ आपनु जैमैं रिषि नि जिमावैं ॥ रिषि सब भूपति को समुझावैं ॥ तिहिबन रहत नकछु दुखपावैं ॥१३॥ करि दुष्टता जयद्रथ आयो ॥ हरण द्रुपद तनया को धायो ॥ सक्यो न नेक जुद्धि को कांधि ॥ लीनो भीम सेन सो बांधि ॥ भीम सेन उवाच ॥ अज्ञा मोहि गुसांई दीजै ॥ बांधि दुष्ट अबही मारीजै ॥ भूप कहैं ऐसी नहिं कीजै ॥ बांधि मारि अपजस क्यों लीजै ॥१४॥ पाइ रजायसु सो मुकरायो ॥ लज्जित है गृह को चलि आयो ॥ करी तपस्या शिव की जाइ ॥ केती बरष तन मन लाइ ॥१५॥ दोहा ॥ बहु दिन बीते करत तप भये महेस उदार ॥ मांगि मांगि तासों कह्यो सोई बर मुख कार ॥१६॥ जय द्रथ उवाच ॥ भीम धनंजय धर्म सुत सहदेव नकुल कुमार ॥ मीचु लहै मो हाथ ते यह इच्छा मो सार

॥६७॥
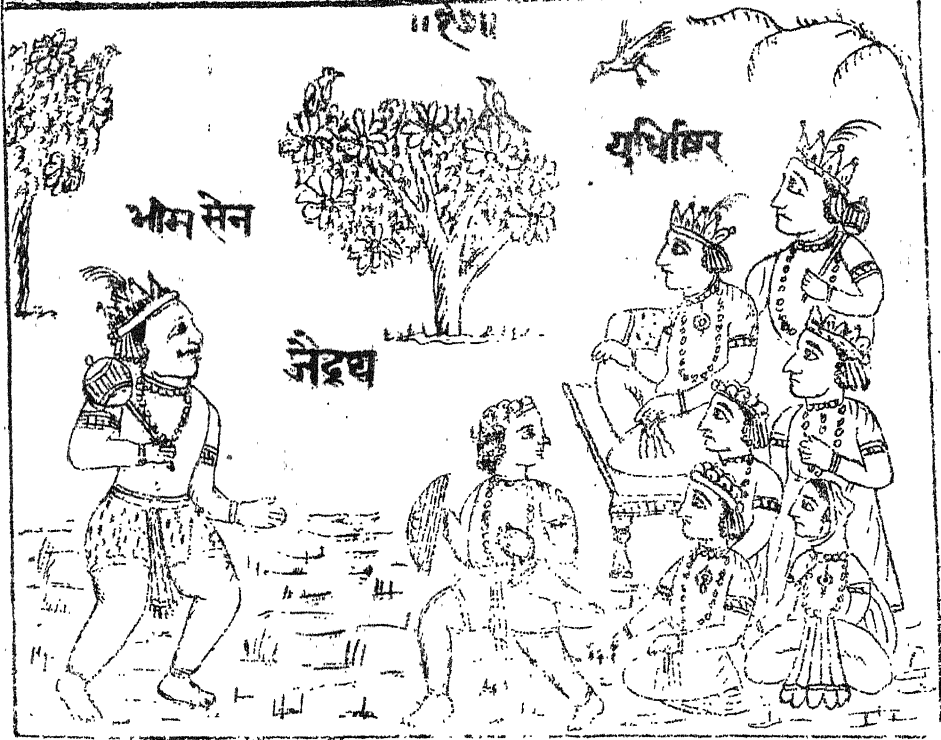
शिव उवाच ॥ बिसु भक्त वे पंच जन तिन सों कह्यो बरा डू ॥ एक द्यौस वे पंडु सुत जीतिजय द्रथ जाइ ॥१८॥ चौपाई जबही जय द्रथ यह बर पायो ॥ चलि दुर्जोधन के ढिग आयो ॥ आप परा जय सब अनुसरी ॥ तब मैं शिवकी सेवा करी ॥१९॥ एक दिवस दीनो शिव मोहि ॥ जीति जाइ मैं दीनो तोहि ॥ सुनिकै दुरजोधन बहु लाज्यौ ॥ दुःख भयो मन आनंद भाज्यौ ॥२०॥ दोहा ॥ धर्म धुरं धर धर्म सुत बिहरत बन में जानि ॥ भेट्यो चाहत पुत्र को धर्म-राज सुख दानि ॥२१॥ लहे अकेलो पुत्र नहि तब दानव-बपु साजि ॥ सिर अकाश पगु धरणि सो देखि उह्यो-गत गाजि ॥२२॥ ऊपर लैगायो नृपति को बान धनंजय तानि ॥ घालत नहि तादुष्ट को कांनि भूप उर-आनि ॥२३॥ सिंह नाद लौ भीम तहँ गरजि उह्यो-किल कारि ॥ गिरयो असुर भुव आय कै ज्यौं मुर-हत्यौ मुरारि ॥२४॥ सोरठा ॥ कह्यो ब्यास रिषि राय-अर्जुन सो उपदेस तब ॥ सेवो ईश्वर जाय मन-बच काइक नेम सो ॥२५॥ दोहा ॥ रुद्र बाण लहि रुद्र पै कहे पार्थ सति भाउ ॥ त्रिभुवन सांई करि कृपा-अमर पुरी दरसाउ ॥२६॥ तब ईश्वर आज्ञा दई-कुसुम बिमान चढ़ाइ ॥ दरसायो सब अमर पुर-भेट्यो तहँ सुर राइ ॥२७॥ चित्र सेन गंधर्ब सों-प्रीति बढ़ी बहु भाइ ॥ नृत्य नाद तन अर्जुनै बिद्या दई सिखाइ ॥२८॥ पार्थ रिझायो इंद्र बहु सातों-स्वर तब गाइ ॥ नृत्यकियो सुर तरुनि तब बाजन बिदित बजाइ ॥२९॥ सुंदरी छंद ॥ अरजुनकी

बहु धा हरषी मति ॥ तासहु देव प्रसन्न भयो अति॥ईश्वर कौ -
सब धामदिखावत ॥ देखत पार्थ महा सुख पावत ॥ ३० ॥ बि-
ष्णु पुरी अवलो कि सबै तहां ॥ देखी जाय बिरंचि पुरीजहं ॥
इंद्र पुरी महं मंदिर राजत ॥ सुंदर रूप नि युक्त बिराजत॥
॥ ३१ ॥ सवैया ॥ सुंदर मंदिर कंचन के मणि नील कं गूरनि सों॥
छबि छाए ॥ लाल मनोहर माणिक जाल खचे सित खंभबि
चित्र सुहाए ॥ बिद्रुम मुक्त अमोलिक सो प्रति द्वारनि
बंदन वारबंधाए ॥ सूरप्रभासी अभा कवि छत्र बिलोकि
कै पार्थ हिये सुख पाए ॥ ३२ ॥ चौपाई ॥ कहि गंधर्व अ
चंभो एह ॥ काहे ते सूनो यह गेह ॥ किहि पुर मंदिर
रच्यो बनाइ ॥ किहि हित तज्यो सुकहि समुझाइ ॥
॥ ३३ ॥ चित्र सेन गंधर्व उवाच ॥ ताल बरण दानव बलिना
म ॥ तिहि सुर लीयो यह संग्राम ॥ वाके त्रास धाम य-
ह तज्यौ ॥ आखंडल दूजो मह सज्यौ ॥ सुनि कै पार्थ
हि चिंता भई ॥ सहस नैन पै आज्ञा लई ॥ नीको -
रण दानव सौं जाई ॥ बहु रण जुरो घोर दल लाई
॥ ३५ ॥ सोरठा ॥ कहौ कहां लगि जुद्ध कौ बाढै कथा -
अपार ॥ ताल बरण की सब चमू मारत लगी न बार
॥ ३६ ॥ छप्पै ॥ करत अमित गति जुद्ध लरत दानव -
बल जान्यो ॥ इंद्र पुत्र शिव बाण कोपिकै तब संधा-
न्यो ॥ रुंड मुंड कटि बाहु जानु जंघा कर टूटे ॥ एक
हि बाण निशान सर्ब सेना बल लूटे ॥ भय भीत सब
हति असुर सब तजि रण बल दुरि गए ॥ जय -
जुद्ध पार्थ करि बाहु बल मन प्रसन्न आनंद किये
॥ ३७ ॥ दोहा ॥ इंद्रहि सुबस बसाइ कै पुनि नै -

करि तिहि धाम ॥ तहि आज्ञा आयो पहुमि जीति अ सुर संग्राम ॥ ३८ ॥ चौपाई ॥ आइ जुधिष्टिर के पग बंदे ॥ बंधव सुनत सकल आनंदे ॥ राजाउवाच ॥ तो सों तुही काहि सरि दीजे ॥ सुर नर कौन बराबरि कीजे ॥ ३९ ॥ इति श्री महा भारत पुराणे बिजय मुक्तावल्यां कवि छत्र बिरचितायां अर्जुन बिजय बर्णनो नाम अष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

नाराच छंद ॥ नबै नरेस धर्म पुत्र संग बंधु ले भले ॥ निकेतनारि द्रौपदी महा अरन्य में चले ॥ लखे तहाँ अनेक पुष्प स्वर्ण बर्ण देखि कै ॥ सबै सुगंध फूल में नबीन हैं बिशेखि कै ॥ १ ॥ उठाइ द्रौपदी लये सराहि ताहि यौं कहै ॥ मंगाइ देहु भीम सेन पुष्प ये जहां लहै ॥ भीम सेन उवाच ॥ उड़ाय पौन त्यों परे कहां सुनारि पाइये ॥ नजानिये दिशा सुकौंन कौन ओर धाइये ॥ २ ॥ द्रौपदी उवाच ॥ बिलोकि देह आपनी बिचार क्यौं नतू कहै ॥ बिना अनेक जाल नैन सूर कोइ यों लहै ॥ कहां प्रसून हेत नें बिचार चित्त में कियो ॥ नदेहि माहि आनि सो कठोर है महा हियो ॥ ३ ॥ दोहा ॥ गदा लई तब भीम कर मन बोले अकुलाइ ॥ उत्तर दिशि गिरि कंदरनि कानन पहुंच्यो जाइ ॥ ४ ॥ बैठि बीर गिरि शिखर पर उठ्यो महा गल गाजि ॥ पावस घन गरज्यो मनो चले सिंह सुनि भाजि ॥ ५ ॥ गिरि गह्वर मग सघन द्रुम ढूंढे गुहा पहार ॥ सुनत नाद हनु मंत तब आइ गयो तिहि बार ॥ ६ ॥ किये बृद्ध कपि रूप तन बपसो तहां बिच आइ ॥ अवलोक्यो सो

भीम तब सके नबाट छुटाइ ॥ ७॥ चौपाई ॥ तारी दै दै भीम डरावै ॥ बानर के मन कछू न आवै ॥ झुकि झुकि के वह तिन लल कारयो॥ छुटै न मारग पचि पचि हारयो॥ ॥ ८॥ भीम सेन उवाच॥ मारग छांड़ि कहतु हौं तोहिं। लांघत जीवहिं लज्जा मोहिं॥ मेरे बचन परयो जो रहै ॥ आपुन कियो आपुही लहै ॥ ९॥ हनु मंत उवाच ॥ हौं अशक्त बहु भांति निहारो ॥ तुम समर्थ इत उत गहि डारो॥ भीम सेन बल करि करि हारयो ॥ मर्कट टस्यो न कौं हूं टारयो ॥ १०॥ तब तिनि बहु बिधि अस्तुति लाई ॥ सत्य कहौ तुम को हौ भाई ॥ असुर सुरेश कि गंध्रब कोई॥ सांची बात कहौ तुम सोई ॥ ११॥ गर्ब हमारो सब बिधि भाग्यो ॥ दौरि भीम तब चरणन लाग्यो ॥ अब जिनि कपट हिये में राखो ॥ अपनो भेद सकल बिधि भाखो॥ १२॥ हनु मंत उवाच॥ हनूमान है मेरो नाम ॥ चहौं सु पुजऊं तुव मनकाम सुनतहि भीम उठ्यो अकुलाइ ॥ चरण कमल तिनि बंदे जाइ ॥ १३॥ दोहा॥ भूलि गर्ब मन में कर्यो क्षमियो मो अपराधु॥ सदा चूक तिनि की क्षमै जो जन साधु असाधु ॥ १४॥ लीनी लंका रूप जिहि सो बपु दे दरसाइ ॥ कही युधिष्टिर भूप सों जिन कै मन पतियाइ ॥ १५॥ मूंदत आंखें भीम के कीनो रूप कराल ॥ पग धरती आकाश सिर निरखत भीम बिहाल ॥ ॥ १६॥ भीम सेन उवाच ॥ देख सक्यौ यह बपु नहीं बिकल होत मम देह॥ तातें दरसावो वहै निज शरीर करि नेह॥ १७॥ निज मूरति हनुमंत की दर साई सो
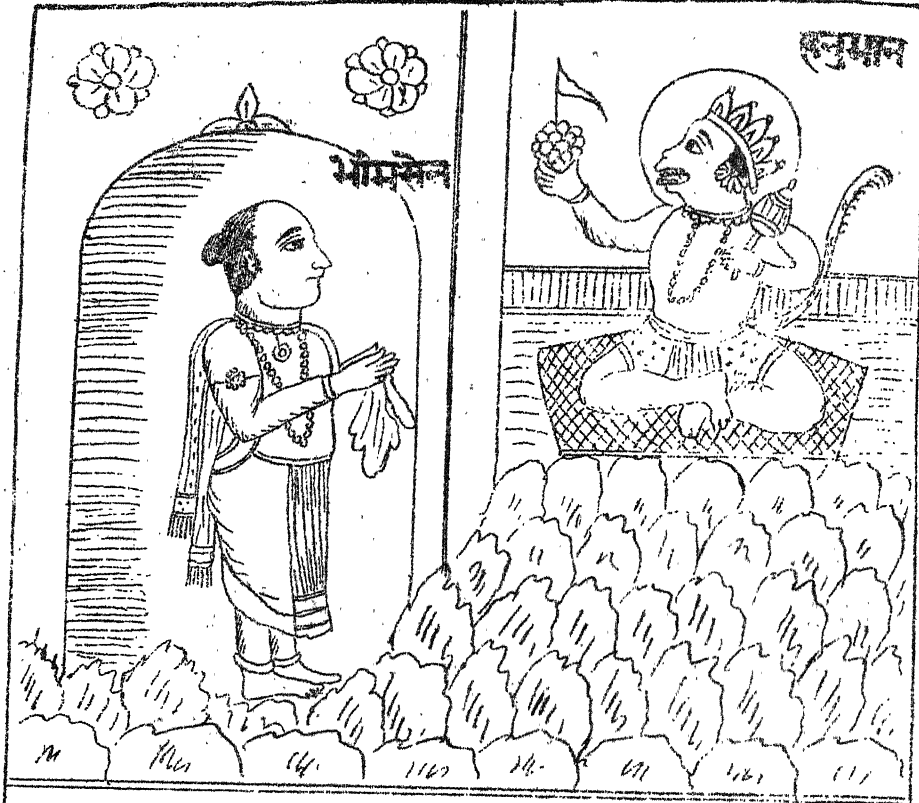
बाट॥ पठ्यो हित करि कै तहां [illegible] जिहिं घाट॥
॥१९॥ भीमसेन उवाच॥ दुर्योधन करि छद्मता लीने नृप हराइ॥ द्वादश वर्ष बन लह्यो पहुंचे इह थल आइ॥१९॥
दोधक छंद॥ जुद्ध महा उन सों अब ह्वै है॥ जीतिहि सो धरणी अब पैहै॥ आप कृपा करि कै चलि आवौ॥ बैठि धुजा गल गाजन सुनावौ॥२०॥ होय सहायक [illegible] हिं कीजै॥ तौ बर जीति सबै धर लीजै॥ [illegible] सुन्यो हित जबै जबै जू॥ बांह दई हनुमंत तबै जू॥२१॥ नाय चल्यो सिर सो सर देख्यो॥ उत्तम कंजन जुक्त बिशेख्यो॥ गंधर्व रक्षक देखि घनेजू॥ [illegible] तिन सों तब भीम भनेजू॥२२॥ दोहा॥ आज्ञा देहु कृपाल है लहौं प्रसूनानि धाइ॥ जुकि गंधर्व [illegible] [illegible] [illegible]

लिय रो जाइ ॥ २३॥ बर बट सर बर पैठि के लीनो बीडा बांधि ॥ यक्षक दौरे धनुष गहि तीक्षण बाणनि साधि ॥२४॥ कमल फूल द्रुम तर धरे सिर तैं तरे उतारि ॥ कोपि-गदा सों एक संग गयो कौशिक मारि ॥२५॥ सुन्दर-फरसा शक्ति सर भागे किन्नर डारि ॥ आनि कमल दीने सकल प्रिया पानि सुख कारि ॥२६॥ जुधिष्ठिर उवाच तोसों जुरैन जुद्ध में किन्नर यक्षक कोइ ॥ तोही ते मन कामना सब विधि पूरण होइ ॥ २७॥ तोटक छंद ॥ जब ही बहु द्यौस बितीत भये ॥ बन मांहि न्यारंदक भी मगये ॥ पुनि दीरघ पन्न गए कत हौ ॥ तिनि दौरि तबै पगु आइ गह्यौ ॥ २८॥ दोधक छंद ॥ भीम बली नकुलाचल कूसौ ॥ हारि रह्यौ बल दीरघ हूसौ ॥ मारि गदा न्यहि को सिर तोरी ॥ ताकहं नेक नयौ नहिं मोरी ॥ २९॥ बीति गये दश वासर ताही ॥ बात तहां लगि भूपति चाही ॥ बंधुन सों मिलि कानन देख्यो ॥ सर्प गह्यौ तब भीम-विसेख्यौ ॥ अर्जुन सों अहि बाणनि मारौ ॥ दौरि कै-सहदेव खड्ग प्रहारौ ॥ भूप कह्यो कत पन्नग मारो ॥ देव को अवतार विचारो ॥ ३१॥ नाग घोष नृप को संताप ॥ सर्प भयो सुनि विप्रन श्राप ॥ ऐसो जंतु आहि यह कोइ तासों याहि प्रहारन होइ ॥३२॥ भीम सेन बल करि कारि हारो ॥ सो कत मरत तुम्हारो मारो ॥ कीनो पन्नग जय जय कार ॥ जान्यो भूप धर्म अवतार ॥ ३३॥ सर्प उवाच दोहा ॥ तव पुरिखाहीं भूप सुनि नाग घोष मो नाम ॥ विप्र दोष दुरगति भई भयो सर्प गुण ग्राम ॥ ३४ ॥ अपनी नृपता मैं महा मद कीनो अपराध ॥ ऋष्योदृष्य

सब द्विजनि को दीनो दंड अगाध ॥ ३५॥ मोकहु दीनो आप तिनि पायो यह अवतार ॥ तब बिनयो कर जोरि कै कब पाऊं सुख सार ॥ ३६॥ कही द्विजनि जब पहुमि में होइ धर्म अवतार ॥ तब लहि हो सुभ गति नृपति ताहि परसि तिहि बार ॥ ३७॥ चौपाई ॥ छुवत जुधिष्टिर मिटि गयो दोष ॥ पायो नाग घोष नृप मोष ॥ छांडि भीम भयो अंतर ध्यान ॥ आये बंधव निज अस्थान ॥ ३८॥ सबही के मन आनंद भयो ॥ शोक द्रौपदी उर को गयो ॥ पंडु पुत्र बन में यो परही ॥ बन फल खाइ अहेरो करही ॥ इति श्री महा भारत पुराणे बिजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र बिरचिता यां राजा नाग घोष मोक्ष बर्णनो नाम नवदशो-

मोऽध्याय:॥१९॥

॥दोहा॥

दुर्जोधन बैठौ सभा बंधु सहित सुख पाइ ॥ पांडु पुत्र पांचौं तबै हियरा कर के आइ ॥ १॥ करण दुसास न सकुनि तब बोलि लिये सुख पाइ ॥ मो मन-आई सो करौं अब रन कछू उपाइ ॥ २॥ सवैया ॥ बूझत हैं सबही दुरजोधन बुद्धि उठी यह मो उर हीतैं ॥ सुद्धि लहै नपिता मह भीषम जाइ जुधिष्टिर भूपहि जीतैं ॥ लैंहि गे वे सब देस भंडार सबै धन आलष औधि बितीते ॥ साजि चले चतुरंग-चमूं सब बंधुनि जीति न कुंज कुबीते ॥ ३॥ दोहा॥ मानि रजायसु तास तिन साजे दल चतुरंग ॥ चले भूप करि दुष्टता करण दुसासन संग ॥ ४॥ गिरि-गह्वर मग देखि कै लख्यो घोर बन जाइ ॥ तिन

सेन गंधर्व तब रोषित यहूं च्यौ आइ ॥ ५ ॥ बांधे बिधि-
की पांस सो दुरजोधन भुव पाल ॥ मन बच क्रम बहु -
करण नृप कीनो कोप कराल ॥ ६ ॥ सुंदरी छंद ॥ करण-
मही पति की पकरौ बर ॥ पूरि लयौ बर बाणनि अं-
बर ॥ गंधर्व बोलि उठ्यो तिनि सो हँसि ॥ कौन छुराव-
हि भूप लयो ग्रसि ॥ ७ ॥ गंधर्व उवाच ॥ देवनि सों रण-
तू कत ठानहि ॥ मानव जुद्ध नहीं उर आनहि ॥ गा-
जत करण सुबाणनि छांडतु ॥ होतु कछू नहिं पौरुष-
मंडतु ॥ ८ ॥ दोहा ॥ श्रवण कुलाहल पार्थ सुनि आयो-
सर धनु साजि ॥ निरखि बंधे दुरजोधने बली उठ्यो-
रण गाजि ॥ ९ ॥ अरजुन उवाच ॥ चौपाई ॥ जो बांधौ
दुरजोधन राज ॥ कहै पार्थ तौ हम को लाज ॥ जद्यपि
हम को मारन आयो ॥ अपनो कियो आप फल पायो ॥
॥ १० ॥ तबहि पार्थ बिन वै गल गाजि ॥ तू मोपै कत उ

बरै आजि ॥ छांडि राय जो चाहै जियो ॥ नातरु बैधतु हौं-
तौ हियो ॥ ११ ॥ गंधर्व उवाच ॥ दोहा ॥ दुरजोधन करि दुष्ट-
ता आयो तुव बध काज ॥ अबल अकेले जानि बन-
उर कछु धरी नलाज ॥ १२ ॥ मित्र भाव उर में धरौ तो-
बांध्यो भुव राय ॥ खोलि पांस सौंप्यो नृपति अर्जुनवर
सुख पाय ॥ १३ ॥ छूटौ मृग ज्यौं बधिक ते यों भूपति
उर जानि ॥ दियो रजायसु धर्म सुत बिदा करहु सुख
मानि ॥ १४ ॥ अर्जुनउवाच ॥ आजु भये तुम ते उरिन-
यों कहि समदे राय ॥ बिलष बदन जुत करण तब च-
ले सदन दुख पाय ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ जैसी करै सु तैसी-
पावै ॥ ओछो ताकै ओछी आवै ॥ परहित कूप जो खो-
दै कोई ॥ निश्चय गिरि है तामें सोई ॥ १६ ॥ दोहा ॥ मलि
न भूप आये सदन निस दिन कछु नसुहाय ॥ लखि-
लखि पुरबासी सबै यों तब करत चवाय ॥ १७ ॥ पुर-
बासी उवाच ॥ गये बिपिन करि दुष्टता धर्म पुत्र बध-
काज बाधि लये गंधर्व नृप उपजी दल उर लाज ॥
॥ १८ ॥ कुसहि कलंक बिचारि के पार्थ उह्यो अकुलाइ ॥
त्रास दिखायो गंधर्वे लीनो भूप छुटाइ ॥ १९ ॥ गये ता-
कि है दुष्टता गई जीव की आस ॥ पार्थ छुड़ाये जानि
के बैठे मलिन अवास ॥ २० हुते जहां नृप धर्म सुत
धर्म राज तहां आइ ॥ देखत सत्या कर दयो माया मृग-
सुकराइ ॥ २१ ॥ आपु बिप्र को रूप धरि आयो भूपति पा-
स ॥ कह्यो देहु मृग पकरि के यह पुज औ मो आस ॥
॥ २२ ॥ तुम छत्री हो बिप्र हौं यह टारो मों आरि ॥ तौ सी-
जै मो काज सब सिंह जाइ गो मारि ॥ २३ ॥ दोधक

छंद ॥ बचव पाच तबै उठि धाये ॥ कानन में मृगके २ ढिग आये ॥ दूरि कहूं कहुं स्रुत नेरो ॥ हाथ चढ़ैन २ घिरै कहुं घेरो ॥ २४ ॥ लागि तृसा कल थाकि रहे हैं ॥ स्रो स्रम भये नहि जात कहे हैं ॥ पर्वत पै चढ़ि कै तव है-रैं ॥ देखत सूम परयौ जल नेरैं ॥ २५ ॥ दोहा ॥ नकुल ग-येतहं अंबहित लीनो भरि करि नीर ॥ भइ अकाश वा-नी तहां चकित भयो सुनि धीर ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ मेर बूझ उत्तर देहि ॥ जबत नीर आपु कर लेहि ॥ कह्यो न ताको इन कछु मान्यो ॥ नकुल नीर तब बाहिर आन्यो ॥ प्रानन तजि गये ताकी काया ॥ चिंता करी जुधिष्ठिर राय ॥ सहदेव धाइ नीर हित गयो ॥ विधि वाही तिनि हूं जी दयो ॥ २७ ॥ अर्जुन भीम गये जल पास ॥ लयो अंबु भरि कै सुविलास ॥ फिरि सो २ शब्द अकाशहि भयो ॥ उत्तर नाहिन तिनहू दयो ॥ २८ ॥ मृतक परे ता जल की पारि ॥ गये जुधिष्ठिर भूप बि-चारि ॥ नीर जहां भरि अंजुल लयो ॥ सोई शब्द अका-शहि भयो ॥ ३० ॥ आकाशवाणीउवाच ॥ मैं बूझों तू उ-त्तर देहि ॥ पाछे देव नीर भरि लेहि ॥ धर्म विवाद सक-ल तिन ठयो ॥ भूप सत्य तब उत्तर दयो ॥ ३१ ॥ सवैया ॥ लाभ कहा गुणवंतन के संग हानि कहा जु समै बित येते ॥ दुःख कहा जड़ मूढ़ की संगति सुःख कहा बुधि वंत भयेते ॥ ज्ञान कहा भव लोकैन आतम ध्यान-कहा विषयान चहेते ॥ प्रीतम को पति आहिं सबै त्रिय शील व्रती नित कै चित येते ॥ ३२ ॥ चौपाई ॥ कह्यौ धर्म हों रीझ्यौ तोहि ॥ प्रीति भई उर अंतर मो

हि ॥ अब तेरे जो मन में आवै ॥ वर मांगो सो मोपै पावै ॥
॥३३॥ राजा उवाच ॥ दोहा ॥ चारो वीर मरे परे ते अब दे
हु जिवाइ ॥ और कछू नहिं कामना यहै करो सुख दाइ
॥३४॥ धर्म उवाच ॥ दोहा ॥ जोई चाहै चारि में सोई देहु
जिवाइ ॥ और न जीवै तीन में निश्चय जानो राइ ॥३५॥
चौपाई ॥ सोई अब कीजे सति भाव ॥ कह्यौ भूप सहदे
व जिवाव ॥ फेरि भई उरध में वानी ॥ तात भूप तुम मि-
थ्या मानी ॥ अर्जुन भीम वीर मा जाए ॥ काहि काहे ते वे
न वताए ॥ राजा उवाच ॥ निज वीरन की पकरों वांह ॥ अ
जस होय अतिधरनीमांह ॥३६॥ ताते सहदेव देउ जिवा-
इ ॥ मिथ्या वचन न भाख्यो जाइ ॥ तौ धर्म देह धरि
आयो ॥ सत्य वंत भूपति उर लायो ॥३७॥ तेरो पिता ध-
र्म हो आइ ॥ अवै देउ हों सवै जिवाइ ॥ जल सों छिरक
जिवाये चारि ॥ कही सुनों सुत सव सुख कारि ॥३८॥
वारह वर्ष गई वन वीति ॥ चलियो व्यास कही जिहि
रीति ॥ धर्म राइ कहि स्वर्ग सिधाये ॥ पांचौं वंधु कुटी म
हं आये ॥३९॥ इति श्री महा भारत पुराणे विजय मु
क्ता वल्यां कवि॰ भीम राजा दुरजोधन मान भंग वर्ण-
नो नाम विंशो ध्यायः २० इति वन पर्व्व समाप्तम् ॥ अ
थ विराट पर्व्व कथ नम् ॥ दोहा ॥ धर्म सुवन भुव भूप त
व सुमिरे श्री ऋषि व्यास ॥ आय गये तिहि ठामही १
करण सकल दुख नास ॥ राजो वाच ॥ चामर छंद ॥
वुद्धि दे ऋषी स मोहि जाय कें कहा रहें ॥ सुःख सों र
हें जहां समूह वस्तु को लहें ॥ सोध पंथ पत्र सुधि २
रंच कौन पावही ॥ ठाम सो हमें ऋषीस करि कृपा व

गाव ही ॥ २॥ व्यास ऋ बाच ॥ अब तो छिपाय भूप गवर दू
रि नहीं ॥ जाउजू बिराट देश सुःख पाइहो तही ॥ चा
रि बर्ण के हिये तहां सदा दया रहे ॥ गुप्त होउ जाइ
के ऋषीश वात यों कहे ॥ ३॥ दोहा ॥ तव ऋषीश को
वचन सुनि कीनो नृप परवान ॥ तव विचार कीनो
यहै सव गण ज्ञान निधान ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ जै ऋषि २
नाम भूप को भाख्यो ॥ नाम जयंत भीम को राख्यो ॥
विजय विहन्नल अर्जुन नाम ॥ सहदेव ग्वाल भ-
यो गुण ग्राम ॥ ५ ॥ वाहुक अश्वनि नकुल कुमार ॥
यों कहि के ऋषि किया विचार ॥ छांड़ि गर्व सेवक
ज्यों सेव ॥ कीजो मन मारे तुम देव ॥ ६ ॥ व्यास की २
शिक्षा ॥ सवैया ॥ क्रोध तजो हो विरोध तजो अरु गर्व
तजो तुम धाम पराये ॥ [illegible] करो सव धाय
सु जाय रहो सव आप दुराये ॥ ऊंचोउ नीचो कहै कोउ
आयकै सोउ सुनै रहियो सिर नाये ॥ सांच विमोचन
राजिव नैन सदा रहियो तिनि सों चित लाये ॥ ७ ॥ सो-
रठा ॥ चलियो तही छांड़ जव जैसो समयो लखो ॥ गर्व
नहीं मनं मांह नेकहु भूप विचारियो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ यह
विधि के वहु सीख दे गये व्यास ऋषि धाम ॥ सोइ मनु हि
रदे लखो मनसा वाचा काम ॥ ९ ॥ पाइ सीख भव पात
तव वनतें भये उच्चाट ॥ पांचों वंधव कारि छिमा आये
नगर बिराट ॥ १० ॥ मृतक पुरुष सो बांधि के आयुध वां
धे धाय ॥ नगर निकट तरवर समी ता पर राख्यो जाय
॥ ११ ॥ निरखि ग्वाल ता थल काहो याहि छुवै जो आइ ॥
वरस दिवस लों मृतक यह ताकहु रवै है धाइ ॥ १२ ॥

॥ चौपाई ॥ यह कहि कें [illegible] बीरई ॥ आप नु चले नगर कों गई ॥ पैठत नगर सगुन भये घने ॥ सहदेव सों भूपति यों भने ॥ १३ ॥ राजा उवाच ॥ कैसे सगुन होत सुख कारि ॥ सों तुम बंधव कहो विचारि ॥ ऐसे लक्षण में पहिचानें ॥ हूहैं काज सकल मन मानें ॥ १४ ॥ सहदेव उवाच ॥ सवैया ॥ बाल खिला वहि बालक कों सुत २ अस्तन पान करे सुरभी कों ॥ सब में दीस सिरा वहु ग सब होयगो काज मही पति जीको ॥ लील गयो दिस वाम चिकारि कछू यह मो उर लागत फीको ॥ कैतिक काल वितीत भये तब सोच उठे कछु विग्रह हीको ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ पुर में बंधव चारो रहे ॥ राज सभा चलि भूपति गहे ॥ द्विज के रूप करो ती लिये ॥ सोहत दाढ्या तिलकनि दिये ॥ १६ ॥ उठि विराट निरखत सिर नायो ॥ कौन विप्र कहा तें आयो ॥ दै असीस यों विनवैराय ॥ धर्म सुवन कों वहा वा आय ॥ गिरि गहूर वे दुरि गये पांचो ॥ मोसों बैन कहों यह सांचो ॥ जादु विराट मही पति पास ॥ रहियो तहां सुखी सविलास ॥ १८ ॥ धर्म पुत्र तुव पास पठायो ॥ तातें निकट तुम्हारे आयो ॥ सुनि भूपति कीनो सन मान ॥ बैठो गुण मुनि ज्ञान निधान ॥ १९ ॥ राजा उवाच ॥ जैराधि नाम व्यास मुनि भाख्यो ॥ सुनि छिति पति बहु आदर राख्यो ॥ अर्द्धो सन बैठो तव भूप ॥ सिर पर तान्यो छत्र अनूप ॥ २० ॥ २ फिरिकें आयो भीम कुमार ॥ आय भूप को कियो जुहार ॥ दीरघ तन दीरघ भुज दंड ॥ निरखत बौनक भयो अखंड ॥ २१ ॥ राजा विराट उवाच ॥ दोहा ॥ कितने २

आये कौन तुम काहा लिह्यो नाम। कौन जाति किहि हेतु तुम आये मेरे धाम ॥२२॥ भीम सेन उवाच ॥ गीतिका छंद ॥ व्यास नाम जयंत भाख्यो पंडु सुत को स्वार हौं ॥ सर्व दार कारतो तहां बहु भीम को जु अहार हौं ॥ द्या करते रचत भोजन हौं सलोनो अति घने ॥ अतिहि सुगंधित स्वच्छ विंजन सकल षट रस सों सने ॥२३॥ रीझि रीझि नरेश दिन प्रति देत पट भूषण घने ॥ राखते बहु मान मेरो अनुज सर वर मागने ॥ ह्वै विराट उदार हित करि वचन अमृत भाखियो ॥ हेत सों बहु मान करिके निकट अपने राखियो ॥ २४॥ निरख्यो सब बरि भीम की भूपति ताकी देह ॥ विसार वली विचारिके ढिग राख्यो करि नेह ॥२५॥ फिरि अर्जुन नटराज ह्वै कीनो तिय को रूप ॥ कंचन किंकिनि आदि दै सजि आभरण अनूप ॥ २६ ॥ सिंदुर सीमत भार मुख मंहदी जुत सुभ पानि ॥ जावक चरण मृदंग की धुनि कीनी तिहि आनि ॥२७॥ सुनि भीतर बोले नृपति सब बूझ्यो व्योहार ॥ सकल ज्ञान संगीत लखि कला चौगुनी चार ॥ २८॥ अर्जुन उवाच ॥ गीतिका छंद ॥ हौंतो अगवारे धर्म सुत के रहत बहु सुख पाइ कै ॥ भांति भांति रिझावतो करि नृत्य गीत सुनाइ कै ॥ कौन अपनो गुण कहे सब बूझि जैसऋषि बोलि कै ॥ देहि सकल सुनाइ कै सब कहैं विद्या खोलि कै ॥ ॥२९॥ दोहा ॥ पारथ को हौं सारथी विजै विहं नल नाम ॥ जीवन आस रावरे गेह लियो विश्राम ॥३०॥ चौपाई ॥ धर्म पुत्र करिके बहु नेह ॥ पठये इहां जानि के गेह ॥ अब आभार हमारो लेहु ॥ वस्त्र अन्न चरम

द्रौपदी
रा नी
रानियां
उत्तराकुमार
पाण्डव राजाबिराट
के यहां आये गुप्तरू
पसे
युधिष्टिर बिराट

भरि देहु ॥ ३१ ॥ लघु कन्या बालक हि पढाऊं ॥ विद्या दै जगमें जस पाऊं ॥ भूप सुता उत्तरा कुवारि ॥ सौंपी पढन जोग सुख कारि ॥ ३२ ॥ फिरि सहदेव पहूंच्यौ आइ ॥ सु द्धि करी भूपति सो जाइ ॥ सहदेव उवाच ॥ हौं तो धर्म पुत्र कोग्वाल ॥ करतो महा कृपा भुव पाल ॥ ३३ ॥ वितो दूरि वन वीथिन गये ॥ हौं उप देस पैठ ह्यां दये ॥ करि जानो गा-द्दूय को सार ॥ अरु सब विधि करि सकौं दुष्यार ॥ ३४ ॥ २ मो देखत धनु को कहे गौर ॥ को रुग जुरि सो समता कौ र नाम सैनि यह दृत्ति हमारी ॥ यह जीविकासुचित्त बिचारी ॥ ३५ ॥ अरु जयंत जैन्कषि मोहि जाने ॥ उनें बूझि भूपति र सन माने ॥ सुनि तिन जान्यो वुद्धि विशाल ॥ सौंपी सुरभी कीनो ग्वाल ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ पैर नकुल आयो तहां लिये जात मोहाप ॥ देखि रूप की राशि तव चकित भये नर नाथ ॥ ३७ ॥ विराट उवाच ॥ कौन जाति को आउ हौ कहा तिहि रो नाम ॥ किहि कारण कवि छत्र कहि देख्यौ मेरो धाम ॥ ३८ ॥ नकुल उवाच ॥ दोधक छंद ॥ वाहु कुभूप जुधिष्ठिर २ केरो ॥ राखत मान सबै विधि मेरो ॥ वे दुरि कै वन माहिं सिधारे ॥ दै सब तें हम कौं दुख भारे ॥ ३९ ॥ वाहूर कूदर अ श्व चलाऊं जोजन सौ इक वासर धाऊं ॥ बूझ हु जैन्कषि को गुण मेरो ॥ मैं वसु नाम सुन्यो नृप तेरो ॥ ४० ॥ मो कह सों पिय वाहन जेतौ ॥ जानहुं गे गुण मों महं तेतौ ॥ यों सुनि भूप उदार भयो चित ॥ हेत करौ वसुध्या निलही नित र ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ सौंप्यो साहन नकुल कर है भुव पाल उदार ॥ वहसैर आई द्रौपदी भूपति सदन मझार ॥ ४२ ॥ देखी भूपति तासि जव संभ्रम वढ्यो अपार ॥ सची कि थों २

रति मेनका रंभा तें सुकु मार ॥४४॥ नगी पन्नगी काम-
ल जो भुव आई धरि देह ॥ सब रनि वांस चकोर सों श-
शि ज्यों आई गेह॥ रानी उवाच ॥ कहौ कौन की कुल व-
धू आई यौं किहि काम ॥ कौन जाति वरणों सकल सव
विधि के गुण ग्राम ॥४५॥ द्रौपदी उवाच॥ पंडु पुत्र ग्रह र-
द्रौपदी रानी परम उदार ॥ ताकी दासी मोहि गिन आई हों
तुम द्वार ॥४६॥ सुंदरी छंद ॥ वे वन में पति संग गई द्रुपि-
सो सों वैन कह्यो हँसि के मुरि ॥ आहु विराट मही पति के
घर ॥ काटहु काल तहां इहि औसर ॥४७॥ दोहा ॥ आई
तुम सेवा करन मोहि सुजानी नाम ॥ आज्ञा देउ कृपाल
है करौं इहां विश्राम ॥४८॥ रानी उवाच ॥ कौन सेव उ-
त्तम कहा करि जानो कहि वाला॥ चंद्र वदन सों वेगि क-
हि सोइ सौंप्यो इहि काल ॥४९॥ द्रौपदी उवाच ॥ दंडकार
छंद ॥ मंजन कराऊं आछे भूषण वनाऊं चुनि चीर पहि-
राऊं औरु भोजन संजो इहौं ॥ दर्पन दिखाऊं दरसाऊं
महा नीकी द्युति कुंकुम सुगं ध घन सार उर लाइहौं ॥
बीजना डुलाऊं जल सीतल पिलाऊं अरु सेज हूं वि-
छाऊं नव रागी काज दोइ हौं ॥ ऐसे कै सुजानी कहै जा-
नो नीके मेरी रानी झूठो हौन खैहौं और पाइ हौं न धोइ
हौं ॥५०॥ रानी उवाच ॥ चौपाई ॥ सत्य वचन तैं कहे सुजा-
नी ॥ मैं तुम निज पंडौ की जानी ॥ तन या सम मेरे ग्रह र-
हिये ॥ मोसों मन की बातें कहिये ॥ हल की भारी जो कोउ
भाखै ॥ तू जिन ताको आदर राखै ॥ थोरें हूं कीजे सन्तोष
॥ निस दिन करि हौं तुम पर दोष ॥५१॥ सुजानी उवाच ॥
गीतिका छंद ॥ करत रक्षा पांच गंधर्व अंत रिक्ष सदां व-

हैं ॥ विक्रमी बल वंत बहु विधि घोर रूप महा लसैं ॥ दौहि २
मा कों दुरवजो वे आय ताहि संघारि हैं ॥ दैदको नर देव २
कों छिति देव कोन विचारि हैं ॥ ५३ ॥ पाप दृष्टि जु मोहि २
रखै प्राण गात सो जानियें ॥ सो पंच रक्षक वे सदा यह स-
त्य उरमें राखियो ॥ निकट तिनि राखी सुजानी परम जि-
य सुख पाइ कें ॥ देत शिक्षा रहत सब सिंगार रच्यांनि व-
नाइ कें ॥ ५४ ॥ दोहा ॥ इहि विधि पांचों पंडु सुत और द्रौ
पदी बामा काल छेप तिन कौ करें छत्र सकल गुण धाम
॥ ५५ ॥ चौपाई ॥ होंहि एक संग काल हि पाई ॥ सकल अव-
स्था बरनें जाई ॥ जब सुत पति हि जुहां रन आवें ॥ प्र-
थमहि जैऋषि को सिर नावें ॥ ५६ ॥ इति श्री महा भारते
पुराणे विजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र विर चिता यां पां
डव अज्ञात वास वर्णो नो नाम एका विंशो ऽध्यायः ॥ २१
॥ दोहा ॥ अपनी दुहिता को रच्यो नृपति विराट विवाह
॥ छत्र सकल पुरमें भयो बहु मरह प्रति उत्साह ॥ १ ॥ छि-
ति के कितै छितीस सब आये तिनि के धाम ॥ राज २
समान परा क्रमी उरामें जिनि के नाम ॥ २ ॥ सोरठा ॥
सभा रची तिहि काल भमरावति सी जग मगी ॥ आप-
नु ज्यों नर पाल भूमि देव सब देवसे ॥ ३ ॥ भुजंग प्रया-
त छंद ॥ कहूं नृत्य का लीन वे जूप सोहैं ॥ कहूं राग की
तान सों चित्त मोहैं ॥ कहूं पातुरी लै मृदंगी नचावैं ॥ र-
लसैं उर्वसी सी सबै मान पावैं ॥ ४ ॥ कहूं मल्ल मारे भि-
रैं भीम भारे ॥ कहूं मेष लरें इनें डारे ॥ कहूं मत्त मा-
तंग ते दौर धूमैं ॥ लपी पुत्र के हंसिके चारु भूमैं ॥ ५ ॥
दोहा ॥ मल्ल एक आयो तहां बांनो बांधे ज्वान ॥ पग

मैठो उर पीत पट बोलि उठौ उत्ताल ॥ ६ ॥ सभा मांझ नर २ नाह सब चारि वरण की भीर ॥ वंड़ धनु धरे साहसी दे-खत हौं सब वीर ॥ ७ ॥ मोसों मल्ल जुरै नहि कोऊ का-हूं देश ॥ है कोऊ मोसो जुरै आज्ञा देहु नरेश ॥ ८ ॥ छप्पै ॥ मरहठ सोरठ जीति जीति सारंग तिलंगी ॥ जीति विदर्भी मल्ल सकल भूधर के संगी ॥ मगध जीति मेवार मद्र धर जीति चंदेरी ॥ वंदर वारिधि घाट जीति कर नाट कहेरी ॥ ॥ कवि छत्र जीति अंगद नगर नहि कोऊ सर वरि करि स-कै ॥ भुज वरणहु सभा तिहि सूरके जो करि वरसो सन्मुख तकै ॥ ९ ॥ चौपाई ॥ सुनि सुनि सभा न बोले कोई ॥ मन २ साहस काहूं नहि होई ॥ नृपति विराटहि सुधि हूं आई ॥ लीनो सार जयंत बुलाई ॥ १० ॥ विराट उवाच ॥ सुनि जयंत तू आयसु मानि ॥ मल्ल युद्ध तू यासों ठानि ॥ जो हारे तो लाज नहोइ ॥ जीते द्रव्य देहिं सब कोइ ॥ ११ ॥ दोहा ॥ तब जयंत यह मल्ल सों कही बात हर खाइ ॥ हम तुम रस सों खेलिहैं लीजे सभा रिझाइ ॥ १२ ॥ तू जो आने २ रोष मन डारै भुजा उपारि ॥ हम परदेसी न्याय ही दे-हैं भूप निकारि ॥ १३ ॥ मल्ल उवाच ॥ तन दीरघ दीरघ भुजा वचन कहत कात दीन ॥ यों सोऊं नहिं उच्चरै होइ जतन को हीन ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ मल्ल युद्ध दोउ मिलि २ करैं ॥ लट पटाइ धरती धुकि परैं ॥ फिरि फिरि बल करि उठत संभारि ॥ कोउन मानत है मैं हारि ॥ १५ ॥ जबहि २ जयंत भुजा बल कियो ॥ मल्ल उठाइ पहुमि तें लियो ॥ करि बहु क्रोध सु भूतल डारो ॥ जनु सुर बज्र धाय गिरि पारो ॥ १६ ॥ सम्हरि उठो ए वचन सुनाय ॥ अब

मारौं तू खल कित जाय॥लैतब गुर्ज उठ्यौ अकुलाइ।
हन्यो जयंत नासिका आइ॥१७॥बिषम चोट थर हर्यौ
शरीर॥मूर्छित पहुमि गिर्यो रण धीर॥निरखत जे रि-
षि और सुजानी॥है है है करिकै अकुलानी॥चेति जयंत
उठ्यौ गल गाजि॥जानन पायौ सो खल भाजि॥भूमहिं र
सात बार धरि मार्यो॥गहरे गर्व्व दुष्ट को गार्यो॥१८
॥सोफिरि जसेन करि बल जोरि॥दो वर कीनो मल्ल
मरोरि॥देखत सभा सकल नर हरषे॥बसन रजत मनि
मानिक बरषे॥२०॥मृतक दियो सुर सरी बहाइ॥तब
सब सम देराजा गइ॥जब सब नृपति बिदा है गये॥२

अपने अपने गृह सुख लये॥२१॥दोधक छंद॥मल्ल गयं
द हुतो इक ऐसो॥अंजन को भुव धूमर जैसो॥नीरज
के तन छोरि चलायो॥गर्जत धाम नि डामरु आयो

॥२२॥कानि माहा वत कीनिकौं सो॥प्राण तजे दिग आवत है सो॥सुंदर मंदिर द्वार दयेजू॥भीतर सव नर नारि भरे जू॥२३॥भूपति सौं सव लोग पुकारे॥हे कुंजर नर केतिक मारे॥ता छिन के तिक लोग पलाए॥वाध्यहु याकों भाषत आए॥२४॥चौपाई॥कोऊ निकट सकै नहि जाइ॥भूपति सों सव कही सुनाइ॥कैधौं हम हायन कुंजर आवें॥कोरो उपाय जो भूप वतावें॥२५॥राजाउवाच॥कै सव मिलिकै वांधो जाइ॥कै अव शस्त्र गहो किन जाइ॥वोलि जयंत हि आज्ञा दई॥या गयंद तें चिंता भई॥२६॥केवल वांधि कै लावहु मारि॥पुर कौ कंटक वेगि निकारि॥कहे जयंत जु मारों याहि॥कुंजर को जिनि पकरौ ताहि॥२७॥सिंह नाद गाज्यो वलवीर॥तव गयंद पर हल्यो शरीर॥पूछ पकरि एक झोंसो ऐसों॥दावत मृग कों चीतो जैसों॥२८॥पकरि रदन ले पहुंच्यो थान॥ज्यों अजया गहि लीजे कान॥वांधि ताहि भूपहि सिर नायो॥तव जयंत वस नैनि पहि आयो॥२९॥दोहा॥इहि विधि वीते मास दश नृप विराट के तीर॥काल छेप इहि विधि करें पंडु पुत्र वर वीर॥३०॥इति श्री महा भारत पुराणे विजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र विर चितायां भीमसेन विजय गज वध्य वर्णनो नाम द्वाविंशोऽध्यायः॥२२॥

सोरठा॥नृप सारनी कौ वंधु कीचक वली विशाल तन जोवन मद अति अंध सहस द्वरद सम ताहि वल॥१॥चौपाई॥सत वंधव कीचक अति वली॥वर अव गाहत वन अस्थली॥सो हत एक मात के जाए॥ऐसे सु-

भद महा पति पाए ॥२॥गीतिका छंद ॥इक द्योस कीच्च-
क मोहि के निज महल भूपति के गयो॥कीनो प्रणा-
म अंगप भगनी देखि के आसन दयो॥पवन ताक-
हं हेरे सुजानी नृपति त्रिय भोजन करै॥रूप दासी
को विलो कत देहकी चक थर हरै॥३॥बात भग-
नी सों कहे चित अटकि दासी सों रह्यो॥काल घेरो
मूढ यह हंसि के सुजानी यों कह्यो॥हैं पंच रक्षक मो-
हि गंधर्व सुत ताहि संघारि हैं॥यह बली होउसि हो
हु निर्वल वाछन चित्त विचारि हैं॥४॥काम अंध
भयो सु आतुर तुरत भगिनी सों कहे देहु दासी मो-
हि मेरो इच्छा मो उर में रहे॥देहुं वदले सहस दासी
एक यह मोहि दीजिये॥छांडि लज्जा काही तोसों
कह्यो मेरो कीजिये॥५॥रानी उवाच॥आहि दासी २
द्रुपदी की कहो किहि विधि दीजिये॥रहै मेरे उन्हरा
सम लोभ चित्तन कीजिये॥जीविका हित आइ कि-
रमी कहो किहि विधि पाइये॥दई जायन वीर सोंपे
आप धाम सिधाइये॥६॥कीच्चक उवाच॥काहि कै-
से तू राखिहे दासी वल करि लेहुं॥राज पाट सब छी-
निकै कोटि कोटि दुख देहुं॥७॥चौपाई॥देखी लागि न
साहिव राजा॥तेरो कहा सुधरि है काजा॥अति बल२
वंत वीर हे मेरो॥राखि लेहु को एसो तेरो॥८॥रानी
उवाच॥पर तरुनी रत जे नर भये॥अपनी करनी ते
मिटि गये जो चाहै अपनी कुशलात॥फेर कहौ जि-
नि याकी वात॥९॥सवैया॥अंध्य महा रूप कंध हरी
सिय राघव को सबता उर आन्यो शक्रहि शाप दयो

मुनि गौतम जानि कुकर्म के कर्मनि कल्यो भूमनि भूम हेत तरुनी अरु तारहि लागि वध्यो वरवाल्यो यों समुझ मनमें शठहू किनि कौन गयो पर वाम को पाल्यो ॥१०॥ दोहा ॥ भगिनी मुख ये वचन सुनि उठि सुधि ध्यायो धाम ॥ विकल महा जिय काल नहीं घरी महूरत जाम ॥११॥ चौपाई ॥ कीचक कौं सुधि बुधि नहिं रही ॥ सूने सदन सुजानी लही ॥ काम अंध अंचल तब गह्यो ॥ आतुर ह्वै या विधि सौं कह्यो ॥१२॥ चित मेरो तोसौं अब लाग्यो ॥ भौ अभाग्य सुधीरज भाजो ॥ मेरें तरुनी शशि उन हारी ॥ सब पर होउ सुहा गिल नारी ॥१३॥ उत्तम भूषण वसन र वनाऊं। अरु दासी को नाम मिटाऊं ॥ काहे जोवन र जनम गंमावे ॥ तू तौ मो उरमें अति भावे ॥१४॥ सुजानी उवाच ॥ गन्धर्व पंच मोहि रख वारे ॥ दीरघ र तन वल विक्रम भारे ॥ मोहि छुवत वे तुर तहि आवें ॥ कीचक तेरे प्राण नसावें ॥१५॥ ताहि मेरे मो र आप जम ह्वै हैं ॥ मोही दोष सकल जग देहैं ॥ यह सुनि कीचक वहु भय मानी ॥ सुरत गयो मुक राय र सुजानी ॥१६॥ निस दिन ताकहँ नींद न आवे ॥ धन संपति घर वार न भावे ॥ दूती बोलि सु कहि विधि याही ॥ कह दासी मो चित वसि रही ॥१७॥ भौरे स्याम सुजानी आवे मो मन इच्छा पुजवे सवे ॥१ वहु वातन दूती समुझावे ॥ चित्त सुजानी कछू न लावे ॥१८॥ यह विचारि नहिं वोले सोइ ॥ आजु कालि कछु काल हन होइ ॥ कीचक आतुर ह्वै उठि धा-

हिये लखै कछु नहिं कोइ ॥३१॥ चौपाई ॥ अबधि विते कीचक संघारों ॥ तब नहिं और विचार विचारों ॥ कै तौ लगि रहिये मन मारि ॥ कै वन वास करा वहि ना-रि ॥३२॥ बिलखि वदन त्रिय पहुंची तहां ॥ हुते विहं नल अर्जुन जहां ॥ बरनी कीचक की अघि काई ॥ भूपति के मन कछू न आई ॥ मेरो कह्यो गुसांई की-जै ॥ हनि कीचक कौ जग जस लीजै ॥ तुमहि अछ-त कीचक दुख दयो ॥ पौरुष तहां तुम्हारो गयो ॥३३ ॥ अर्जुन उवाच ॥ जौ भूपति कौ आयसु पाऊं ॥ तौ कीचक कौ मारि दिखाऊं ॥ नृपकी कानि न तोरी जाइ ॥ तातें कछू न करौं उपाइ ॥ दोहा ॥ गई नकुल सहदेव पै बिलखि वदन वर नारि ॥ अघि काई ता दुष्ट की सब विधि कही विचारि ॥३५॥ सुजानो उवाच ॥ चौपाई ॥ कीचक बांह हमारी गही ॥ तुम में कहो काहां पति रही ॥ मेरे जियकी परिहरु सुसारो कौ नहिं अपने अरिको मारो ॥३६॥ सहदेव न-कुल उवाच ॥ सुनि सुनि तेरे वचन ये बाढ़यो क्रो-ध अपार ॥ मेट्यो जाइ न नृप वचन विनयो वारं वार ॥३७॥ मारें कीचक छिनक में भूपति आय-सु पाइ ॥ करै अवज्ञा नारि अब को कहि नर कौ जा-इ ॥३८॥ चौपाई ॥ मास एक तू और निवारि ॥ सब र-न किहैं कीचक को मारि ॥ इन हूं तें त्रिय भई नि-रास ॥ पहुंची भीम सेन के पास ॥३९॥ सजल नैन भरि आंसू डारे ॥ मींडत नैन भये रत नारे ॥ पव-न पुत्र तब यह विधि जानी ॥ बिलखी ठाढ़ी द्वार र

लजानी ॥४०॥ आयो द्वार लखी त्रिय जैन ॥ लोहा लाल कीहे नैं बैन ॥ बोली विलखी अंसु वनि मांह ॥ कीचक दुष्ट गही मो बांह ॥४१॥ पंडु सुत निपं फिरी पुकारि वनगुह्यारि लगे कोउ चारि ॥ अब जो हांई तू सहि रहै ॥ गहिसो दुष्ट मोहि लै जैहै ॥४२॥ नदेयाशेष चढ्यो विषसो सब अंग लखी त्रिय के मुख पै मलिनाई ॥ बूझत उत्तर फेरन देत गये भरि के मुख बातन आई ॥ कीचक को सुनि ता मुख नाम सुदौरि रही दूग में अरु नाई ॥ देखत ही वधि हों छिन में यह पैज्ञ युधिष्ठिर भूप दुहाई ॥४३॥ पै हथि मीचु बुलाइ लई तिन स्यार वराइ कै सिंह सो खेल्यो ॥ दादुर धाइ जसो अहि सों सुक पोत किधों वर बाज सो रेल्यो ॥ मूषक जइ मंजारहि सों पग पील को चाहत गई भेठल्यो ॥ पैसो है काल कराल सोई कर जाय भुजंगम के मुख मे ल्यो ॥४४॥ दोहा ॥ काल सर्प सो खल डस्यो काम लहरि अकुलाइ ॥ पूंछ मरोरी सिंह की अब जीवत कित जाइ ॥४५॥ जो नहि मारों छिनक में आवे कुंतिहि लाज ॥ जो बैरी बल करि रहै जीवन काहून काज ॥४६॥ द्रोपदी उवाच ॥ चौपाई ॥ तुम देखत सब पंचनि मांह ॥ दूसा सन पकरी मो बांह ॥ दुरजोधन तब छीने चीर ॥ हुते अछत तहं पांचो वीर ॥४७॥ बिपिन जाय दृथछल कै हरी ॥ बांध्यो दुष्ट कानि नहिं करी ॥ दुख दै कीचक फारयो चीर ॥ तातें व्याकुल भयो शरीर ॥४८॥ दोहा ॥ सभा मांऊ सुनि कीचकै भीम चल्यो अकुलाइ ॥ अवसी

मारों दुष्टहीं अवहीं सबो वचाइ॥ ५१॥ द्रौपदी उवाच॥ अब न उतम बल कीजिये जाने काल वचाइ॥ दुष्टहि मारो रैनिमें रहै अखारे आइ॥ ५२॥ मैं संहेठ तासों वदी आवे तहां निसंक॥ ताहि तहां संघारि यो करिये ध्यान न अंक॥ ५३॥ पूरो मनोरथ कीजिये आवे जामें जीति॥ नहीं उतावलि कीजिये यहै ध्यान की रीति॥ ५४॥ चौपाई॥ भीम सेन तरुनी वपु कीनो॥ द्दग अंजन सिर सिंदुर दीनो॥ पट भूषन आभरन सम्हारे॥ कटि किंकिनि नूपुर झनकारे॥ ५५॥ करि तरुनी वपु पहुंचे तहां॥ वदी संहेठ अखारे जहां॥ बैठि रह्यो ता ग्रह में जाय॥ कीचक काल पहूंचो आय॥ ५६॥ दोहा॥ होन हार सो नहिं मिटे भावी महा वलिष्ठ॥ कीचक मन सिज सिंधु में वोल्यो वली अदिष्ट॥ ५७॥ दोधक छंद॥ रैनि भयें सुख कीचक पायो॥ वाम संहेठ वदी तहं आयो॥ देखि त्रिया वपु यों हंसि भाख्यो॥ तू धनि है अपनो पन राख्यो॥ ५८॥ आवत ही करता वांह मेल्यो॥ मान कियो बहु वार न ठेल्यो॥ नेक जहीं बल कीचक कीनो॥ दुष्ट ढकेलि त्रिया तव दीनो॥ ५९॥ जानि गयो यह वामन होई॥ है वर वीरनि में वह कोई॥ ताकहैं मारि सुजानी लाऊं॥ जीवत यों द्विज दोष निपाऊं॥ ६०॥ सोरठा॥ गिरे कोपि दोउ वीर लर पटास लोटत लिपटि॥ सूर समर रस धीर मथुर जनु भूतल गिरत॥ ६१॥ चौपाई॥ है मैं हारि न कोउ मानें॥ कोपि अमित गति जुद्धहि ठानें॥ अति बल भीम सेन तव कि-

यो मूठ उठाय पुहुमि तें लियो।। ६०।। पद को भूमि र
गंर पगदियो।। मारि सु दुष्ट प्राण बिन कियो।। मां
रु चौहटे राख्यो जाय।। जानें नहिं पुर जन ये भा
य।। ६१।। एक बूंद कहुं रुधिर न आयो।। देखत स
ब जन विस्मय पायो।। ६२।। दोहा।। मारि दुष्ट धरि
चौहटे जिय की विथा नसाय।। अर्द्ध रैन सुत र
पवन को निज थल पहुंच्यो आइ।। ६३।। जागे
पुर जन सदन सब प्रात भये नर नारि।। मृतका
देखि कीचक तबै सबो न कोऊ विचारि।। ६४।।
नगस्व रूपिनी छंद।। नृपाल सुद्धि पाय कै।। गये
तुरंत आय कै।। विलोकि भीति है रहे।। नबे न जांय
तहं कहे।। ६५।। विलाप ताप सो तये।। अशेष सो-
क सो भये।। उपाव कौन ठानिये।। कछून बात जा-
निये।। ६५।। दोधक छंद।। बंधव की सुधि ता छिन
पाई।। भूपति की तरुनी तहं आई।। रोदन के अति
ही दुख ठाने। दीसत भूप महा बिलखाने।। ६६।। र
राजा उवाच।। कैसेहि कीचक सर प्रहारो।। जा सं
ग अद्दु जुरै सो हारो।। अंग नहिं छत स्रोन न
त आयो।। भूलि रहे कछु सोधन पायो।। ६७।। रा-
नी उवाच।। दोहा।। रहै तरुनी गेह में जाहि सुजा
नी नाम।। गंधर्व रक्षक तासु के निस दिन आठ
हु जाम।। ६८।। कीचक अति आशक्त है गही सु-
जानी बाल।। ताही दिन सों मैं लख्यो घेरयो है इहि
काल।। ६९।। चौपाई।। कौन भांति गंधर्व निकु-
यो।। काहू पास नवासो गयो।। अति चौल ताकी

किरिया कीजे॥लै कृपा ताहि तिलां जलि दीजे॥७०॥
लखि कुत वालहि बोले राउ॥परजा लोग नि वेगि
बुलाउ॥लै कीचक को घाटहि जाउ॥विधिसौं सव
किरिया कर वाउ॥७१॥गीतिका छंद॥कहे जेऋषि
नीच लोगनि नहिं अंग छुवाइये॥वरण उत्तम होय
जाइ ताहि वेगि वुलाइये॥सुद्धि आइ भूप कों तव
लै जयंत बुलाइकै॥वारं दै दूक राज आज्ञा तिहि द-
ई तव टारिकै॥७२॥फेरि आयो पवन कोसुत भूप
तासौं यों कहे॥वचन मेरो मेटिकै कहि वेग मूढ
कहां रहे॥पंडु सुत की कानि राखों क्रोध है वोसे
हनो॥तू तो रहे सन मान सौं वहु अनुज सरि वर
हौं गनो॥७३॥जयंत उवाच॥दोहा॥मारो कीचक
मैं कहा कत कीजत है क्रोध॥मो दुख पायो कहि भूप
अंत हि लीजे शोध॥७४॥भोजन भाजन छाडिकै हौं
नहिं अंतहिं जाउं॥मनसा वाचा कर्मना तुमको महा
डराउं॥७५॥सोरठा॥करी कृपा नर नाह इहि विधि क-
ही जयंत सौं॥लै कीचकको जाहु दूरि नगर तें काल
करौ॥७६॥जयंत उवाच॥बंधु कुटुंब ज होइ सोई
मृतक हि काढि है॥कहा परी है मोहि ऐसे कामनि
हौं करौं॥७७॥दोधक छंद॥भूपति को फिरि आय-
सु पायो॥यौं नर नाथ हि वैन सुनायो॥जो अव भो
जन सौं कछु पाऊं॥लै कीचक कों घाट सिधाऊं
॥७८॥भोजन कों भुव पाल मंगायो॥वैठि जयंत
तहां सव खायो॥रोवहिं कीचक के सव भाईजम
त सौं नहिं नेक अघाई॥७९॥दोहा॥करि भोजन

लागि गुहारि तहां चलि ऐहैं ॥ भूपति संग चमू सब दीनी ॥ बेगि बिदा तिहि औसर कीनी ॥८॥ तोटक छंद ॥ नरनाह चमू सब साजि चले ॥ चतुरंग बने सब सैन भले ॥ दिशि उत्तर आपु महीप गये ॥ बन बीथिन सब पूरि लिये ॥९॥ दोहा ॥ कोपि सुशर्मा तब गयो दिशि दक्षिण उत्ताल ॥ तत छिन नृपति विराट के हरे धेनु के जाल ॥१०॥ भुजंगप्रयात छंद ॥ किते ग्वाल बांधे सुशर्मा जहां तें ॥ किते जीव लैके भगे हैं तहां तें ॥ किते आयकै भूपही पै पुकारे ॥ किते धेनु के वृन्द लीने सिधारे ॥११॥ चले सैन लै वीर यों आपु भाखैं ॥ किधौं आपही जायकै धेनु राखैं ॥ तबै भूप सोचै कहा मंत्र कीजे ॥ रहे आपनो दाउ सो बोलि दीजे ॥१२॥ दोहा ॥ कीचक कों सुमिरै नृपति यह कहि बार बार ॥ वा बिनु सुरभी बेंडिये को कहि लगै पुकार ॥१३॥ कह्यौ भीम ने बोल्यो भूप तब सैन पलानो जाइ ॥ धाय सुशर्मा वीर तें सुरभी लेहु छुडाइ ॥१४॥ नग स्वरूपिणी छन्द ॥ नरेश साजि कै चले ॥ अनेक सूर लै भले ॥ कुरंग ज्यौं तुरंग हैं ॥ करी समूह संग हैं ॥१५॥ महा कराल क्रोध में ॥ चले सु धेनु सोध में ॥ न अस्त्र सों कहूं मुरैं ॥ सुशर्म लै तहां जुरैं ॥१६॥ दोहा ॥ विजय बिहन्नल गेह रह्यौ पंडु पुत्र ते चारि ॥ देखत कौतुक जुद्ध को सकै न कोऊ हारि ॥१७॥ चौपाई ॥ तब रण सुभट सुशर्मा कोप्यो ॥ भूप विराट नहीं पग रोप्यो ॥ भागत जानि बांधि रथ धरो ॥ लैकरि ताहि पयानो करे

१८॥ दोहा॥ सह देव वपु ग्वाल को जे ऋषि को सिर नाइ॥ टेरि सुशर्मो हांक दै पेरयो तत छिन जाइ॥ १९॥ मत्त करी दल तासु को अंकुश लै फिरि धाइ॥ फेर्यो वल करि सिंह ज्यों गह्यो कोपि धसि जाइ॥ २०॥ चौपाई॥ सवै सुशर्मो वल करि हार्यो॥ पंडु पुत्र सो धरिण पछार्यो॥ मल्ल जुद्ध करि दल विच रा-यो॥ छोरि विराट हिदल मेलायो॥ २१॥ जे ऋषि कों तिनि माथो नायो ताकी सेना वहु सुख पायो॥ लै सुरभी तन मन सुख पाइ॥ चले आप गृह को तव राइ॥ २२॥ उत्तर दिशि दुर जोधन राइ वेढि लई सुरभी सुख पाइ॥ करण दुसासन अरु भगदंत॥ किते जूथ लैं चलैं तुरंत॥ २३॥ दोहा॥ भागे ग्वाल पराय कैं वहु विधि करी पुकारि॥ उत्तर कों निश्चिंत ह्वै वैठो मदन मझारि॥ २४॥ छप्पै दुरजोधन दुक हरी हरी दूसासन वल करि॥ एक करण कुल हरी कोप करि आगे धरि धरि॥ हरी हरषि भगदंत किती कपिला अरु धौरी॥ लछि-मन कुंवर कलिंग हरी के तिका कुक टोरी॥ हरी द्रोण सुरभी किती कौंन भवन यह किज्जियं॥ सु-नि उत्तर उत्तर दिशा सव लै सो धन लिज्जियं॥ २५ चौपाई॥ करत कुलाहल गिरि गिरि जात॥ दीरघ दीरघ धर कहि वात॥ ऐसो धिक दै जामें जिय॥ कासा कुमर स हारें हिये॥ २६॥ उत्तर उवाच॥ जो मेरे हित सारथि होतो॥ तो काहि कौरव को दल केतो॥ विन कोहूं कैसे वाहों॥ पैड़ा यातैं नृप को चाहों॥

धरैं जिहिं आपनि संकन संक रवीसी॥सायर सं-
गाम कौ अब गाहन आप भुजा बल पैज करीसी॥
बान सरासन सूर सवै यह वानि भली कछु मैं न-
हिं दीसी॥पौन के गौन हुते अतिलाघव आवनि २
स्फूर्ति अर्जुन कीसी॥३७॥दोहा॥उत्तर सौं सारथि
कही करिन कछू भय अंक॥सकल निपातों अरि
चमूं रहियै आपनिसंक॥३८॥नगर निकट तरु वर
समी तापर धनु अरु वान॥आनिउत्त दल मोनि-
कट गंजों अरि दल प्रान॥३९॥दोधक छंद॥वैन
सुन्यो उठि उत्तर धायो वेगिहिं तादुम के ढिग आयो॥
लेत ही पन्नग सोदर देख्यो॥संभ्रम चित्त महा तिन
लेख्यो॥४०॥सारथि कों फिरि वैन सुनाये॥व्याल
भये दुम सों कहं आये॥यों सुनिकै तव सो उठि २
धायो॥वान सरासनलै तहं आयो॥४१॥दोहा॥
निरगुन धनु गुन वंत करि सूधे कीने वान॥काढी
गंग भूमितें बांधि सकल संधान॥४२॥पहिरि कव-
च सिर टोप दे कौ धनुष टंकार॥हांक्यो रथ वहु २
वेग करि पहुंच्यो कटक मकार॥४३॥वीर धनु २
धीर के उरमें कछू न संक॥भट दुर्धट घट सव
कटक करी महा आतंक॥४४॥चौपाई॥देख्यो २
आनि धुजा हनु मंत॥जाके वल को कहं न अंत॥
पूर्यो संख धनुष टंकार्यो॥जीतन दुर्जोन दल पग
धार्यो॥४५॥उत्तर उवाच॥मोसों कहिन विहंनल
आनि॥सत्य कहौ कों आप निदान॥अवलों वामें
कछू कहतन आवै॥महा निसंक जुद्ध को धावै॥

४६॥ अर्जुन उवाच॥ सुनियें उत्तर यह सत भाय॥ जे ऋषि भूप जुधिष्ठिर राय॥ हौं अर्जुन यह सुनो कुवार॥ भीमजयंत तुम्हारो ग्वार॥ सह देव सुरभी रारवत सैन॥ वाहक नकुल मनो महि मैन॥ ४७॥ दोहा॥ वह रानी है द्रूपदी जाहि सुजानी नाम॥ वाकुन भय चित कीजियें जीतौं सब संग्राम॥ ४८॥ हमही लगि हुरभी हरी लेत हमारो साथु॥ २ अब सुनि वीती अवधि सो तब मैं कीनो आथु॥ ४९॥ पिरि उत्तर लाग्यो चरण सुनि सांई सति भाइ॥ दसौं नाम अपने कहौ तो मानन पति आइ॥ ५०॥ अर्जुन उवाच॥ जन्मो कोहर कृष्ण तन अर्जुन पायो नाम॥ सित वाहन अरु २ फालगुन कहत जिस्नु उर जाम॥ ५१॥ विजय किरीटी २ नाम भो और विभत्सुहि जानि॥ सब्य सांची अरु धनंजय ये दश नाम वखानि॥ ५२॥ चौपाई॥ भीम सेन सब कीचक मारे॥ लखि अपराधी ते संघारे॥ मार्यो मत्स्य दु र्द गहि लायो॥ तेरे गृह हम बहु सुख पायो॥ तेरें आम विपति हम टारी॥ बरस दिवस की अवधि निवारी॥ द्वा दश बरसें वनमें रहे॥ तुम छाया में अति सुख लहे॥ ५३ उत्तर उवाच॥ हलकी भारी जो हम कही॥ समरथ आपनु सो सब सही॥ जो काहू हमतें भो अपराधु॥ सो सब छमियो आपनु साधु॥ ५५॥ दोहा॥ बीर धनंजय आध करि चल्यो सबल रथ हांकि॥ अति बल परे तुरंग तब श्रमित रहे तहं थांकि॥ ५६॥ तेज रह्यो गंधर्व तब पिरि बल भरे तुरंग॥ कही द्रोण गुरु पार्थ सों कौन करै रण रंग॥ ५७॥ द्रोण उवाच॥ सवैया॥ आयो धनु हरथी र वली सु कही रण सन्मुख को अब रैहै॥ जइ जुसो

गत सूर नहीं फिरि हेरत॥तेरा॥भूमि थिरे नहिं घेरत॥३६॥सवैया॥घोर घने घन से घुमंडे उमंडे दल दीरघ दीसन लागे॥चामर से धुर वाधर ध्वार धुजा चल दामिनि की दुति जागे॥बुंदनि से वरसें सर जाल सुवीर सवै रस वीर सों पागे॥पौन ज्यों पत्थर उडाय दये भह राय के नीरद से भट भागे॥६९॥अक्षय तूनते एक काढे सर देखत ही लखिये करपै सो॥आवत ही मृग जूथ नि ऊपर कोपि उठो सुत के हरि कैसो॥सेही करे भट वाधि सवै तिन और कियो वर विक्रम ऐसो॥काटि दये ध्वज वेर खचोर विछाइ दयो कदली वन जैसो॥७०॥भुजंग प्रयात छंद॥जवे पार्थ के क्रोध सों वान छूटे॥किते सैन के जुद्ध के सीस टूटे॥गये भागि के एक पीछे न चाहें॥कहै एक ते जानु जे प्रान वाहैं॥७१॥महा क्रोध कैके घने वाण साधे॥ससोके किते वीरके जूथ वांधे॥छुटो मोहिनी वाण सो सर्व मोहैं॥कहां लों वखानों नमोहैं सु कोहै॥७२॥चौपाई॥मोहि रहो दल संभ्रम छाइ॥स्वान मांहि भीषम राइ॥उत्तर पठयो तवे प्रचारि॥पट भूषण सब लाउ उतारि॥७३॥गीतिका छंद॥सीस भूषण सैन के नृप आदि दे सब के हरे॥आनि के तिहि वार उत्तर पार्थके आगे धरे॥जागि के कुरु राज लज्जित वाण धनु कर गहि लियो॥धाय के भीषम वरजि राख्यो प्रगट तासों यों कियो॥७४॥ए-क पार्थ अनेक जानो जुद्ध जीति नहीं सको॥लाज है हे वीर भागत चित्तमें यह नातको॥विकल है किल खात विष वेग कछु नहिं मुख ते कहै॥व्याल ज्यों लै स्वास दीरघ वचन घनसे उर सहै॥७५॥दोहा॥

भीषम आयसु मानिके दललै चल्यो अवास॥ धाव-
न धाइ गयो तवै नृप विराट के पास॥७६॥ दूत उ-
वाच॥ जीती उत्तर अरिचमू कौरव गये पराइ॥ सुत
सपूत कीनी विजय भाग तिहारे राइ॥७७॥ चौपा-
ई॥ भूपति खेलत पांसे सारि॥ संग लिये जेऋषि र
सुख कारि॥ हरख्यो सुत की कीरति गावे॥ सब जन म-
न आनंद बढ़ावे॥७८॥ जेऋषि उवाच॥ दोहा॥ विजे
व्रिहंनल जिहि कटक सो कत जीत्यो जाइ॥ जुद्ध जु-
रै संग्राम थल जम हू देइ भगाइ॥ चौपाई॥ इतनी र
सुनत भूप पर जरयो॥ राते दृग करि वहु रिस भरयो॥
तत छिन नहिं नर नाथ विराट॥ पांसे जे ऋषि हये
लिलाट॥८०॥ छूट्यो रुधिर द्रौपदी धाई॥ अंजलि में
तिनि लीनो जाई॥ निरखि भूप उर चिंता मानी॥ कौ
न कहे यह भेद सुजानी॥८१॥ सुजानी उवाच॥ भूत-
ल रुधिर परे जो एह॥ द्वादश वरष न वरषे मेह॥ यों-
कहिके भूपति समझायो॥ भीम सेन के उर दुख आ-
यो॥८२॥ दोहा॥ क्रोध भयो लखि भीम उर धर्म पु-
त्र दे सैन॥ वर ज्यो के दरिछुधित ज्यों जुझ कछू य-
ह सैन॥८३॥ दोधक छंद॥ उत्तर गेह तवही चलि आयो॥
भूपति को यह वैन सुनायो॥ आजु व्रिहंनल ही दल
जीत्यो॥ कौरव को वहुधा बल रीत्यो॥८४॥ सूर भगाइ र
दये सवरे यों॥ पौन विड़ारत मेघ घने ज्यों॥ मौन व्है भू-
पति काम सिधायो॥ उत्तर भीतर बोलि पठायो॥८५॥
जुद्ध कथा सवरी सुनि लीनी॥ सारथि की सब जानि प्र-
वीनी॥ अर्जुन दै जिहि कौरव मारे॥ दीसइ ते द्विज र

ठाम निवारि॥८६॥दोहा॥धर्म पुत्र नर नाह सों अर्जु-
न बोल्यो बैन॥जाने हम सब कौर वनि अब कछु
चिंता है न॥८७॥तेरह वरष दौस दस बीत गये कु-
हि ठाम॥अब बैठो सिर छत्र धरि गुप्त कौरो कत ना-
म॥८८॥सवैया॥पांडु के त्रास अवास तजे बन बार २
जे दुःख सो धनासाथी॥भूषन प्यास उदास महा गति
जोग के जो गिनि की अब राखी॥नेकहु सोच सको-
च करो नहि कानि सबै कुरु नंदन वाखी॥आयसु
दीजिये कोपि मही पति लें हि भुजा बल सों भुव आ-
धी॥८९॥दोहा॥प्रात होत सिर छत्र धरि धर्म पुत्र सु-
ख पाइ॥दान दये कवि छत्र कहि छिप्रहि विप्र बु-
लाइ॥९०॥बंधव चारौं जोरि कर ठाढे भये सुजान॥का-
रण सब ही काज के कीजे काहि समान॥९१॥नाहि-
न वाहन उपन ह्यौ उत्तर सहित विराट॥नृपति युधि-
ष्ठिर चरण पर राख्यो आनि लिलाट॥९२॥राजा विरा-
ट उवाच॥सोरठा॥ढिठय भई जो होय सो छमिय क-
रिके कृपा॥भूप बड़े जे होय चूक न मानत जनन की॥
९३॥धोखें तुम पै सेवकाई॥सो सब चूक कही नहिं
जाई॥ओछी पूरी मन नहि धरिये॥ईश अनुग्रह ह-
म पर करिये॥९४॥राजा युधिष्ठिर उवाच॥दोहा॥तुम
से तुम हिं न दूसरो जग मंडल में आन॥विपति हमा-
री सब हरी राखे पुत्र समान॥९५॥चौपाई॥तुम पट
तर को दीजे आन॥सुर नरन हीं अपने जान॥तुम
हम को सब कीनी भली॥तव कीरति सब भूतल च-
ली॥९६॥नित २ नेह दीसि हैं नये॥अब तुम भुजा

हमारी भये ॥ जीति समर सुरभी जे आनी ॥ जितनी ज्
जाकी जानी ॥ ९७ ॥ ते सब जाकी ताको दीनी ॥ सबकी
बिदा मही पति कीनी ॥ दुर जोधन संदेस पठायो ॥ भू-
प युधिष्ठिर पै चलि आयो ॥ ९८ ॥ दोहा ॥ प्रगटे भीतर
अवधि तुम फेरि करो वन वास ॥ मिति सो पूरण ॥ की-
जिये तब तुम करो प्रकास ॥ ९९ ॥ कहि सब विधि मत्त
मास की सम आयो सो दूत ॥ सभ दिसाही बैठो तहां
ज्यों सुर पुर पुर हूत ॥ १०० ॥ इति श्री महा भारत पुराणे
विजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र विर चितायां अर्जुन वि-
जय वर्णनो नाम चतु विंशो ऽध्यायः ॥ २४ ॥ दोहा ॥ उत्तर
सों कीनो मतो नृप विराट तिहि बार ॥ दुहि ता दीजे अ-
र्जुनहि करि विवाह शुभ चार ॥ १ ॥ दोधक छंद ॥ अर्जु-
न ताको नृत्य सिखायो ॥ दोलनि सो गुण तासु पठा-
यो ताकहें सो दुहिता अब दीजे ॥ जियमें और विचा-
रन कीजे ॥ २ ॥ यों कहिकै तिन दूत पठायो ॥ अर्जुन को
यह बैन सुनायो ॥ तोहि सुता नृप अपनी दीनी ॥ हैस
विवाह सबै विधि कीनी ॥ ३ ॥ अर्जुन उवाच ॥ मैं दुहि-
ता सम जानि पढाई ॥ लाज तुम्हैं नहिं आवत आई ॥
मो सुत को दुहिता अब दीजे ॥ आनंद सों सब कारज
कीजे ॥ भूपति यों सुनि कै सुख पायो ॥ बूझि महूरत
मंगल गायो ॥ गावत आनंद सों नर नारी ॥ भूप जुधि-
ष्ठिर कों सुख भारी ॥ ५ ॥ दोहा ॥ दूत द्वारिका नगर को
पठयो बहु सुख पाइ ॥ वारन लागी वाटमें कही कास
सो जाइ ॥ दूत उवाच ॥ दंडक छंद ॥ दीननके नेह सो
नेह डोलत हौं गहे गहे द्रौपदी की लाज वहे ऐसी ए

कौन बातहौ॥तात मात पास प्रहलादहू निरास रहे २
कौन होती तेरी आस त्रास कैसे सहतो॥ओक छांड़ि
आपनो सु लोक कियो लोक लोक कौन भांति थिर थो-
क ध्रुव लोक लहतौ॥त्रिभुवन राय जोपै होतेन सहाय
आपु कैसें कै धौं मेरो काज और लौं निबहतौ॥७॥२
दोहा॥करि आये हो करतहौ करियो सदां सहाइ॥स-
हित मातु अभि मन्यु लै आपु पहूंच्यो आइ॥८॥
चले हास भगिनी सहित लै अभि मन्यु हि साथ॥च
ले [illegible] धर्म सुवन नर नाथ॥९॥मिलि
कै सारंग पानि कौ लै आये निजगेह॥अस्तुति वंदन
जुत करी मन वच क्रम करि नेह॥१०॥राजा युधिष्ठि-
र उवाच॥छंद॥श्री जादु नंदन मुनि जन वंदन॥का
ल्मष हर सब दुष्ट निकंदन॥जग तारण वक वदन २
विदारन॥दुख टारन राजा राज उधारन॥११॥जग पा-
वन संतन मन भावन॥ब्रज छावन गिर वर नख ला-
वन॥[illegible] भव भय भंजन॥दनुजन मर्द-
न भव धनु गंजन॥१२॥कंस विना प्रान प्रभु गरु-
डासन॥जदु वंशी अव तंस प्रकाशन॥असुर निवा-
रण [illegible] कुंज विहारन गनिका तारन
॥१३॥जग धर नग धर पीतां वर धर॥हरि दामो द-
र [illegible] सोदर॥सिंधु सुता वर श्री राधा वर॥न-
र कानि हर वर रदन धरनि धर॥१४॥जनक सुता
भूषण भुव भूषन॥सुर रिपु दूषण खल दल पूष-
न॥भक्तनि हित कारी हरि गिरिधारी॥भक्ति २
विहारी सब भय हारी॥१५॥दोहा॥करि अस्तुति २

श्री हस्त की भूपति पुनि निर आइ॥नगर कांपिला द्रुपद गेह दीनो दूत पठाइ॥१६॥चौपाई॥सुनत संदेसौ फूल्यौ हियो॥भूपति द्रुपद पयानो कियो॥गज रथ वाहन तुरी तुषार॥सब दल जुत साहन भंडार॥१७॥पंचाली सुत पांचौ साथ॥पहुंचे पुर विराट नर नाथ॥विदुर गेह तें कुंती आई॥मिली सुतनि अति आनंद छाई॥१८॥द्रुपद सुतातांके पद वंदे॥सब विधि कै सब जन आनंदे॥वन तें चली धरक्का आयो॥माया वी माया मग छायो॥१९॥नगर राज गिरि तें चलि आयो॥दुरा संध भूपति मन भायो॥धर्म पुत्र सुर राज समान॥विवुध अनुज सब वुद्धि निधान॥२०॥दोहा॥शुभ घटि का शुभ लग्न गनि शुभ वासर हि सुधाइ॥रच्यो व्याह अभिमन्यु कों मंगल चार २ कराइ॥२१॥दोऊ कुल की रीति ज्यौं करि विवाह सुख दानि॥वाजी गज रथ छत्र कहि दीनो आनंद मानि॥२२॥सुंदरी छंद॥भाट भले विरदावलि गावत॥सिंधुर वाजि निके गन पावत॥नृत्य गुनी जन नर्तन साजत॥ताल पखावज साजत वाजत॥२३॥को वरनै सब आनंद संजुत॥वास रहूं निशि कौतुक अद्भुत॥भांवरि पारत वेद निउच्चरि॥द्विकुल की ऋषि रीति तवै करि॥२४॥दोहा॥२ दै सौ वौ समदी सुता हरषे भूप विराट॥धर्म पुत्र सुख पाय कै लसत अनंदित पाट॥२५॥युधिष्ठिर उवाच सोरठा॥सुनि अर्जुन गुण ग्राम वेगि वुलावो मय सुतहि॥धवल संवारहु धाम रचि रचि रचि रचि जाल मणि॥२६॥त्रोटक छंद॥तव पार्थ मया सुर वोलि लयो॥वहु भांति न कै सुख सद्म ठयो॥प्रति धा मनि
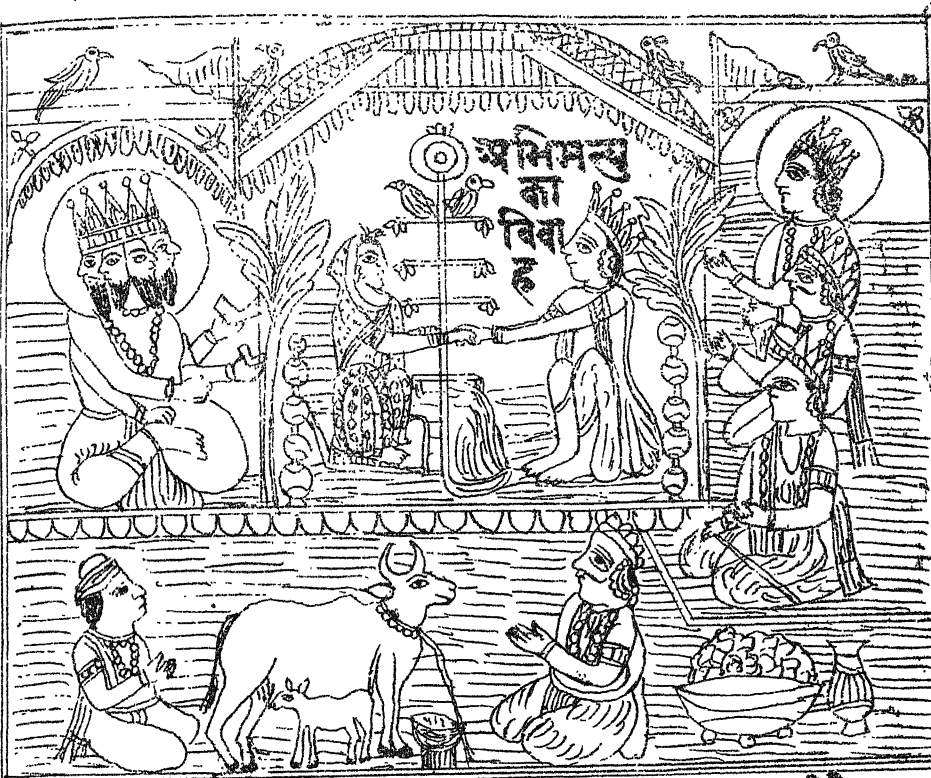
चित्र विचित्र कसौ॥रंग रंग नि ही गुरु वान दसौ॥अति हीसत सुंदर सेत अटा॥इक नील वने जनु मेघ रघटा॥उपमा कवि कौन बखानि कहैं॥निरखैं नर कौतुक भूलि रहैं॥२८॥इक अद्भुत वाहिर सोभ सने॥नृप के रहि वे कहं धाम वने॥तहं वैठत भूपति नित्य सभा॥अमरा वति मोहति देखि प्रभा॥२९॥पुर अंतर धाम सु शोभ गहैं॥रनि वास जहां सब वाम रहैं॥हय हीसत वारन गाजत हैं॥निशि वासर दुंदुभि वाजत हैं॥३०॥भुव भूप सभा सुख साजत हैं॥द्विज वृंद तहां वहु राजत हैं॥वहु भीर तहां दर वार रहैं॥कहि को कवि ताहि बखानि कहैं॥३१॥इति श्री महा भारत पुराणे विजय मुक्ता वल्यां कविर

छत्र विर चितायां अभि मन्यु विवा-

इति दशमो नाम पंच विंशो ऽध्यायः २५

भुजंग प्रयात छंद ।। सोम वंस धर्म पुत्र शत्रु सौ सभा स्त्रै ।। चारि बंधु देव से विलोकि दुःख मानसै ।। अंजली-न जोरि जोरि कृष्ण सौं विनै करी ।। सिंधु के जहां तहां विपत्ति जीव की हरी ।। अई देश पाइये विचार आपसौ करो ।। ज्यों हरे अशेष शोक त्यों कलेश ये हरो ।। देश तें निकारि अंध पुत्र कानि ना करी ।। धाम ग्राम छीनि छीनि संपदा सबै हरी ।। १ ।। दोहा ।। करि आये हौ करत हौ सेवक सदा सहाइ ।। करी वंदना कृष्ण की धर्म सुवन भुव राइ ।। २ ।। युधिष्ठिर उवाच ।। चौपई छंद ।। कच्छप वपु धरि साइ रच्या हन ।। मत्स रूप संख्य सुर दाहन ।। वंदत मुनि जन सनक सनंदन ।। जै जै जै तुम जै जग वंदन ।। ४ ।। सूकर रूप रदन धरनी धर ।। वर हिरना क्ष पतित प्राननि हर ।। भूतल खल दल दुष्ट निकंदन ।। जै जै जै तुम जै जग वंदन ।। ५ ।। नर हरि वपु धरि भक्त सवारण ।। हिरना कुश नख उदर विदारण ।। कोटिक कष्ट हरण जग फंदन ।। जै जै जै तुम जै जग वंदन ।। ६ ।। छल बल बलि पाताल पठावन ।। बावन वपु धरि भूतल आवन ।। काटत सब माया दुख द्वंदन ।। जै जै जै तुम जै जग वंदन ।। ७ ।। परसु पाणि छत्रि य मद नाशन ।। रघु कुल कमल दिनेश प्रकाशन ।। राम चंद्र दशरथ नृप नंदन ।। जै जै जै तुम जै जग वंदन ।। ८ ।। कंस कठोर असुर भय कारी ।। केशी मर्दन अजिर विहारी ।। पीत वसन तन चर्चित चंदन ।। जै जै जै तुम जै जग वंदन ।। बौध सरूप पहुमि पर धारि हौ ।। कल की ह्वै दु

छूनि संधारि हो॥वरनत विदित छत्र वहु वंदन॥जै जैजै तुम जै जग वंदन॥१०॥दोहा॥विनय मानिकै करिकृपा दुरजोधन पैजाउ॥समझाओ वहु विधिनकै वंचै गोत कोघाउ॥११॥चौपाई॥विहंसि व्यास तवही उठिधाये॥नगर हस्तिना पुर चलि आये॥सुनि कुरु नंदन अनुज पठाये॥सभा मध्य श्री व्यासहि लाये॥१२॥श्री व्यास उवाच॥धर्म पुत्र तुम पास पठाये॥गोत विरोध हि मेटन आये॥भूपति जगमें यह जस लीजै॥आधो देश वांटि कै दीजै॥१३॥अपने कुलहि कलंक न लावो॥कालहु गोतको भूप वचावो॥दुरजोधन वोल्यो अकुलाई॥१ कैसें सको कलेश वचाई॥देश वांटि जो उनको देहों॥जोगी है कपाल कर लेहों॥भूमि वांटि कल मो पै पावें॥जावे नभ भूतल फिरि आवें॥श्री व्यास उवाच॥और भूमि भूपति जिनि देहु॥पंच ग्राम दीजे करि नेहु॥तिल पथ नाग इंद्र पथ लीजे॥अरु सुनि पथ पानी पथ दीजे॥दुरजोधन उवाच॥दोहा॥सुचि अग्र जितनी कढ़ै सो कवहूं नांहि देहुं॥पीछे भुव वेई लहें प्रथम जुद्ध करि लेहुं॥१७ चौपाई॥तुम हि कहत यह कैसे आवे॥जीवत मोहि को धरनी पावे॥सुनि मुनि वचन जरत है गात॥जियत सुने यह अद्भुत वात॥श्री व्यास उवाच॥सवैया॥लोकमें शोक समूह विनै अपलोक महा अपने सिर लैहो॥केलि सकेलि महा दुख में लिहो यों जस पेलि कै अपजस पैहो॥उपाय कै

आधिनलौं जियें रायस आय परे ते हिये पछितैहो॥ सुफि
परी यह कस्म कही सब आपु महा सब दैहौ जु दैहो॥१९॥
पिकै लेहु गदा कर भीम सु पार्थ धनुर्धर वाण नि
बाहै॥ बंधु समेत तहां सहदेव सुसा दर संगम को
अवगाहै॥ बैठि धुजा हनुमंत बली रण गाजि उठै र
यह तू मन चाहै॥ ए सोइ भावतु है जिय तोहि सु र
जाने कौं तेरी कहा मन साहै॥२०॥ दोहा॥ कस्म उठे
ये वचन कहि तिनि कौं यह सम झाइ॥ भावी सो कै
से मिटै को कहि सकै वचाइ॥२१॥ नगर हस्तिना
पुर तवै कुंती पहुंची आइ॥ सभा चारु मैं कस्म र
कहे सकल समुझाइ॥२२॥ दुर्योधन मति परि
हरी देतन पांचो गाम॥ दैवै की कहि का चली आ
वग सुनत नहिं नाम॥२३॥ एक वात कौं भय भ
योक री हि वादयो गर्व॥ मारि लेहुं यह कहतु है

जीतों भारत सर्व॥२४॥ जाहु आप तुम कर्ण पै लाउ आपने गेह॥ कुशल होइ तुम सुत नि कों बाढ़े अद्भु त नेह॥२५॥ कर्ण पास कुंती गई उनि उठि बंदे पांइ॥ करि आदर आसन दयौ बैठे सब सुख पाइ॥ कुंती उवाच॥ चौपाई॥ जेठो सुत तू तेरौ राज॥ लेहु सकल ग्रह चलिये आज॥ हंस्यौ कर्ण माता मुख चाहि॥ यह सब बात अबू कित आहि॥२७॥ तब तुम राज हमारो टारौ॥ घालि मंजुषा जलमैं डारौ॥ तन पोष्यौ दुरजोधन छांह॥ अब कत जात नर कन मांह॥२८॥ कुंती उवाच॥ जौन चलौ सुत करिकैं नेहु॥ एक बात तौ मांगे देहु॥ मो पुत्रन कौ करिन प्रहार॥ यह सब करौ दया कौ सार॥ ॥२९॥ सुनि सुत मेरौ वचन विलास॥ पांच बाण जो तेरे पास॥ जननी कौ करिकैं हित देहु॥ यामें जगत विदित जसु लेहु॥३०॥ कर्ण उवाच॥ चारि पुत्र तुव हित परिहरौं॥ एक पार्थ मोहीं रण करौं॥ औरनि कौ नहि घालौं घाउ॥ अब माता अपने ग्रह जाहु॥३१॥ दोहा॥ दीने पांचौं बाण कर कुंती कौ तिहि काल॥ विदा करी पग बंदि कैं तबै कर्ण भुव पाल॥३२॥ चौपाई॥ यह सुनि कुंती आई तहां॥ त्रिभुवन नाथ बसत है जहां॥ कही कर्ण सौं वरणि सुनाई॥ इहि विधि कै सब निशा सिराई॥ दोहा॥ प्रात होत श्रीकृस्न जी दुरजोधन के पास गये फेरि हित संधि कौ छत्र सुबुद्धि अवास॥३ ३॥ श्रीकृस्न उवाच॥ काह्यौ हमारो कीजिये पंच

ग्राम किन लेहु ॥ बंधु एक सौं पांच सौं निस दिन बढ़े स-
नेहु ॥ ३५ ॥ दुर्जोधन उवाच ॥ नित उठि उसले साल हीं
कत हि सला वत आनि ॥ कों अपांडव भूमि सब कौं-
न कुल की कानि ॥ ३६ ॥ श्रीदास उवाच ॥ सवैया ॥ को-
पि कोपि भीम भुजा रोपि रोपि रण मांह ओपि ओपि
मुख गदा लीने गल गाजि है ॥ रोस हिय आनि आनि
क्रोध धनु तानि तानि लै कै पार्थ पानि धनु बाण स-
धो साधि है ॥ अश्विनी कुमार के कुमार निकी हांक
सुनें धीरन धौंरा गे बल पौरुष सोभा जिहै ॥ गर्व हि
आरूढ मंत्र मूढ तून जानै कछू चेति हैं तू मूढ जब
आय मूढ़ वाजि है ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ यह सुनि सकुनि सों-
प कै कही नृपति सों जाइ ॥ काहा कुनिया की कौं बां-
धि लेहु सुख पाइ ॥ ३८ ॥ सब मिलि कै चाहत कियो ब
नें नहीं कछु बात ॥ किल रवे भीषम विदुर तब विव्हल
ह्वै गयो गात ॥ ३९ ॥ चौपाई ॥ भीषम विदुर विलोकत
जानि ॥ वदन पसारो सारंग पानि ॥ मुख भीतर देख्यो ब्र-
ह्मंड ॥ संभ्रम पायो चित्त अखंड ॥ ४० ॥ छप्पै ॥ देख्यो ग
गन सु सूर्य्य चंद तारा गन दरवे ॥ देखी पहुमि सु नीर
भूरि भूधर सु विशेखे ॥ देखे सरि ता सलिल सिंधु सर
वर जल संजुत ॥ देखे तरु वर विपिन सघन द्रुम उप व-
न अद्भुत ॥ मृग राज मत्त मातंग लखि अव लोके रु-
षि राज गन ॥ भ्रम भूलि विदुर भीषम रहे सिथिल वि
काल ह्वै सकल तन ॥ ४१ ॥ भीषम उवाच ॥ खल दुर जो-
धन मर्म न जानत ॥ सिख त्रिभुवन पति कीनहिं मा-
नत ॥ भूल्यो मूरख नृप ता गर्व्व ॥ कुल को नाम तजे ति-

न सर्व्वे॥५२॥द्वै हैं सो हुरसी करतार॥भीषम कहत वा-
रही वार॥चले व्यास नृप को सम भाइ॥पहुंचे धर्म पु-
त्र पै जाइ॥५३॥श्रीव्यास उवाच॥स्वप्नम महि तुम कों
नहिं देत॥उद्यम लीनो भारत हेत॥विना जुद्ध वह का-
छून देहैं॥जो रण जीतै सो भुव लैहै॥५४॥इति श्री
महा भारत पुराणे विजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र विरचि-
ता यां श्री व्यास दुर्योधन संवादो नाम षड्विंशो ध्या-
यः २६ इति विराट पर्व्व संपूर्णम अथ उद्योग पर्व्व वर्ण-

॥नं सुंदरी छन्द॥

वैठि सभा सुत धर्म मही पति॥वोलि लए तहां व्यास
महा मति॥वंधव चारि विराजत ता थल॥कौन वखा-
नि कहै तिनि के वल॥१॥राजो वाच॥चौपाई॥व्यास
वंदे हरिसो कछु कीजे॥भूतल में वसुधा जसु लीजे-
माहि महा उर में डरु आवत॥विग्रह हौं निशि दीस
वचा वत॥२॥दोहा॥वनि आई सब के मते लीने द्रुपद
वुलाइ॥संधि काज करु राज पै दीनि तुरत पठाइ॥३॥
गये द्रुपद नर नाह तव भूपति कौरव पास॥आदर करि
आसन दयो वोल्यो वचन प्रकास॥४॥दुर जोधन उवा-
च॥गीतिका छंद॥कौन हेत महीप आये सो कहो स
मझाय कै॥पावन भये तुम दरश तें वहु सुःख दीनो
आय कै॥द्रुपद भूपति यों कह्यो जग में महा जसु ली-
जिये॥नृप जुधिष्ठिर को धरा नृप वांटि कै कछु दीजि-
ये॥५॥नेह करि कुल कलह नासौ लेहु तिन हि वुला-
यकै॥सव आपनी मरजाद सों रहि हैं सदा सुख पाय
कै॥लगी मरसी वात यह सो चित नाहिं कछु लावहीं

चाहत विन्दुरणा कौन मोपै भूमि रंचक पाव ही॥ ६॥ को-
जुधिष्ठिर भीम कोहै वचन कोटन पाव ही॥ तीनलों
हूँ वरण सुर पति आप आय वचा वही॥ द्रुपद सुनि
कै सीस ढोरो रची सोई को रहे॥ सोवचाई क्यों बचे
भुकि क्रोध सों तब यों कहै॥ ७॥ सवैया॥ लोक में आ
प कछू आप लोकन लीजेन लीजेन लीजियेजू॥ चाह
त भूमि जुधिष्ठिर सक्षम दीजिये दीजिये दीजियेजू॥
यों करि राज निकंटक आ पन कीजिये कीजिये कीजि-
येजू॥ छत्र महा हित कै तुम बैन पतीजिये पतीजि-
ये पतीजियेजू॥ ८॥ दीजिये पंच उनै अव गाम नहीं
नृपकी नृपता घटि जैहै॥ वैठि रहै तिनमें अब जाय
जुधिष्ठिर आप महा सुख पैहैं॥ जानि अजान प्रमाण
के मान कि भूमि अवे अपने वल लैहैं॥ वाण की धार
में स्यों परि वा रहि तोहि वहादु धनं जय दैहैं॥ ९॥
दोहा॥ फिरि आयो तव द्रुपद नृप नृपति जुधिष्ठिर पा-
स॥ दुरजोधन की कुमति को कीने वचन प्रकास॥ १०
द्रुपद उवाच॥ बुधि कै कै वहु चातुरी अरु कै कै उन मा
न॥ सम झायो समझै नहीं करि देखे सव स्यान॥ ११॥
ही विराट पठये तहीं नृपति तीसरी वार॥ सम झा ओ
दुरजोधनै वाचे कलह अपार॥ १२॥ चौपाई॥ नृप वि
राट वहु विधि कै कही॥ सक्षम सो कछु दीजे मही॥
वे संतुष्ट वैठि तहां रहैं॥ फेरि कछू नहिं तुम सों कहैं
१३॥ दुरजोधन उवाच॥ दोहा॥ हूँ है कै जग वावरो मो
गत धरनी आय॥ हनौं पंडु सुत छिनक में को अव
सकै बचाय॥ १४॥ हम सों रारौं हेत तुम मतिभाखो

धैवेन॥ जौलौ जिय में जीव थर कहौन तिल भरि दैन॥१५
विराट उवाच॥॥सवैया॥ आपु वरा वहु गोत को घाउ ऊते
उनि वारही वार वराई॥ दैन कहौं नहि चारिक नाम क
हा मति थों तुम को वनि आई॥ होनी जो होइ सो होइ
रहे न मिटे यह भूपति में मति पाई॥ नीकी यो ओर
बुरी वुधि को सव को करता हरता कर ताई॥१६॥ चौ
पाई॥ दुन कहि वे में कछू ना राखी॥ जो मुख आई त
सव भाषी॥ कहा कहे काहू के होई॥ होनी मेटनहार क
हि कोई॥१७॥ आये नृप विराट उठि धाम॥ किये कास
को अमित प्रणाम॥ कहे न मानतु खल कछु वात
सुनि सुनि वैन जरत हे गात॥१८॥ यह सुनि कास विद
त्तव भये॥ चलिके नगर द्वारिका गये॥ नृपति जुधिष्ठि
र मन दुचि ताई॥ वाचत सूझी नहीं लराई॥१९॥ दोहा
उतदुर जोधन अनुज युत कीनो चित्त विचार॥ भीष
म अरु आये विदुर वैठो सव परिवार॥२०॥ दुरजोध
न उवाच॥ भुजंग प्रयात छंद॥ वडौ सोच तो आपने
चित्त कीजे॥ मतो होय पूरो पिता मोहि दीजे॥ सदा पंडु
के पुत्र हें साल मेरे॥ तिन्हें नास के जत्न कीने घनेरे॥
२१॥ कहो मंत्र जो जासु के चित्त आवे॥ हित होय सो हि
तही की वतावे॥ गई तेरहौं वर्ष यो सुक्ख माहीं॥ रहें
साल जा को सु जीवे हथाहीं॥२२॥ भीषम विदुर उवा
च॥ करो मंत्र सोई तुम्हें चित्त आवे॥ हमारो कह्यो
को हिये माहि भावे॥ तजो विरनहे संग हो वात ऐसी
सवे भूतली में कही वेद जैसी॥२३॥ भीष्म उवाच॥ स
वैया॥ एक सुने नहि भाषी अनेक सु टेक सवै है कुटव

की टेकी॥ ताको भलो न भयो कबहू जिहि पैज तजी न-
हिं आपु कहे की॥ यों समझो अपने मनमें हठ मूढ़ की
नाहिन बानि भलेकी॥ छांड़ि दई कुल की करनी यह
रीति लई हठिकै अविवेकी॥ २५॥ चौपाई॥ भूअ पै
रहत नदी मैं कोई॥ अमर एक जल अप जल होई॥
हिरना कुश अरु रावण गयो॥ यह धन नहिं काहू को
भयो॥ २५॥ कत अभिलाष तासु को कीजै॥ लोक वि-
लोक अलोकन लीजै॥ हानि होइ जीते अरु हारे॥ ज-
म रहिहै नित बदन पसारे॥ २६॥ सुनत वचन नहिं
भूपहि भायो॥ तब तिन नियरो सकुनि बुलायो॥ सो-
ई कोउ मंत्र विचारो॥ मोउर भावत वचन तिहारो॥
२७॥ शकुनि उवाच॥ मेरो मतो मही पति कीजै॥ नगर
विराट वेगिले लीजै॥ जोलों उनको नही सहाउ॥ लैसब
सेना तिहि थल जाउ॥ २८॥ पांचों बंधुन मारो आज
सोकि जाय तो स्वारे काज॥ उपजत ही जो काटिये व्या-
धि॥ फिरि कत मरिये औषधि साधि॥ २९॥ दोहा॥ अं-
कुर निरखि बोरछको कपितोर तिहि काल॥ त्यों अप-
ने अरि मेटिये कुटंब सहित भुवपाल॥ ३०॥ चौपाई॥
सुनि मत मानि भूप दल साजा॥ सकल बुलाये भुवके
राजा॥ सिमटे दल बहु भीन समाय॥ छार भये सब गि-
रि बर जाय॥ ३१॥ आये सोम दत्त भुव राय॥ अरु भा
दत्त सबल दल लाय॥ तिन के दल की संख्या नाहीं॥
रथ हय हाथी गनेन जाहीं॥ ३२॥ सेना सल्य कोटि हनी
तीन॥ कोरथ बाजी गने कहीन॥ कर्ण महा बल वंत प-
ठान्यो॥ अति नित दल कालिंग तहं आन्यो॥ ३३॥

कोपि चढ्यौ रण आप सु शर्मो॥कौन गने रण अद्भुत कर्मो॥दुर जोधन द्वारा बीत आये॥आवत श्री हरि दर्शन पाये॥३४॥दुर जोधन उवाच॥करौ सहाय हमारी आ[illegible] अतिशय प्रताप॥दल सजि चल्यौ हमारे साथ॥बार बार विनैवे नर नाथ॥३५॥श्री हास उवाच॥दोहा॥मैं तो सब आयुध तजे अस्त्र गहौं नहि हाथ॥[illegible] दयौ दल जुत ताके साथ॥३६॥ २ जोदो दल साजिके चल्यौ सुभट चमू चतुरंग॥अस्त्र शस्त्र तनु त्रान कसि कसे चर्म सब अंग॥३७॥तीन छोहनी शकुनि दल नीरद घोर समान॥चपला चंचल चल धुजा धनु षहि धनुष वखान॥३८॥दल [illegible] सिमिटि चल्यौ कुरखेत॥महारथी [illegible] रथी दल कतहिं रण हेत॥३९॥सवैया॥कोपि चल्यौ दुर जोधन को दल कोपि चले सब सूर वलीहैं कुंजर पुंजनि पायक जाल सु भार परै भुव भूरि हलीहैं॥[illegible] दिवा कर लोपि गई सब २ [illegible] उठिकै धर धूरि अकाश चलीहैं॥४०॥सुंदरी छंद॥कुंजर पुंजनि [illegible]॥लाल धुजा तिन पै मन मोहत॥२ [illegible] गाजत॥ज्यौं तड़िता जुत वारिद राजत॥४१॥हैं यह चंचल के खग खंजन॥पौन [illegible]॥शंख धुनै बहु दुंदुभि वाजत॥[illegible] बलि साजत॥४२॥मधुभार छंद॥[illegible] भये सब धूरि॥गये मिटि नीर [illegible] कुरु खेत॥[illegible] रण हेत॥पखो दल

ति रथी हूव सुभट सिरमौर ॥५५॥ अथ छोहनी संख्या दोहा॥एका द्विरद रथ एकहै तीन अश्व असवार॥
जमले दश संख्या कहि पायक पांच विचार॥५६॥हाथी १ रथ १ असवार ३ पयादे ५ जमले १०॥दोहा॥तीन पंक्ति को होय इक सेना मुख तानाम॥अपने अपने बुद्धि बल समझि लेय गुणग्राम॥५७॥हाथी ३ रथ ३ असवार ९ पयादे १५ जमले ३०॥इति सेना मुखता संख्या॥तातें तिगुनी गुल्म इक जानि जानि उरलेहु॥ताकी संख्या छत्र कवि बुधि बल सब करि लेहु॥५८॥हाथी ९ रथ ९ असवार २७ पयादे ४५॥
इति गुल्म संख्या॥दोहा॥फेरि गुल्म तिगुनी करौ तौ वाहनी संख्या होय॥छत्र कहौ सो वाहिनी कहै जगत सब लोय॥५९॥हथी २७ रथ २७ असवार ८१ पयादे १३५॥इति वाहिनी संख्या॥दोहा॥कीजै तिगुनी वाहिनी ताहि पृतना जानि॥इभ हाथी पायक रथी १ कहि कवि छत्र बखानि॥६०॥हाथी ८१ रथ ८१ असवार २४३ पयादे ४०५ इति पृतना संख्या॥ताहि पृतना जोरि कै एक चमू तब होय॥ताहि अपने चित्त में समझि लेहु सब कोय॥६१॥हथी २४३ रथ २४३ असवार ७२९ पयादे १२१५ इति चमू संख्या॥दोहा॥एक चमू को जोरि कै तिगुनी करौ जो कोइ॥छत्र सकल समझौ अबै अनी किनी सो होइ॥६२॥हाथी ७२९ रथ ७२९ असवार २१८७ पयादे ३६४५ इति अनी १ किनी संख्या॥दोहा॥अनी किनी सेना सकल तिगुनी कीजै ताहि॥सोई संख्या छत्र कवि अनी किनी दश

ग्याहि ॥६३॥ हाथी २१८७ रथ २१८७ असवार ६५६१ पया-
दे १०९३५ इति दश अनी किनी संख्या ॥ दोहा ॥ दश
अनी किनी दश गुनी साजत पंडित जानि ॥ ताही सों
इक छोहनी कहि कविछत्र बखानि ॥६४॥ हाथी २१८७०
रथ २१८७० असवार ६५६१० पयादे १०९३५० ॥ इति
छोहनी संख्या ॥ दोहा ॥ कुरु अठारह छोहनी कौरव
कहे बखान ॥ छत्र सकल संख्या कही जानि लेहु स-
व ज्ञान ॥६५॥ हाथी ३९३६६० रथ ३९३६६० असवार
११८०९८० पयादे १९६८३०० इति अष्टादश छोहनी
संख्या ॥ दोहा ॥ [illegible] एकादश छोहनी कुरु नंदन नर २
नाथ ॥ भीषम [illegible] नृप द्रोण करण सब सा-
थ ॥६६॥ हाथी २४०५७० रथ २४०५७० असवार १
७२१७१० पयादे १२०२८५० ॥ इति कौरव दलकी सं-
ख्या छोहनी ११ ॥ दोहा ॥ [illegible] छोहनी पंडु [illegible]
सेन समाज ॥ द्रुपद विराट नरेश तहं शुभ कारी [illegible]
राज ॥६७॥ हाथी १५३०९० रथ १५३०९० असवार ॥
४५९२७० पयादे ७६५४५० ॥ ६७ ॥ इति श्रीमहा
भारत पुराणे [illegible] विरचि-
तायां राजा दुर्योधन युधिष्ठिर [illegible]
सैन्य [illegible] नाम सप्तविंशोऽध्यायः
२७ ॥ दोहा ॥ कार्तिक [illegible] पक्ष की त्रयो दशी शुभ
जानि ॥ सन्मुख दल दोऊ जुरे फिरि तहां कियो [illegible]
न ॥१॥ सुंदरी छंद ॥ भानु गयो छिपि [illegible]
अपने ठौर विराजत हैं सब ॥ वीर [illegible]
[illegible] बीर लरे [illegible] मिलन को जहं ॥२॥ है [illegible]

विलोकि वो कुटुंब बंधु पुत्र मित्र को गनै॥ अलोक होइ सोक लोक जुद्ध में तिन्हे हनै॥१५॥ दोधक छंद॥ इन भीषम कोटिक दुख हरे॥ बहु भांति निको प्रति पाल करे॥ तिनिको किहि भांति हथ्यार सजौं॥ अप कीरति सों बहु चित्त लजौं॥ यह काज नहीं हमसे सरिहै॥ नहिं सन्मुख बान धर्यो परिहै॥ जब अर्जुन ये बहु बैन स[ने]॥ अति आतुर है धनु बाण तजे॥१६॥ श्री कृस्न उवाच॥ कहि कौं यह कायर बुद्धि भई॥ [illegible] अजहू न गई॥ अब क्षत्रिय धर्म्म बिचारि हिये॥ नहि पाप [illegible] अब जुद्ध किये॥१७॥ दोहा॥ समुझाये बहु ज्ञान [illegible] [illegible] है [illegible] कृस्न [illegible] ॥१८॥ [illegible] तेज धरा जल पौन अकाश मिलैसो [illegible] रच्यो है॥ [illegible] [illegible] [illegible] है॥ ए करहै जग में जस औ [illegible] काल बली पैन कोउ बच्यो है॥ बंधु कुटुंब त्रिया सुत हेतहि लीन भयो बहु [illegible] है॥१९॥ दोहा॥ बदन [illegible] सो कृस्न तब पार्थ लख्यौ अकुलाइ॥ देख्यो सब [illegible] अद्भुत कह्यो न जाइ॥२०॥ श्री कृस्न उवाच॥ चौपाई॥ कालरू[प] सुनत संशय करै॥ यह दल सब या काल [illegible] या- में सब बचिहें दस जानें॥ और सकल [illegible] जानें॥ २१॥ मैं यह सब भारत करि राख्यो॥ यह तो [illegible] स हित भाख्यो॥ तेरो कस्यो कहा अब होई॥ कौन बा- दा ताको अब कोई॥२२॥ अर्जुन को सुनि संसौ ग- यो॥ लयो धनुष हरि आयसु दयो॥ संभ्रम कोकल

दोनों सेनाओंके मध्यमें रथ स्थापित करके श्री कृष्ण अर्जुन को गीता का उपदेश कर रहे हैं

कोपि कोपि जुद्ध बारा कोटि कोटि जो ध्वैर लोक पाल जो
जुरे तऊ न पेज हारि हैं। आजु ते कुलेवा सूर नित्य
नित्य मारि हैं ॥५॥ पार्थ सौं जुरे कराल जुद्ध भौ महा घ-
नौं। लंक नाथ सौं मनु जुद्ध राम चंद है मनों। गंग पुत्र
अस्त्र सस्त्र बारा वृष्टि यों करै। स्वारथी रथी समेत ठौ
म ठौम संघरै ॥६॥ दोहा। उत्तर कह्यौ पृथ मही कवि
वहु ध्या संग्राम ॥ एक अयुत भीषम हनै गनैन परै
नाम ॥७॥ जुरे दोऊ सेन के रथी दुरद रसा मांझ ॥ भी-
षम पूजयो आपु व्रत वहुरि व्है गई सांझ ॥८॥ रैनि
भये सब सूरिमा कियेन सर संथान ॥ सजे सकल भ-
ट सेन के प्रात उगत ही भान ॥९॥ मारु मारु दुहु दल
भई उठे वीर रण गाजि ॥ पायक रथी मतंग गन अ-
रु जुरे वहु वाजि ॥१०॥ मंडली क कीनो धनुष सर २
छायो आकाश ॥ व्रत पाल्यो दश सहस हति करि सेना
उरत्रास ॥११॥ चौपाई ॥ दिन प्रति दश दश सहस संघारे
रथी अति रथी गज रथ मारे ॥ मारग कास्मा षष्ठी भई ॥
पंडु पुत्र उर चिंता ठई ॥१२॥ भीषम अगनित सूर सं-
हारे ॥ पंडु पुत्र सव ही हिय हारे ॥ रह्यो जुद्ध तहं निशि
व्है गई ॥ पंडु सुतनि के उर मति भई ॥१३॥ दोहा ॥ अ-
र्द्ध रैनि जवही गई आये भीषम पास ॥ वहु विधि कै २
अस्तुति करी कीने वचन प्रकास ॥१४॥ दोधक छंद
आजु पिता कछु सो मति दीजै ॥ जा विधि जीति सवै
दल लीजै ॥ ज्यों कुरु नंदन को दल छीजै ॥ आप सु
देहु सुतो प्रव कीजै ॥१५॥ भीष्म उवाच ॥ छप्पै ॥ जौ
लगि मो घट प्राण काहो को सर वर पावै ॥ चिरंजीव

कुरु राज ताहि पद ओछो आवै॥विजय करै को सर २
मोहि देखत रण माही जोचितवै वृत राज ताहि तो अ-
चरज माही॥सुनि धर्म पुत्र सुख सीव यह सत्य मा
नि चितलीजिये॥नर नाह द्रुपद सुत अग्र करि वि-
जय सकल रण की जिये॥१८॥गीतिका छंद॥मोहि
पितु वरदान दीनो परम उर सुखपायवो॥विना वो
हि काल नियरो क्यों सकै गो आयवो॥मारि हों सुख
मृत्यु लहि हों ना पराजय देखिहों॥वाण जाको साधि
हों गत प्राण ताको लेखि हों॥मोहि कोरण जीति है वि
धि रुद्र सुर पति रण करै॥जाहि ताके करों प्राणनि
बाण सिर पाल ना परै॥वृद्ध शिशु अरु नारि को छि-
न को धनुष कर नागहीं॥भ यो देखिन ताहि मारों
सत्य तोसों हों कहीं॥१८॥आपनी जय भूप चाहो तौ
कहो सो कीजिये॥द्रुपद नृपको सुत शिखंडी ताहि
आगे दीजिये॥नारितें वह पुरुष भो ताकी कथा सुनि
लीजिये॥तुम जोग शिक्षा हों कहो नर नाथ ताहि प-
ली जिये॥१९॥चौपाई॥कासि राज की सुता दुलारी॥का
री शंभु सेवा तिहि भारी॥तियतें पुरुष भई वरपाई
लीनो जन्म द्रुपद गृह आई॥२०॥आगे दै उप देशौ तो-
हि॥पाण निपार्थ वेधिहे मोहि॥भीषम जब इहि वि
धि के कह्यो॥पग वंदे नहि संशय रह्यो॥२१॥अपने
ठाम धर्म सुत आये॥सत्य वचन भीषम के पाए॥
सुनःसुते भिनसारो भयो॥उद्यम महा जुद्ध को लयो॥
२२॥दोहा॥सुभट शिखंडी अग्र करि पंडु पुत्र बलि
बंड॥दाय लयो सब ताल नभ संग्रह कियो अखंड

उ॥२३॥मारु मारु है दल रटै होत अमित गलगाज॥२
उठत अगिन असि वर वजत जूझत सुभट समाज॥२४
बीती मारग सप्तमी समर होत अति काल॥रुधिर स-
लिल पूरी यहु मिटी सै ठाम कराल॥२६॥जुद्ध होत
दिन नौ गये को कवि कहै वखानि॥दशमै दिवस क-
राल रण परौ भटनि सौं आनि॥२७॥बीतौ असुर
अलाप सौं अभि मन्यु हि संग्राम॥रह्यौ विकर्ण सा-
सौ कह्यौ जाहि व्यूह को नाम॥२८॥भीम सेन सौं तब
जुरे दूसा सन वल वान॥चित्र सेन सह देव सौं कीनौ
कोपि कृपान॥२९॥नकुल सुशर्मा दोण हौं द्रुपद राय
सौं जुद्ध॥धृष्ट द्युमन गुरु द्रोण सुत समर कह्यौ है
क्रुद्ध॥३०॥जुह्यौ जुद्ध भूरि श्रवा द्रुपद सुता सुत संग
राउ विराट कलिंग सौं कोपि कियौ रण रंग॥३१॥२
कृत वर्मा अरु पार्थ सौं वाजी अस वर मार॥पायक
हय स्वारथि रथी भये सकल संघार॥३२॥भूप जुधिष्ठिर
सौं कह्यौ संगम शल्य अपार॥हते सुभट रण भूमि २
मैं जुरे एक ही वार॥३३॥सोरठा॥कोपि भीम तिहि
वार हन्यौ दुशासन को दुरद॥गिरौ पहुमि विकराल
अंजन को सो गिरि परौ॥३४॥दोहा॥कृत वर्मा जा
दौं तहां करी वृष्टि सर जाल॥काटयौ पंजर पार्थ को
कीनो रण विकराल॥३५॥जे सर छांडे पार्थ रण २
ते खंडे उनि वान॥अंधकार अरु उदध मैं है ही ग-
यो निदान॥३६॥कौन गनै अब पार्थ को भयका
री संग्राम॥वाणनि सौं वे ध्यौ कटक वरनि कहै २
कोनाम ३७॥सवैया॥ज्यौं मृग जूथनि ऊपरि केह

अनेक योधाओं में द्वंद युद्ध हो रहा है और भीमसेनने दुश्शासन के हाथी को गदा मार के गिरा दिया
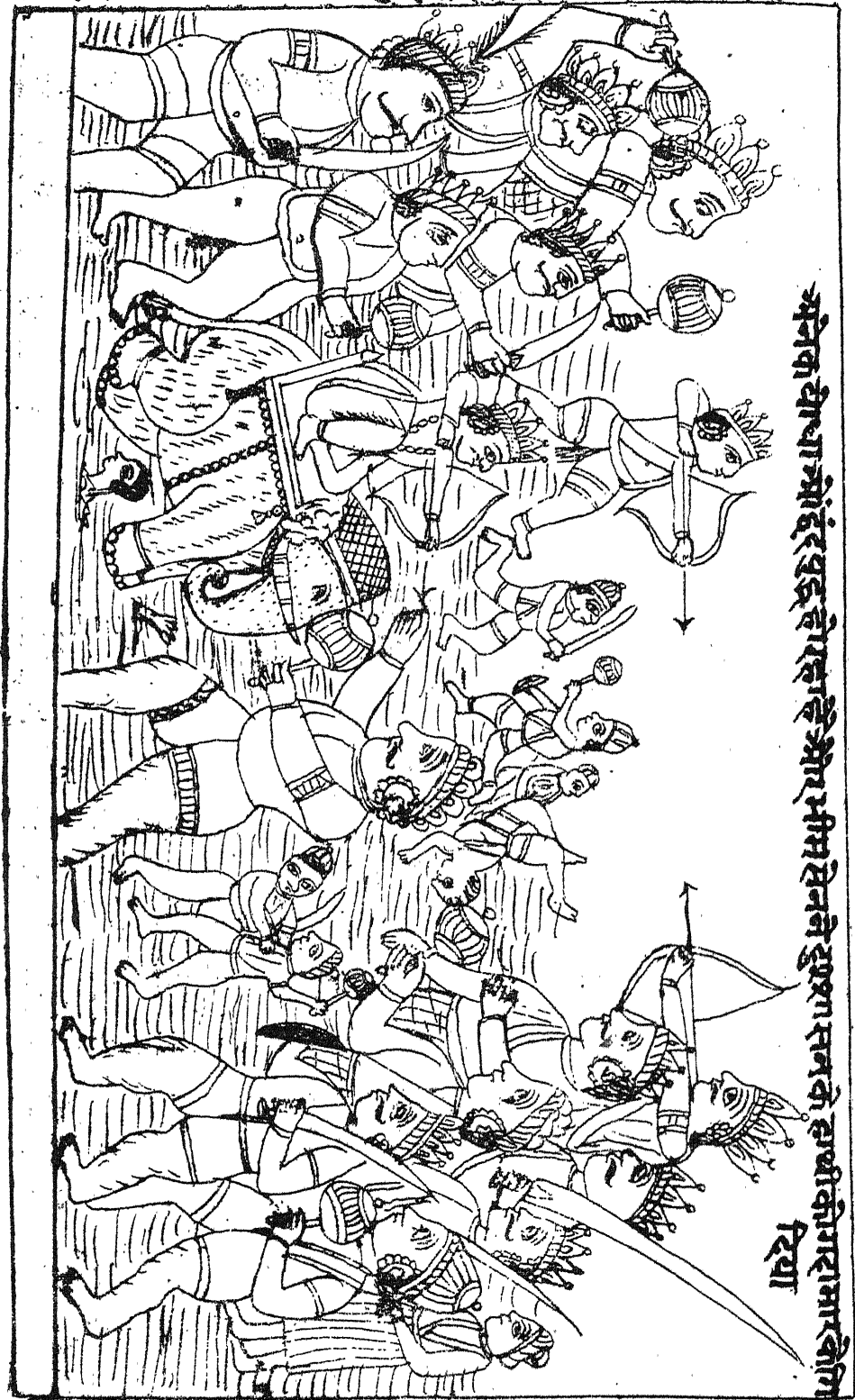
रि कोपि उठ्यो रण पार्थ बली ॥ बाण चले अस मानहु लीं सुमनों सलमा उड़ि व्योम थली ॥ खंड करी ध्वज चौर पताक भई उपमा यह छत्र भली ॥ मानों उडी तजी शैल के अंगनि हंसके वंशनि की अवली ॥ ३८ ॥ दोधक छंद ॥ ठांमहि ठांम हि सूर संघारे ॥ कोपि किते हय सिंधुर मारे ॥ बाण विशाल हयो कृत वर्मा ॥ मोहि गिरो धर वर्म सुधर्मा ॥ जादव मोहि परो जब देख्यो ॥ सेन सबै भय काल विशेख्यो ॥ भागत यों भट अर्जुन आगे ॥ चीन बिडाल ज्यों घन भागे ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ आयो शकुनि सरोष व्है कह्यो पार्थ कित जाइ ॥ जादव जाने मोहि जिनि डारों गर्व नसाइ ॥ ४० ॥ आयो सन्मुख शक्ति गहि पार्थ करी द्वै खंड ॥ धाय सरासन बाण कर तब दीनो बलि बंड ॥ ४१ ॥ सोऊ कीनो खंड द्वै अर्जुन सम-र प्रवीन ॥ रथ काट्यो सारथि वध्यो करी पताका छीन ४२ ॥ लज्जित खल थल तजि भज्यो तन की नहीं सम्हाल लखि दुर योधन आदि सब संशय करो अपार ४३ दोधक छंद ॥ रोस कियो सत बंधव धाये ॥ अर्जुन सों सब सन्मुख आये ॥ घेरि लयो जबही रथ ऐसें ॥ घेरत पर्वत दुंदुहि जैसें ॥ ४४ ॥ त्यों चहुं घां सब को रब कोपे ज्यों मघवा घन सूरहि लोपे ॥ बाणनि सों रथ छाय लयो है ॥ सम्भ्रम सम्हि चित्त भयो है ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ सह देव धाये नकुल भीम धरा का साथ ॥ सोच गहे शशि राहु ज्यों धर्म पुत्र नर नाथ ॥ ४६ ॥ चौपाई ॥ अर्जुन बाण दृष्टि जब करी ॥ कुरु नंदन दल धीरन ध-

री॥उड़ी पताका वाग़नि साथ॥कटि गये धनुष रहे न
नहि हाथ॥४८॥ज्यों वड़वानल पौनहि पाई॥कौरव
सेना चली पराई॥मार मार दोऊ दल गाजैं॥अति ग-
ति स्वर्ग स्वर्ग लौं वाजैं॥पवन पुत्र सुत धर्म प्रचारो
लै कर गदा धनुष भुव डारो॥रथ हय हस्ती तिहिद-
ल मारे॥वज्र पात जनु पर्वत फारे॥४९॥छत निछा-
य भट भ्यानक भेस॥जनु सब जनु फूले टेसू॥अ-
द्भुत रण को सकै वखानी॥गिर से परे कहीं भुव आ-
नी॥५०॥दोहा॥जूझे दुर्योधन अनुज हने भीम प-
चीस॥कहूं वांहु कहूं जंघ हैं कहूं परे धर सीस॥५१
सवैया॥कोपि गदा कर लै तिहि खेत कियोदलदुर्गनदी-
ह संघारो॥जूझे रथी कटि कुंभनि सिंधुर स्रो णित
पूरि प्रवाह प्रचारो॥ग्राह भसुंड दुकूल ध्वजा रुख
चामर के शशि वार निहारो॥पौन के पूत वली रण
जीति कै संचिहू जदु की सिंधु सुधारो॥५२॥दोहा
राखौ भीम कलिंग तहं द्वै घटिका विरमाय॥धनु-
ष धरे भट राउ तहा भीषम पहुंचे आय॥५३॥वूड़-
त पाई थाह जिमि त्यों दल तिनि कौं पाइ॥घरी घरी
साहस वढ़यो को कवि कहै वनाइ॥५४॥इति श्रीम-
हा भारत पुराणे विजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र विर
चितायां कौरव वध भीम सेन विजय वर्णनो नाम
ऊण त्रिंशो ऽध्यायः॥२९॥०॥०॥

भीष्म उवाच॥

सवैया

आजुही चक्र गहाइ कै त्रासहि आजु धनो दल र

हुंदु बिदारौं॥आजु महा रथ वंत हतौं सब आजुही कुंजर बाजि संघारौं॥आजु अपांडव भूमिकरौं वर आजुही का जइते सब मारौं॥जौन करौं इतनौ पुरुषारथ तौं कुल क्षत्रिय धर्म निहारौं॥१॥दोहा॥भीषम कोप्यो देखि कैं तब अर्जुन रण ग्राम॥द्रुपद कुवर आगे करयो जाहि शिखंडी नाम॥२॥भुजंग प्रयात छंद॥ हस्यो गंग को पुत्र सो नैन देख्यो॥तबै आपनो काल जी मांहि लेख्यो॥ महा रोष सों कोपिकै पार्थ धायो॥दिये वर्म आगे गहैं खर्ग आयो॥३॥महा कालको काल सो बाण लीनो॥फरी खर्ग सों तोरि द्वै खंड कीनो॥तबै गंग के पुत्र लै शक्ति ऐसी॥महा मीच के तेजहू तें अनैसी॥४॥लखी पार्थ द्वै खंड लै बान कीनी॥तबै देखि सेना तबै त्रास भीनी॥महा रोष सों गंग को पुत्र छायो॥धनु बाणलै सनके सौंह धायो॥५॥दोहा॥कोपि हते द्वै अयुत रण रथी अति रथी सूर॥पायक हय गज छतन छूटि चले ओरण के पूर॥६॥सवैया॥धीर धरैन चमू चतुरंग सु भागत कोउन काहू सम्हारै॥थाकि रहे पुरुषारथ के अति पारथ आपु हिये बहु हारै॥अंचि गिरे कहूं बीर गिरे कहूं मत्त गयंद नि को गन डारै॥भूप जुधिष्ठिर को दल सो दलको पकी आगिमें भीषम वारौ॥७॥दोहा॥हतौ पंडु सुत दल सबल बिचरि चल्यौ दिशि चारि॥भीषम सों मन वचन क्रम सबही मानी हारि॥८॥जब जानी सेना चली भीषम सों सब हारि॥धाये कर धरि चक्र प्रभु रक्षक भक्त मुरारि॥९॥सवैया॥चक्र गह्यो कर कोपि मुरारि निहारि तहां अपनो पन टारो॥ज्यों रथ तें धसि॥१०॥

थाये थरा गज जूथनि ऊपर सिंह प्रचारो॥देखत ही तिल का वलि सीस नहीं चित और विचार विचारो॥ पीठि दई कररा भय ताहि कृपा करि के जनको प न पारो॥१०॥अर्जुन उवाच॥दोहा॥सांई हारत पैज वाल जीत्यो यह संग्राम॥द्रुपद पुत्र पहुंचो तहां धृष्टद्युम्न तानाम॥११॥चौपाई॥कौरव कोदल्ल कोपि संघारयो॥यत्र तत्र हति भूतल डारयो॥पार्थ सिखंडी लेतव धायो॥भीषम के तव सन्मुख आयो॥१२॥देखि सिखंडी वारानु गह्यो॥तिनके सन्मुख ठाढो रह्यो॥वाणनि वेधे पार्थ शरीर॥तव हसि वोल्यो भीषम वीर॥१३॥अर्जुन इषु वेधत है मेरे॥वाणन होय शिखंडी तेरे॥द्रुपद पुत्र जेते सर हये॥लगे ननन में निरफल गये॥१४॥अर्जुन वाणनि मोंह प्रान॥भूमि गिरो यों कहि वलवान॥मारग शुक्ल अष्टमी भई॥तव भीषम सर सज्या लई॥१५॥दोहा॥भीषम पौढे सेज सर दशये दिन वर वीर॥पूरव सिर पश्चिम चरण परो पहुमि रण धीर॥१६॥वरषे सुमन नि स्वर्ग तें सुर सव चढे विमान॥आई कौतुक सुर ललनि जित तित रूप निधान॥१७॥जैसे शब्द अकाश भो ध्वनि भीषम भट राउ॥कौरव को अरु शकुनि को मिटयो चित्त को चाउ॥१८॥भयो कुलाहल कटक सव विलख वदन ही संत॥जन जान उर आतंक के संभ्रम वढयो अनंत॥१९॥भीषम सरकी सेज लखि लटवाल सीसहि जानि॥पट भूषण कुरु राज तव दये उसी से आनि॥२०॥भीष्म उवाच॥तुम नहिं जानत यह समो लीनो पार्थ र

कोपि॥ निरखत ही मृग राज ज्यों जात करी दल लोपि ॥२॥ घुमंडे घन कान गाज ज्यों है दल मांहि नि-सान॥ चपल पताका दामिनी सिंधुर घटा समान ॥३॥ द्रुपद राय गुरु द्रोण सों भयो जुद्ध अति काल॥ दोऊ वीर समान नहीं वृष्टि करत सर जाल॥४॥ प्र-थम द्योस रण करि रहे दोऊ वीर समान॥ कवच स-नाहक से सवनि प्रात उगत ही भान॥५॥ जुरे वीर दोउ और के रज छाई असमान॥ भई निशा सी छाय तम लसे छपा कर भान॥६॥ त्रिभंगी छंद॥ सजि च मे सुवर्मा अद्भुत कर्मा कोपि सुशर्मा आय गयो॥ रण में जस लीजे विर मुन कीजे पार्थहि यह संदेश दयो॥ जुरि हम सों न्यारो जुद्ध संवारो अति भारो आ नंद करो॥ विर मुन लावहु सन्मुख आवहु धनुष चढावहु बाण धरो॥७॥ दोहा॥ अर्जुन के उर वीर रस अति बाढ्यो सुनि वैन॥ दोऊ समर प्रवीन अति कीन्ह रण उस रैन॥८॥ आयो तहं भगदत्त नृप दल को बाहन अंत॥ अंजन गिरि पर सूर सो गज ऊपर सोहंत॥९॥ ताको सिंधुर के चले को कवि कहौं सुनाइ॥ वाह वात के परस ही वार नगन उठि जाइ ॥१०॥ दोधक छंद॥ भीम बली भगदत्त विलो क्यो॥ आवत सो भट कौरव रोक्यो॥ नेक हु सो वर ज्यो न-हिं मानै॥ भांति न भांति न को रण ठानै॥११॥ अंकु-श मारि करी तिहि पेल्यो॥ भीम बलीन ठिले रण है ल्यो॥ पीन के पूत सो मुष्ट प्रहार्यो॥ सो गज नेक डरै न-हिं टर्यो॥१२॥ उद्यम को बहु थाकि रह्योई॥ जातन

ही मुख बैन कहोइ ॥ पौन को पूत जितौ बल ठांनै॥ कुंजर सौं मन मैं कन आनै ॥ १३॥ दोहा॥ चतुर दंत उनरमत्त बल गरजत भीम हि पाइ॥ चाहत लयौ लपेटि कै अब नहिं कछू बसाइ॥ १४॥ त्रोटक छंद॥ भीमसेन बल कीनो सर्व॥ रोमन छूटो भाज्यो गर्व॥ कुंजर पैन हिं पावै जान॥ को भगदत्त नरेश समान॥ १५॥ पसौ शब्द अर्जुन के कान॥ वाही दल को छांडे बान॥ को वाहि सकैन साहस रह्यो॥ तबहि धाय तिन अर्जुन लह्यो॥ १६॥ अर्जुन भीम लख्यो दुग तुल्ल॥ लई शक्ति जैसो शिव सूल॥ रावण ज्यौं लछिमन पै छंडी॥ वक करि इंद्र पूत तब खंडी॥ १७॥ खंड करी द्वै बाणनि काटि॥ और लयौ दल बाण निपाटि॥ तब भगदत्त लम्हारो आप॥ जाको जगमें बड़ो प्रताप॥ १८॥ पांच बाण कर में तिन लये॥ तब अर्जुन के उरमें हये॥ लागत उर में सो परजरो॥ विषम बाण तिनि धनु पर धरो॥ १९॥ दोहा॥ कुपि कुंजर के सिर हयो डारो सीस विदारि॥ पार भयो सर वेधि तन कसो फांक द्वै फारि॥ २०॥ कुंजर सबल पकर्यो हाथि गह्यो भगदत्त॥ गिरजन पावत भूमि में साजत जतन अनंत॥ २१॥ जीत्यो चाहत पार्थ कों पेलत बार बार पग दै॥ सकत न दुवद सो अंकुश हने अपार॥ २२॥ सवैया॥ हाथि गह्यो जुग जानु में सिंधुर पौरुष को कवि कौन बखानै॥ जुद्ध जुरेन मुरे वर बीर सो भांति अनेक नि के रण ठानै॥ पेलत क्रोध किये भगदत्त न कुंजर नेकहु अंकुश मानै॥ निरधन की त्रिय आयसु ज्यौं

अपने पति की कछु चिन्त न आने॥२३॥दोहा॥जुगल जंघ मे मृतक गज वार वार एक केरि॥हारो देंदे अंकु शौ नहीं सकत अंग मोरि॥२४॥वीते एक महूरते भू मि गिरो गज राज॥प्यादो ह्वै भगदत्त तव धायो भट २ सिर ताज॥२५॥सोरठा॥कोपि खरग लै धाय क्रोधित अति राते नयन॥मघवा चढ्यो वजाय चपला असि २ वर जलद तन॥२६॥दोहा॥दो सर लै दोऊ हनी तवही पारथ वाहु॥विन भुज सन मुख पार्थ के चल्यो वली न र नाहु॥सोरठा॥२७॥पार्थ तीसरो वाण हन्यो सीस में २ क्रोध करि॥मुरछि गिरो वल वान उठि अर्जुन सन्मु ख चल्यो॥२८॥चौपाई॥तव सो पंच पैंड चलि ग यो॥अर्द्ध चंद्र लै अर्जुन हयो॥काटो जानु जंघ धर परो॥यों भगदत्त भूप संघरो॥२९॥हाहा कार कटक में भयो॥सूरनि मन रवि सम आथयो॥कौरव नृपके दुख अति भारी॥सुख की सकल वासना जारी॥३०॥ दोहा॥लीनो अर्जुन लाय उर भूप जुधिष्ठिर आप॥ आजु करी संग्राम जय कीनो प्रगट प्रताप॥३१॥इति श्री महा भारत पुराणे विजय मुक्तावल्यां कवि छत्र

विर चितायां भगदत्त वधन वर्णनो

नाम एक त्रिंशो ध्यायः॥३१॥ ॥ ॥

सुंदरी छंद॥जहि परो भगदत्त लख्यो जव॥कौरव २ सोदर रोवत हैं सव॥सोच वढ्यो जियमें अति सोच त॥नैनन तें अंसुवा वहु मोचत॥१॥वंदत हैं गुरुके नृ प पायन॥दीन भये वहु भाषत भायन॥आपनु हो सव कारज लायक॥कौंविगरै जहां होउ सहायक २

आजु भयो तुम जुद्ध पराजय॥ बैरी जीति गये सव निर्भय॥ आपु विचार कछू अव ठानहु॥ होय विजय मति सो उर आनहु॥ दोहा॥ ४॥ रच्यो चक्रव्यूह गुरु सुनि अवनी पति बैन॥ दुर्गम दीरघ दुसह सो जान्यो काहू पै न॥ ५॥ द्रोण उवाच॥ न्यौति पठावहु पंडु सुत आवहि रण को आज॥ कै तू मैं कै आडि वन सौंपि आय सव काज॥ ६॥ त्रिभंगी छंद॥ सुनि गुरु वानी सो सिर मानी उर आनी तव वुद्धि यहै॥ तव दूत वुलायो सो चलि आयो वेगि पठायो जाय कहै॥ तव आयसु पायो तुरत सिधायो सीस नवायो भूप जहां॥ सो सवनि जुहारो लै वैठारो सो वंधव चारो लसत तहां॥ ६॥ दूत उवाच॥ सो रठा॥ दीनो यह संदेश चक्रव्यूह रच्यो तहां॥ रण हित चलहु नरेश कै तजि विग्रह जाहु वन ७॥ युधिष्ठिर उवाच॥ दोहा॥ न्यौति पठाये आय है वाहो जाय संदेश॥ दूत समादि कीनो तहां भूपति उर अंदेश॥ ८॥ चौपाई॥ जेते भट हैं या दल माहीं॥ चक्रव्यूह कि जानत नाहीं॥ अर्जुन श्री हरि संग सिधायो॥ तीरथ तें चलि सो नहिं आयो॥ ९॥ ता विन जुद्ध कौन यह करिहै॥ चक्रव्यूह वैठि कै लरिहै॥ अर्जुन विनु जानो दल हीनो॥ ताते न्योत वृथा को दीनो॥ १०॥ तीनो वंधुनि राजा वूझै॥ कहो मंत्र जो जाको सूझै॥ जो यह जुद्ध नहीं वनि आवै॥ राजपाट छिति कौन पावै॥ ११॥ प्रथम हि भीम हि वूझे राजा जो रण जीते सौ जै काजा॥ सुनि कै उत्तर भूप हि दै

नो॥ऐसो सुन्योन मैं रण कीनो॥१२॥छप्पै॥जुरैं सु
र गंधर्व सर्व तिन को वल गारौं॥किन्नर नर अरु
जक्ष सवल वल दल संघारौं॥वज्र पांनि जो वज्र
ले हि तौ चित्त न आनो॥जुद्ध करत दिन रैन नही
हौं कछू अघानो॥वहु संक अंक नग पन्नगनि
कौ मो सौं सरिवरि करैं॥सुनि भूप मोहि या जुद्ध
की सो न कछू विधि जानी परैं॥१३॥दोहा॥वूझे
नृप सह देव तव जो यह जानहु जुद्ध॥जीति लि
ये व्है जायगो राज पाट सव सुद्ध॥१४॥सह देवउ
वाच॥जीतौं दानव देव हौं जुरैं जुद्ध जो आइ॥पै
विधि चक्र व्यूह की कछु न जानी जाइ॥१५॥राजा
उवाच॥करौ नकुल संग्राम यह राखि कटक की २
लाज॥ना तरु भूमि गई सवै रण कीनो विनु काज
१६॥नकुल उवाच॥छप्पै॥आजु अमित संग्राम दे
व दान वसौ मंडौं॥जुरै जुद्ध जो आय काल दंडहु को
दंडौं॥सव अवनी पति जीति गर्व तिन कौ वर गंजौं॥
सकल शत्रु संघारि वाहु वल सव दल भंजौं॥सु-
नि भूप पाय तुव आय सैं हौं इतनौं संग्राम करौं॥
यह सौंह मोहि नृप पंड की सो उलटि पहुमि ऊप
र धरौं॥१७॥दोहा॥देख्यो सुन्यो न कान हूं चक्र व्यू
ह नरेश॥सो न जुद्ध कहु मैं कियो यह जिय मैं
अंदेश॥१८॥चौपाई॥राजा वहु जिय मैं पछिता-
इ॥क्यौं जीत्यौं अव संगर जाइ॥विना पार्थ वहु
भयो अकाज॥पहुमिन साई वूड़ौ राज॥सुर नर
दल सव भीमहि डरैं॥ताहूं तें कछु काज न सरैं॥

सहदेव अरु नकुल विचारि ॥ तेऊ गये हिये अव हारि
॥२०॥ वैठो भूपति नाये सीस ॥ नहिं वोलत कोऊ अव
नीस ॥ चारो वंधव मनमें सोचें ॥ मन पछिताय नै
न जल मोचें ॥२१॥ सकल कटक में वीत्यो त्रास ॥ अं-
तहपुर सव परो उपास ॥ यह सव सोधु सुभद्रा सु-
न्यो ॥ हिये सोच करि माथो धुन्यो ॥२२॥ पतिकी सु
रति चित्त में धरी ॥ नैननि जल देही थर हरी ॥ कृस्न
साथ चलि अर्जुन गयो ॥ वहुरो नहीं कहा सो भयो
२३॥ सुत अभिमन्यु गोद में परो ॥ माता नैननि आं
सू ढरो ॥ परो पत्र उर पै तिहि वार ॥ चिंता कीनी
चौंकि कुमार ॥२४॥ अभिमन्यु वाच ॥ दोहा ॥ कौन
हेत तुम मलिन हो कहि धों मो सम काइ ॥ या जग में
तो तें सुखी और न कोऊ आइ ॥२५॥ सवैया ॥ जेठ जु
धिष्ठिर भीम वली जहां हैं जग वंदन कृस्न सो भाई ॥
धीर धनुर्द्धर अर्जुन सो पति जुद्ध जुरे जम हू खमि-
खाई ॥ हे विवि वंधु सहदेव सो देवर की रति है सव भू
तल छाई ॥ मो सम पुत्र हि पाय के माय कहा कहि धों
मुख पै मलि नाई ॥२६॥ दोहा ॥ वरन वरन को या स
में कहि धों कारन कौन ॥ काहू के उर त्रास नहिं संप-
ति संजुत भौन ॥२७॥ सुभद्रा उवाच ॥ तुम पितु रन
हित कृस्न संग गये कसे तन त्रान ॥ आइ सुधि नी-
की नहीं कहो रहत क्यों प्रान ॥२८॥ चौपाई ॥ भूप जु-
धिष्ठिर दुःखनिदान ॥ भोजन कीन्हे खंडो पान ॥ ती-
नों अनुज रुदन वहु करें ॥ वैन नहीं मुखतें अनुस-
रें ॥२९॥ नहीं पार्थ की सुधि कछु जीकी ॥ यह वात

साहस धीर॥सूरनि मनि बोहीर कलित शील सिंधुर सोवीर॥४९॥राजा उवाच॥नहिं गुरु ढिग विद्या पढी समर न देख्यो नैंन॥करि साहस वीरा लयो जानी का हू पैंन॥५०॥मोहि अचंभो पुत्र सुनि कोर रूमव दे व॥गंधर्व किन्नर जक्ष तूं कहि सब अपनो भेव॥५१ अभि मन्युरु वाच॥छप्पै॥सेवक सोइ धन्य स्वामि कारज में सूरो॥धन्य धन्य सोइ पुत्र मात पितु आ यसु पूरो॥धन्य धन्य वह दास भंग नहिं शासन क रई॥धन्य धन्य सोइ सूर समर पग उलटि न धरई॥ धनि बोलि सत्य कवि छन्द कहि सुजस सकल जग लीजिये॥बहु राज काज मन लाज धरि जन्म सुफल अब कीजिये॥५२॥दोहा॥नहीं भूप संसो करो सोच नसा वहु चित्त॥करो विजय भट सब हनों आजु रा वरे हित्त॥५३॥इति श्री महा भारत पुराणे विजय

मुक्ता वल्यां कवि छत्र विर चितायां चक्र
व्यूह रचनो नाम द्वा त्रिंशो ऽध्यायः॥३२॥

युधिष्ठिर उवाच॥दोहा॥पढ्यौन गुरु ढिगतैं कहूं लख्योन नैननि जुद्ध॥को कान्ध्यो तैं भार सुत सो मोसौं कहि शुद्ध॥१॥अभि मन्युरु वाच॥सुनि नृप पूरव ज न्मकी कथा कहौं मन लाय॥मथुरा पुर उत्तम अवर नि शोभा वाही न जाय॥२॥सुंदरी छंद॥भार भयो र उपजे वहु दानव॥धेन नहीं वहु धा मुनि मानव॥ होम धर्म तप जज्ञ नसावत॥होन नहीं व्रत संजम पावत॥३॥भारत विप्रनि देखि तपो बल॥दीरघ र दीरघ दानव को दल॥कै वहु तै वसुधा जिय व्याकु॥

ल॥ जात भई ... पूरी थल॥ ४॥ तामुख वात सु
नी जग वंदन॥ प्रगट भये सब श्री नंद नंदन॥ मार उ
तारि हने दल दानव॥ ठावहिं ठाव थपे मुनि मानव
॥५॥ सवैया॥ भूतल भार उतारन कों जग में अवतार
मुरारि धस्यो॥ मारि वकी वग को मुख फारि अघा
सुर को वल प्रान हस्यो॥ तोरि लये रद धाय भुशुंडतें
कोपि करी जव आनि अस्यो॥ कंस को हंस विध्वंसि
तहां सव दानव वंश निवंश कस्यो॥ ६॥ चौपाई॥ तव
श्री कृस्न पैज उर धरी॥ सकल भूमि विनु दानव क
री॥ छोटे वड़े असुर जे भये॥ तेवर विक्रम के सव हये
॥७॥ मारे सव वहु त्रासदि खाई॥ मैं माता तव वची
पराई॥ गर्भ वती पितु गेह सो गई॥ ऐसी गति विधि
ना निर्मई॥ ८॥ ताके गर्भ जन्म मैं लयो॥ कछू ज्ञान
तव मो उर भयो॥ खेलन जाउं शिशुन के संग॥ नाना
विधि सव राचत रंग॥ ९॥ इक शिशु यों कहि गारी
दई॥ सुनत मोहि वहु लज्जा भई॥ तव उन के हि ... न
ज्ञातिन गोत॥ तोहि हनों तेरो को होत॥ १०॥ चलि त
व माता पै हों आयो॥ तवही सव वृतांत वतायो॥ को कु
ल कौन पिता कहि माता॥ कहा कुटुंव वंधु निजु भ्रा
ता॥ ११॥ माता उवाच॥ पुत्र पिता की जो गति सुनिहौ॥
वहु पछितैहो माथो धुनिहौ॥ कुटुंव तुम्हारो श्री हरि
हन्यो॥ वालक वहु तरुण नहिं मन्यो॥ १२॥ दोहा॥ कोऊ
उवस्यो असुर नहिं पुरुषन कौऊ वाम॥ कीनी अपुव
स पुहुमि सव निर्भय मथुरा धाम॥ १३॥ लाज भई य
ह वात सुनि क्रोध भयो वहु चित्त॥ सुनि पितु की वे

सौ दृढ़ण कियो जतन ताहि त ॥ १४ ॥ धूम घूंटि कै औं
धमुख नींद भूख सव साधि ॥ तन मन सव एकां
त करि शिव सौं लगी समाधि ॥ १५ ॥ दंडक छंद ॥ २
नीचो राखि मूरध चरण किये ऊरध में धूम घूंटि
घूंटि तप कीनो त्रास ना कछै ॥ सूखि गई त्वचा सव
आमिष विलाय गयो शोन कौ सलिल चल्यौ कै
तिक वखानि च्वै ॥ एक चित्त साधि कै समाधि २
महा कष्ट साधि कीनो न विराम कवहूं न घटिका
हू दै ॥ छत्र वाहि शंभु नाथ भूत नाथ भव नाथ २
शंकर प्रसन्न भये मोपर दयाल है ॥ १६ ॥ दोहा ॥
हौं प्रसन्न तोसों भयो मागि मागि उत्ताल ॥ जो कुछ
तव मन रहै सो पुरवउं इहि काल ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ न
व मैं तिन सौं विनई सेव ॥ नमो देव देवन के देव ॥
वृत्ति भूमि मो मथुरा गांउं ॥ तीनहु भवन प्रगट ता
नाउं ॥ १८ ॥ वासुदेव भूतल अवतर्यो ॥ दानव को
कुल तिन संघर्यो ॥ लघु वालक काहु रहन न पा
यो ॥ सो हरि तहं अव नीश कहायो ॥ भागी गर्भ
वती मो माता ॥ नैहर गई जहां निज भ्राता ॥ ता
के गर्भ भयो ता ठाउं ॥ धर्यो मातु अहि दानव ना
उं ॥ २० ॥ अव स्वामी सो करो उपाउं ॥ अपने कुल
को पाऊं दाउं ॥ लगैन आयुध होयन घाउ ॥ दै
कछु ऐसो करो सहाउ ॥ २१ ॥ दोहा ॥ जाके वल ह
रि कौ हतों कुल को वदलो लेहु ॥ लहो विरत वर
आपनी जननी को सुख देहु ॥ २२ ॥ दीनो एक म
त्र्स तव है शिव परम दयाल ॥ तव रक्षा कै है २

समर सव भाजयो निहि काल॥२३॥शिउ उवाच॥म
धुभार छंद॥जव रण जैहे जय जस पैहे॥अरिकु
ल गंजे॥पर दल भंजे॥२४॥जव रण जाने॥अरि
न पराने॥वहु वल कीनो॥करि वल लीनो॥२५॥दो
हा॥रहिये वैठ मजूस में सोहिन लखिहे कोइ॥तु
म तन की रक्षा महा याही तें सव होइ॥२६॥आयो
गेह मजूष लै वीते कोतिक काल॥मथुरा पुर कों उ
ठि चल्यो जातन श्री गोपाल॥२७॥जव कछु चलि मा
रग गयो लये मजूषा सीस॥विप्र रूप मोकों मिले ती
नि भुवन के ईस॥२८॥गीतिका छंद॥जरा युत सव दे
ह निर्वल लकुट कर में लेखिये॥चल्यो आवत कष्ट सों
विच वाट कैसो देखिये॥॥दया उपजी मोहि देखत
कही यह गति हेरि कै॥कहो विप्र चले कहां वानी सु
नाइ टेरि कै॥२९॥रदन दावी अंगुली द्विज कही मो
ढिग आय कै॥सुनत आवे कंस यों कहि क्यों वचे भ
गि जाय कै॥शब्द ऊंचो क्यों करे स्वर दीन क्यों नहि वो
लई॥ता विप्र की मुख सुनत वानी मोहि चित चिंता
भई॥३०॥दोहा॥मैं विनयो ता विप्र सों कंस हि काहा ड
राउ॥क्यों वोलै स्वर दीन तू सो कहि मोसों भाउ॥३१॥
विरति भूमि मथुरा पुरी तहं असुरनि को वास॥कंस
मानि कै वैर चित कीनो सव को नास॥३२॥हों प्रोहित
तिनको सदा तिन विनु व्है गयो हीन॥नहीं वच्यो ज
न मान जग अव सव सों आधीन॥३३॥चौपाई॥स
संघारे असुर अनेक॥भागि वची तरुनी तहं एक॥ग
र्भवती पितु के ग्रह गई॥ऐसी गति विधिना निर्मई॥३४

ताके पुत्र भयो मैं सुन्यो॥चलि तहँ आउँ चित्त में
गुन्यो॥ वह सुत ह्वैहै वहु वलवान॥अवशि राखि
है मेरो मान॥३५॥हति कंस हि मथुरा पुर लैहै॥ध्या
म ग्राम हम कों लै देहै॥यह सुनि कै मेरो मन मान्यो॥
वह मैं निज प्रोहित करि जान्यो॥३६॥तव मैं सो द्वि
ज निकट वुलायो॥सव विधि अपनो भेद वतायो॥
तू प्रोहित हौं तुव जजमान॥रहि मो पास राखि हौं
मान॥३७॥दोहा॥फूल्यो द्विज ये वचन सुनि हर्ष
वंत अकुलाइ॥मोसों हित भावे वचन कहि क्यों
तू कित जाइ॥३८॥चौपाई॥तव मैं अपनो भेद व
तायो॥कंस हि हौं जीतन चलि आयो॥तव फिरि
विप्र कहै अकुलाइ॥तोपै रिपु क्यों जीत्यो जाइ ३९
दोहा॥वली नहीं है कंस सो तीनि लोक में कोइ॥ता
सों तो सों जुद्ध में कैसें सरवर होइ॥४०॥तोहि देखि
धीरजु भयो जान्यो जीवन आज॥अव मथुरा जिनि
जाय तू ह्वैहै महा अकाज॥४१॥तव मैं वाह्यो मनु
ष को भेद सवै समझाइ॥दीनो शंभु कपाल ह्वै प्रा-
णनि रक्षक आइ॥४२॥सकल निपालों और चार
कौन सवै रण जीति॥हारत जानि मनुष मैं पौहि र
हौं यह रीति॥४३॥सोरह सहस करी लखी ते तव ले
हु लगाइ॥मोहि लखै नहिं शंभु विनु दूजो कोऊ र
आइ॥४४॥चित्र पद छंद॥विप्र कहै तय ऐसे॥तू र
ण जीति हि कैसे॥जानत हौं छल कीनो॥तो काहे
है यह दीनो॥४५॥सोन कछू कहि जाई॥तू कहि मो
सों समुझाई॥मैं सव वात वताई॥वात सवै द्विज पाई ४६

दोहा॥सीखि लराई सब लई छलि बारि द्विज २ वपु मंडि॥बैठो मांहि मजूष हों सकल कपट को छंडि ४७॥चौपाई॥विकट कारी उन सबै लगाई॥२ जे में हुती वाहि समुझाई॥तामें मोहि मूंदि सो गयो॥बुद्धि नसाई परवस भयो॥४८॥धायो बल सब पौरुष भाग्यो॥कीनो सो कछु का जन लाग्यो॥शिव शिव कहत तजे में प्रान॥फेरि तब प्रगट भये भगवान॥४९॥दोहा॥एक कुपी में मूंदियो श्री हरि मेरे प्रान॥होनी सोई ह्वै रहे जो रच्यो भगवान॥५०॥चोवास के तब सो कुपी दई सुभद्रा हाथ॥बिनु बूझे खोलो न तुम यों बिन यो जदु नाथ॥५१॥चौपाई॥पति के गृह सुभद्रा आई॥तब सो कुपी हाथ ही लाई॥न्हाई रितु वंती ह्वै नारि॥जानि सुगंध सु लखी उघारि॥५२॥संगत ताको बहु सुख पायो॥ताके उदर पैठि हों आयो॥दिन दिन बाढ़त विकट शरीर॥विथा सुभद्रहि भर रिन भीर॥५३॥दसौं द्वार की रुधी स्वास ताहि गई जीवन की आस॥सहस बाहु अहि दानव भयो॥सह्यो न भार मात पै गयो॥५४॥दोहा॥दिन दिन देही परहरी कृश ह्वै रह्यो शरीर॥देखन आये सुनि विथा भगनी को जदुवीर॥५५॥श्रीकृष्ण उवाच॥कहा तोहि मन कामना कहा बसै तुव चित्त॥सो मोसों समझाइ कहि आनों तेरे हित्त॥५६॥सुभद्रा उवाच॥पैठों रुधिर प्रवाह में यह भावै चित मोहि॥नित्य निसा इहि विधि करों अथवा मारों तोहि॥५७॥त्रोटक छंद॥भ्रम श्री हरि चित्त भयो त

वुड़ी॥भगिनी मुख बैन सुन्यो जवही॥वहु संभ्रम चित्त
हि छाय रह्यो॥कछु जाय नही मुख बैन कह्यो॥५८॥
जव सूर छिप्यो कछु रैनि गई॥तव व्याकुलता भ
गिनीहि भई॥हरि सों यह बैन विचारि कह्यो॥कहि
एक कथा वसि चित्त रह्यो॥५९॥दोहा॥श्रीहरि च
त्र व्यूह की कीनी कथा प्रकाश॥छिमा भई सुनिकै
कछू मिट्यो कछू मन त्रास॥६०॥चौपाई॥इहि विधि
कथा तहां सुनि लई॥सुनत सुनत आधी निशि ग
ई॥रैत नहूं का निद्रा छई॥कछू छिमा ताके उर भ
ई॥६१॥कथा रही यह मो चित आई॥हूं कांटे तव
कथा कहाई॥तव ही हरि भाषा पहिचानी॥काही
नतव सों फेरि कहानी॥६२॥कुंडलिया॥कीनो सं
भ्रम चित्त में कासु कमल दल नैन॥उत्तर काहू
असुरको नरकी भाषा हैन॥नरकी भाषा हैन उदर मैं
है तिनि जान्यो॥सहस वाहु को शत्रु आपनो तव प
हिचान्यो॥पहिचान्यो तिहि वार सज्यो तव जतन
नवीनो॥को कवि सकै वखानि चित्त जेतो भ्रम कीनो॥६३॥दोहा॥सहस वाहु को कास तव पुतरा रच्यो
वनाइ॥कर कुशले अभिषेक करि मंत्र जप्यो अ
कुलाइ॥६४॥तासों सकल भुजा नसीं द्वै भुज रही
शरीर॥तव ही प्रगट्यो भूमि पर भई सुभद्रहि धीर
६५॥चत्र व्यूह कथा सुनी सुन्यो गेह को भाउ॥भी
म पैज करि ताहि वर तोरिलेइ करि चाउ॥६६॥नि
ती कथा सव में सुनी सो वरनी तो जाइ॥रह्यो सुन
विनु भीम सो तोरि देहि सुनि राइ॥६७॥छप्पै॥भी

म सेन की पैजवारत को संकन करई॥मुनि गन तज
त समाधि शंभु को आसन टरई॥भूतल व्योम पता
ल लंक पति कांपत थर थर॥गदा लेत कर कोपि अं
त आतंका सकल नर॥कोन कांपहि कवि छत्र कहि
डरि डरि करि वर परिहरत॥क्षोभ होत सुर असुर को
सु पवन पुत्र क्रोधहि करत॥६८॥दोहा॥जीत्यो चक्र
व्यूह रण कौन सकै अव राखि॥नहि नरेंद्र चिंता क
रो वचन कहै हुमि भाखि॥६९॥दंडक छंद॥दूहू दल
पारों रोरि सुभट संघारों टोरि पोरि पोरि गवें सब सू
रनि के गारिहों॥औ नहूं मैं वीरों द्रोण रथते विरथ
करों कहूं विकर्ण हू को आजु रण मारिहों॥सा
सन दुश्शासन को चैन दहै वैन हू को भूधर से दृष्य
र को भूतल पछारिहों॥वाणनि की वायु सों उडाय
देहुं सकुनि हि क्रोध दुर्जोधन के सीस ही सों मारिहों॥
७०॥दोहा॥है सुचित्र वीरा दयो धर्म सुवन नर नाह॥
पंच छोहनी सकल दल दीनो करि उत साह॥७१॥स
हदेव अरु नकुल संग चले द्रुपद नर नाथ॥चले वि
राट चमू लिये और धरहु का साथ॥७२॥भूपति को
सिर नाय कैं चल्यो निसान वजाय॥गेह आय जन
नी चरण वन्दे वहु सुख पाय॥७३॥इति श्री महा
भारत पुराणे विजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र विरचि
तायां अभि मन्यु उत्साह वर्णनो॥

नाम त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः

३३॥सुभद्रा उवाच॥चौपाई॥देखत तो को मन्यु गा
ह वह्यो॥धनि धनि कुक्षा मो अब लह्यो॥अपने कु

लको राख्यो पान्यो॥धन्य धन्य सुत मैं पहिचान्यो॥१॥
दोहा॥मुक्ता चौका पूराय कैं वेद उचारत विप्र॥चल्यो
वीर रस सों सुभट शत्रु हिं जीतन छिप्र॥२॥मंगल गा
ये सखिन मिलि बाजन विदित बजाइ॥नौछावरि
मणि मुक्ता करि नीरज चीर लुटाइ॥३॥वंदिन मिलि
बोल्यो विरद रथ आरूढ़ कुमार॥चल्यो सबल दल
साजि कै कोपि कस्यो किरवार॥४॥सुंदरी छंद॥कुंज
र पुंजनि पुंजनि सोहत॥वैरख जाल महा मन मोहत॥
देखत यों कवि ता छवि साजत॥ज्यौं उत दामिनि वा
रिद राजत॥५॥चंचल बाजि किधौं खग खंजन॥पी
न कुरंगनि की गति गंजन॥ज्यौं सलभा गण पायक
राजत॥शोभन दीरघ दुंदुभि बाजत॥६॥दोहा॥रज उ
डि लोप्यो व्योम रवि बढ्यो धरा तम छाइ॥कमठ कस
मस्यो शेष को लचकि लचकि शिर जाइ॥७॥दंडक
छंद॥छाती होत धर शेष की धरा धरत कूरम काल
मसलात भूरि तरुवर तल तल॥टूटि टूटि द्रुम छिति
छूटि छूटि नीर गये खूंदि खुर तार मूंदे सरिता सक
ल जल॥चहूं ओर चकित चवाइ सत वाइ गये अरि
अवनीश कंपि कंपि उठे हल हल॥सूर अवतंस पंडु
बंस अंश अर्जुन के सेन चले हालि उठे सब भूतल
के थल थल॥८॥दोहा॥चलत कटक पहुंच्यो तहां
जहं विराट को धाम॥दियो सो धुनुक सह चरी जगी
उत्तरा वाम॥९॥सखी उवाच॥जीतन चक्रव्यूह को
कोपि चढ़यो तव कंत॥चढ्यो वीर रस कटक में हर्षवंत
दीसंत॥१०॥अति आतुर जे वचन सुनि उठी उत्तरा र

सुत लारवनि नाम बाहादु ॥ प्रथम कोट आभार सिर
लयो भुजा बर आदु ॥१०॥ कोट दूसरे विकट में विदु
र बीर को बास ॥ तीजे शल्य कह्यो बली तीजे कोट नि
वास ॥११॥ कोट चतुर्थ में द्रोण सुत रह्यो बलीद-
ल गाजि ॥ कोट पांचवें सकुन दल राख्यो बहु दल र
साजि ॥१२॥ छठें सुशर्मा सात में साज्यो सबल सवाह
अष्टम विम्या सेन तहां सजे कवच संनाह ॥१३॥ न
वम विषम भूरि श्रवा दशमें को सब भार ॥ एकाद
श अरु द्वाद शें ताही को विस्तार ॥१४॥ कोट तेरहें द्रोण
गुरु सकल सेन को लाज ॥ चतुर्दशें गांगेय तहां रा
जत बड़ो समाज ॥१५॥ है कलिंग गढ पंद्रहें जिहि
बहु जीते युद्ध ॥ दुशा सन गढ षोड़शें सेना सहित सक्रुद्ध ॥१६॥ चौपाई ॥ सप्त दशें कृत वर्मा देख्यो ॥ र
ताको महा गर्व में लख्यो ॥ अष्टा दशें लसै महा बाहु
नव दश सेना जुत उत्साहु ॥१७॥ दोहा ॥ कोट बीस
में कारण नृप ताको बल नहिं अंत ॥ एक बीस मह
जय द्रथ साज्यो दुसह दुरंत ॥१८॥ दुरजोधन सब अ
नुज सुत साजि सेन चतुरंग ॥ न्यारो लसै महीपत
हं सुभट विकट सब अंग ॥१९॥ यह विधि चक्र व्यू
ह की सुनि अभि मन्यु कुमार ॥ करो विदा चलि जांउं हों
दुरजोधन के द्वार ॥२०॥ अभि मन्यु रु वाच ॥ साजे
नृपति महा रथी सकल सजे तन त्रान ॥ यह संदेसो
देहु तुम कर वर गहौ कृपान ॥२१॥ पहुंच्यो दूत मही
पपै कही सकल विधि जाय ॥ नृपति जुधिष्ठिर की
चमूं तुम पर पहुंची आइ ॥२२॥ साज्यो चक्र व्यूह

पे पारथ सुत बलि बंड॥नाम भेष लघु जानिये पौरु
ष परम प्रचंड॥२३॥ताको साहस मैं लख्यो. काहत्तन
वनई वाल॥काहत लेहुं हौं जीति कै चक्र व्यूह को जा
त॥२४॥करो उताइल काटकमैं साजो राजा राय॥
सावधान सब होहु भट गरजि निसान बजाय २५
त्रोटकछंद॥प्रतिहार नरेश तबै पठयो॥अवनीपु
नि सोध्यु सो दैन गयो॥सुनिता मुख बैन सबै सजि कै
तन त्रान कसे बहु धा गजि कै॥२६॥बहु ओरनि
घोर निसान बजे॥कहुं कुंजर बाजि समूह सजे॥ब
पवंत महारथ साजि तहां॥लखिये नहिं पौन प्र
वेश जहां॥२७॥अभिमन्यु जबै तहं पौ त्रि चल्यो॥
बहु वीर नि को हिय देखि हल्यो॥पहिले ग्रह मध्य
प्रवेश कर्यो॥ तब लाखनि के मन सोच पर्यो॥लखि
वालक सोन करै रण को॥यह शोक भयो अति ही
मन को॥नगहे धनु वान सो सीस धुनै॥ पल ही
पल ही हिय मांहि गुनै॥२८॥लाखन उवाच॥दो
हा॥अतिअपराधी मो पिता पंडु सुतनि नहि खो
रि॥उन नथरी जिय मांफ इनि औगुन किये करो
रि॥२९॥प्रथम वरा मंदिर रच्यो तामैं दिये जरा
य॥भजि उवरे दावागिनि तैं श्रीहरि कियो सहाय
३०॥पांसे कपट वनाइ कै छल करि लये हराइ॥
राज पाट सब छीनि कै दीनो विपिन पठाइ ३१
खेंचत लज्या ना करी द्रुपद सुता को चीर॥हरि सहा
य उघरो नहीं कितहूं तनक शरीर॥३२॥ऐसे को वि
विचारि कै समरन आप अजाइ॥जान दयो सुत

सुत पार्थ को नहिं राख्यौ विरमाइ॥३३॥गयो पैठि गढ़ द्रु
मेर पार्थ पुत्र वरवीर॥निरखत धनु गुण जुत कासो
विदुर उठे रण धीर॥३४॥निरखतही अभिमनु कौं वि
दुर डुलायो सीस॥[illegible] बालक की कौन द्वै नृपाल जग
दीस॥३५॥आपुन बांधौं जुद्ध नहिं धनुष दियौ भुव
डारि॥पापी बैठे गेह कत पंडु पुत्र तुम चारि॥३६॥पौ
रुष तजि लज्या तजी तजी सकल कुल कानि॥बालक
रणहि पठाइ कै आपु रहे सुख मानि॥३७॥दीरघ तन
दीरघ भुजा दीरघ पौरुष पाइ॥कातर ह्वै बैठे [illegible]दन
बहु बल वंत कहाइ॥३८॥विदुर साथ बरजो सबै को
ऊ जुरै न जुद्ध॥चल्यो तीसरी पारि को पार्थ पुत्र ह्वै
सुद्ध॥३९॥पैठि गयो गढ़ तीसरै पार्थ पुत्र नव धाइ
सहित सल्य भट सकल मिलि कीनो धनुष चढ़ाइ
४०॥[illegible] ह्वै जुरे वीर विविजुद्ध॥त
[illegible] हनी शक्ति ह्वै क्रुद्ध॥४१॥वि
षम चोट [illegible] वेगि है पीठि॥पारथसु
त कीनी [illegible] पर दीठि॥४२॥चौपाई॥तहां
द्रोण सुत [illegible] जाको पौरुष जैसे अखंड॥त
हं अभिमनु वेगि है गयो॥तासौं महा जुद्ध तब भ
यो॥४३॥अगिन बाण उन लीने तीनि॥डारे पार्थ पुत्र
ते छीनि॥बाण बीस सौं गुरु सुत हयो॥ताके परम
क्रोध उर छयो॥४४॥तब अभिमनु हयो शत बाण
उन सर कियो सहस संधान॥दोऊ समर करत बलि
वंड॥दोऊ बरषत बाण अखंड॥४५॥दोहा॥एकै वि
द्या दुहुन की संभ्रम करत समान॥ऐसे बेई और को

पट तर दीजे आन॥४६॥ क्रोध बाढ़ो तव पार्थ सुत वि संकें छांड़े बान॥ द्रोण पत्र मूर्छित भयो आगे करो पयान॥४७॥ तबही पारथ सुत गयो कोट पांचवें कोपि॥ शकुनि रह्यो तह क्रोध करि अंगद ज्यों पग रोपि ४८॥ शकुनि उवाच॥ बांधौ जीवत बालकें भागिन पावै जान॥ मारि लेहु तिनको अबै जो कोऊ सजैं कृपान॥४९॥ छेक्यो चहूं दिशते कुंवर बाण अनेक चलाइ॥ घोर कर्म कीनो महा रह्यो व्योम सर छाइ॥ ५०॥ रण कराल अभिमन्यु को सबसों न रवल पै जाइ॥ जिनहि दवागिनि सों उठै तृण ज्यों दल भहराइ॥५१ भजे लजे नहि शकुनि उर सब दल गयो पराइ॥ वहुत वीर अभिमन्यु सों उवरे हाहा खाइ॥५२॥ छठे सातवें आठवें नवमें कोट मंझाय॥ दश एकादश द्वादशौं पहुंच्यो बलही जाय ५३॥ सबही को सर सेल सों हतिके गर्व नसाइ॥ गयो तेरहें कोट थसि द्रोण उठे अकुलाइ॥५४॥ द्रोण उवाच॥ चौपाई॥ बाल काल रण में कित आयो॥ कौन सुन्यो रहते कत पायो॥ तो संग संगम हौं कत मंडौं॥ बालक जानि हिये अब छंडौं॥५५॥ जानत हूं अब क्यों भगि जैहै॥ क्यों करिके इष तीक्षन सैहै॥ काल बली वर तो कहं लायो॥ बालक भूलि इहां कत आयो॥५६॥ पारथ भीम युधिष्ठिर आवै॥ सो कछु नेक प्रवेश हि पावै॥ सकत पैठि सकें गढ़ माही॥ तो अब गाहन को यह नाही॥५७॥ दोहा॥ सुनत कुंवर यह पञ्ज सो रुकि बोल्यो ये बैन॥ धनु गहि कर गुरु विप्र ह छिनदुक

जुद्ध करैन॥५७॥सवैया॥बालक मो हि गनो जिन द्रो
ण सु कों नहि बाण धरण मन साजत॥जानत हौ पृ
थिवंश की रीति नहीं लरिबेके कोउ जुद्ध हि भाजत॥
मो संग जौ लगि आपु जुरै नहि तौ लगि हौ इहि मं
डल गाजत॥तौ लगि आपुन चित्तन आनत जौ ल
गि बाण न सीस विराजत॥५८॥दोहा॥कौन हमारे
वंसमें भाग्यो देखि जुझार॥तातें द्रोण विचारिकै कर
टेको कर वार॥५९॥कृपा करो जो आप उर प्रथ महि
करो प्रहार॥रहै न धोखो चित्तमें धरिये आप हथ्यार
६०॥गीतिका छंद॥बाण द्रोण तजै नहीं इन वचनको
टि का भाषियो॥जानि बालक वेष कारण हृदे में बहु रा
खियो॥कोप करि अभिमन्यु छंडे बालसे सर लीव
कै॥सहजही तिन छीनि डारे उरध आवत देखिकै॥६१
दोहा॥खुरप बाण अभिमन्यु लै ध्वजा पताका काटि
॥डारे भू तल धरनि सों सब दल लीनी पाटि॥६२॥सवै
या॥जे बहु काल हुनै जित बार सो ते उजरे नहि जुद्ध
अनैसे॥बाण विधे सब के तन यों जिमि रोषित व्याल
बिले महं पैसे॥सूर सनद्ध भये अध अंधक मध्य गि
राय दये सब रो से॥ज्यों उनमत्त मतंग सरोवर पैठि वि
दारत वारिज जैसे॥६३॥दोहा॥हयो द्रोण है लक्ष स
र कहौ न संगम जाइ॥भालभा गन ज्यों व्योम धर
रहे बाण तहं छाइ॥६४॥सवैया॥कोटनि कोटि हुते
बहु जोधा सु बाहुन द्वै घटिका बिरमायो॥पौन के
गौन ते बाढि उठो दल नीरद संघट सो बिचरायो॥
भूतल व्योम दिशा विदिशा सुत पारथ के सर पंजर

छायो है भय भीत ससोकित अंगनि कौरव जानत अ-
र्जुन आयो ॥ ६५ ॥ दोहा ॥ मंडलीका कीनो धनुष पार-
थ सुत वलिवंड ॥ वेध्यो गुरु है लक्षसों जी त्यौ समर
अखंड ॥ ६६ ॥ समर सह्यो नहिं द्रोण गुरु रह्यो मानि
हिय हारि ॥ पै दो अगिले कोट में पारथ सुत भट मा-
रि ॥ ६७ ॥ और सवाल थल जीति कै पहुंच्यो कर्ण
निकेत ॥ तबही उठि ठाढ़ो भयो सोई रण के हेत ६८
कर्ण उवाच ॥ दोधक छंद ॥ जानत हौं शिसु मीच
बुलायो ॥ ढीठ भयो चलि मो ढिग आयो ॥ वृद्ध हुतो
द्विज द्रोण पुरानो ॥ हौं तिनु का करि तो कहं मानो ६९
जीवत क्यों न बचै भजि मोपै ॥ होय कहा अब मो
ढिग तोपै ॥ पारथ को सुत यों तब भाखै ॥ काहि बुला
उ जो तो कहं राखै ॥ ७० ॥ सवैया ॥ वीर अवीर महा भ-
ट भीर सो तीरही तीर रखे सब हेरे ॥ आजु लखे तव
गर्भ हरौं अब पायो है मैं करि आपनो नेरे ॥ जीवत
जाय न सन्मुख आय कौ तो सों मूढ़ कहौं यह टेरे ॥
भूप युधिष्ठिर की जय कौ कुरु नंदन बांधहु देखत
तेरे ॥ ७१ ॥ दोहा ॥ आप धनुर्द्धर धीर तुम रहे काहडु
कहाड ॥ तो वल दाई जानि हौं जुद्ध जीति जो जाहु ।
७२ ॥ दुरजोधन बांधौं जियत तेरे देखत आज ॥ नृप
ता माहि मंडल करैं जुधिष्ठिर महराज ॥ ७३ ॥ सुंदरी
छंद ॥ कर्ण सही पति कोप कियो जब ॥ ऊरध मैं स-
र छाय दये तब ॥ तै अभिमन्यु बली रण तोरत ॥ सन्मु-
ख ते अंग नेंकन मोरत ॥ ७४ ॥ आहि धनुर्द्धर धीर
महा वर ॥ व्योम हि छावत है सरही सर ॥ अद्भुत जु-

द्रोणाचार्य ने कौरवों की सेना का चक्र व्यूह रचा
तिस से युद्ध करने को अभिमन्यु आया
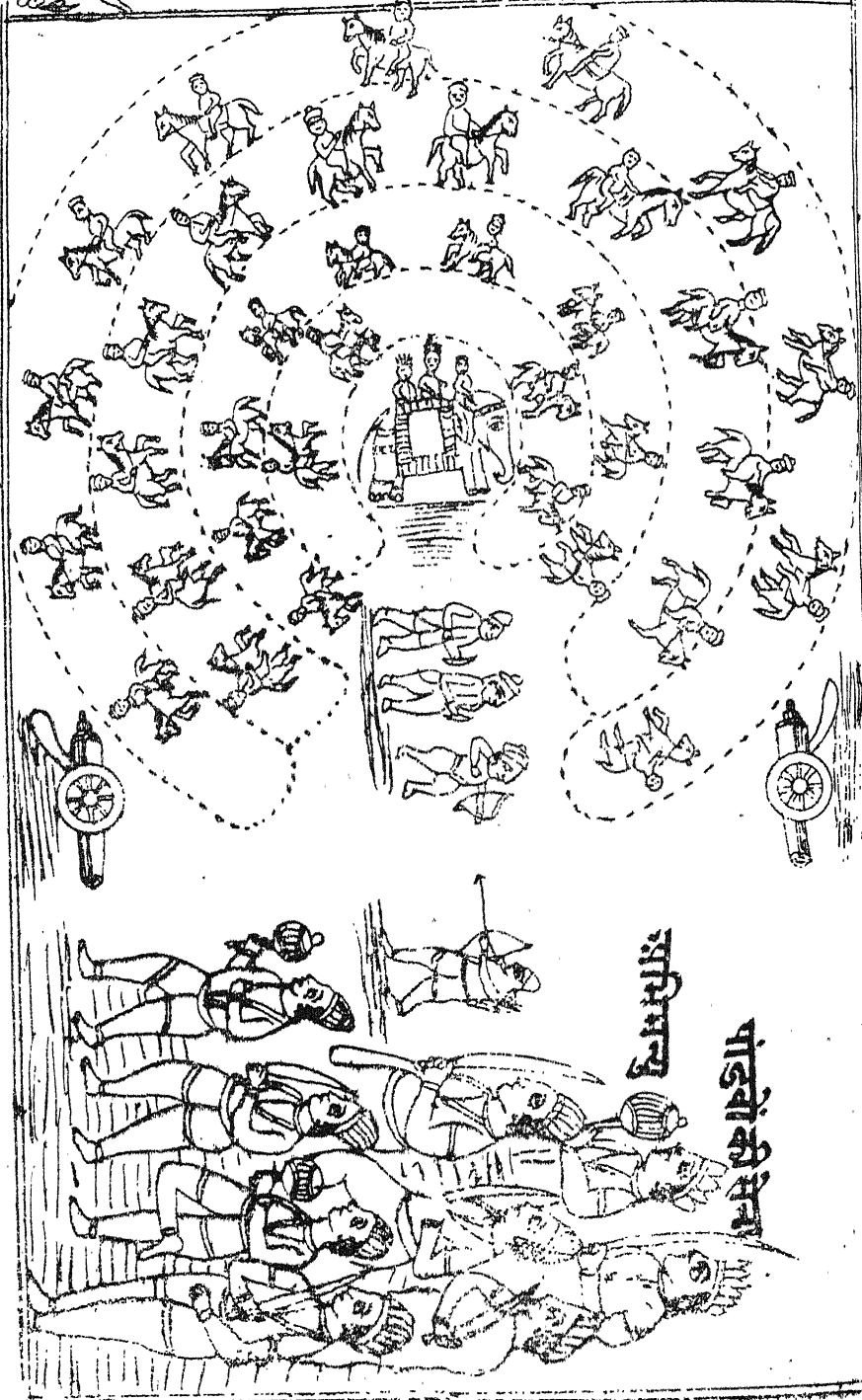
अभिमन्यु

पांडवों की सेना

ढु नहीं कहि आवत॥कोउपमा कहि ताहि बतावत॥७५
दोहा॥लख्यो करण अभिमन्यु सों जबहि जय द्रथ जुद्ध॥
बलसों रोके पंडु सुत तिरछो पैठि सुक्रुद्ध॥७६॥चौपा-
ई॥भूप जुधिष्ठिर भीम प्रचारो॥तीपह जायन सों अ-
भिमारो॥पंडु मही पति के सुत रोके॥बैठि रहे सुसवा
इस मो के॥७७॥दोहा॥भयो महादेईश वर रोके पंडव
चारि॥रह्यो जय द्रथ रोपि परु अंगद को उन हारि॥७८
चौपाई॥चलि अभिमन्यु गेह में गयो॥पारथ कुमर
अकेलो भयो॥भयो करण सो जुद्ध काल॥छयो अ
काश ध्यरा सर जाल॥७९॥तद अभिमन्यु बढ्यो बहु क्रु
द्ध॥रविनंदन महि सक्यो न जुद्ध॥विचलि भगो नहि र
रोप्यो पांउ॥तर पारथ सुत के भो चाउ॥८०॥सुंदरी छंद॥
बाणन साथ उडाइ दये भट॥पौन चले जिमि नीरद
संघट॥कौरव यों लखि कै उर आनत॥आय गयो रण
पारथ जानत॥८१॥दोहा॥पाछे देख्यो पार्थ सुत साथ
न पांडव चारि॥बिलखि बदन बिसमो कियो रह्यो र
विचारि विचारि॥८२॥अभिमन्यु उवाच॥गीतिका छं
द॥आज जो रण भीम होतो जुद्ध मेरो देखतो॥द्रुप
राजय कर्ण भाग्यो हवाल कौतुक लेखतो॥लखे पार
थ कौन मेरो कियो इहि पल आय कै॥जानि कै उत
पात कौरव कुमर ठेको जाय कै॥८३॥दीपक पर
ज्यों पतंग यों परे भट धाय कै॥मेघ रूप ज्यों वृष्टि र
सायक करी चहुं दिशि जाय कै॥जुरे रण भूरि श्र
वा दह वेन दृश सन बली॥जुरे कौरव जत कलिंग
हिं शोभिजे रण अस्थली॥८४॥दोहा॥चहु दिशि तें

अभिमन्यु तव छेकि लयो वलिवंड ॥ ज्यौं सुरपति गिरिनि ज्यौं करि करि कोप अखंड ॥ ८५ ॥ वढ्यो कोप अभिमन्यु उर तव मुक्त गये बान ॥ कटे पताका चौंर ध्वज कटि गये करन कृपान ॥ ८६ ॥ भुजंग प्रयात छंद ॥ चले भागि चौंहू दिशा रावराने ॥ निषंगी चले चर्म वर्मा पराने ॥ रथी सारथी अश्व हस्ती भगे हैं ॥ नहीं जुद्ध में वीर कोऊ खरे हैं ॥ ८७ ॥ पताका ध्वजा काटि द्वै खंड कीने ॥ तजे अस्त्र काहू नहीं हाथ लीने ॥ तहां कोपि के कर्ण को पुत्र आयो ॥ मनो दंड धारी महा रोस छायो ॥ ८८ ॥ तवै पार्थ के पुत्र सों जुद्ध ठान्यो ॥ नहीं चित्त में नेकहू त्रास आन्यो ॥ कटे बाण ही बाण सों अंग ताके ॥ करैं वीर दोऊ दुहू जुद्ध थाके ॥ ८९ ॥ दोहा ॥ रवि नंदन को पुत्र तहं वीरनि मनि वृषकेतु ॥ पार्थ पुत्र को जो रही जानन भीतर हेतु ॥ ९० ॥ अर्द्ध चंद्र अभिमन्यु ले हयो हियो बलवीर ॥ मोहित व्है भूतल गिरयो अतिथर हरयो शरीर ॥ ९१ ॥ चौपाई ॥ दुरजोधन सुत लछिमन आयो ॥ पारथ सुत सों रण को धायो ॥ दोऊ भिरतन माने हारि ॥ सकैन कोऊ काहू मारि ॥ ९२ ॥ दिशा दिशा तें मिलि कौरव आये ॥ चहुं दिशि तें तिनि सर मुक्त गये ॥ मुद्गर काहू शक्ति प्रहारी ॥ बल करि पारथ सुत तन डारी ॥ ९३ ॥ मूर्छित गिरयो धरनि अकुलाई ॥ दुरजोधन सुत तव उठि धाई ॥ दो हथ गदा सु लछिमन हयो ॥ विना जीव पारथ सुत भयो ॥ धर्म जुद्ध नहिं हिये विचार्यो ॥ परो कुवर तिहि दुष्ट संघार्यो ॥ सुनत जुधि

खि बहु दुख पायो॥अति आनंद कटक में छायो॥२
९४॥दोहा॥फाल्गुन पक्ष एकादशी मारग मास बखानि॥
प्राण तजे तब पार्थ सुत कटक रह्यो भय मानि ९६
इति श्री महा भारत पुराणे विजय मुक्तावल्यां कवि
छत्र विरचितायां अभिमन्यु विमोह
नो नाम पंच त्रिंशोऽध्यायः॥३५॥

दोहा॥अर्जुन आयो जीति रण पश्चिम दिशा अव
गाहि॥निरखि ससो बो कटक सब अति भय उपजी
ताहि॥१॥भुजंग प्रयात छंद॥ससोके बिलोके सबै
एव रोने॥महा दुःख संजुक्त ते को बखाने॥नगारे
सुनी नाकहूं बेदि गाजें॥कृथी सों नहीं बेद विद्या म
साजें॥मसालें नदीसें नहीं दीप देखें॥सबे सूर आ
तंकसों चित्त लेखें॥तबे पार्थ जीमें महा त्रास आयो॥
तहां बैन श्री कृष्ण जूको सुनायो॥३॥अर्जुन उवाच॥
दोहा॥बिलख्यो देख्यो कटक सब अरु बिलख्यो २
सब साथ॥जान तुहीं जू को इहां धर्म पुत्र नर नाथ
४॥कै रण जूझे भीम अब सब विधि भयो अकाज
पुरुषारथ सब चलि गयो गयो हाथ तें राज॥५॥नृपति
जुधिष्ठिर पै गये देख्यो सब परिवार॥पग बंदे कर
जोरि के अरु बूझ्यो ब्योहार॥६॥अर्जुन उवाच॥दे-
खत सबही कुशल सों कुशल सकल अवनीश॥कौ
नहेत बिलखे सबै सो मो सों कहि ईश॥७॥लाज म
हाउर नृपति के कह्यो कछू नहि जाइ॥हरि बैं नृप बो-
ल्यो तबे बिलख बदन अकुलाइ॥८॥राजा उवाच॥क
हों याहां काह तन बने भई अनैसी बात॥जूझि परो

अभिमन्यु रनदुवन जरत सब गात॥९॥ कपट जुद्ध रचि द्रोण गुरु चक्रव्यूह बनाय॥ ताहित हमको पार्थ सुनि न्योतो दियो पठाय॥१०॥ सोरठा॥ हम जाने नहीं भेद हे चकित नर माथ॥ ताहसके अभिमन्यु तब बीरा लीनो हाथ॥ पैठो बंकट कोटमें भीम आदि दै साथ॥ द्रोणाचार्य्यको देखिके धीरजु रह्यो न हाथ॥१२॥ नकुल सहदेव भीमको रह्यो जयद्रथ रोकि॥ भयो महादुख बीरवर रहे बिलोकि बिलोकि॥१३॥ कुंवर करण सो जुद्ध करि फेरि गिरो मुरझाय॥ लछिमन कोपि गदा लई पै सुमारो आइ॥१४॥ हाहा करि सुनिके गिरो तबही पारथ बीर॥ बीते एक महूरत सुध्धिमें भये शरीर॥१५॥ अर्जुन उवाच॥ कहे बारण कौ द्रोण के कौ बारि अंग रयो जुद्ध॥ मुख चाह्यो सुत कौनको कारण भयो जब जुद्ध॥१६॥ रोकि रह्यो मग जयद्रथ भीम न पायो जान॥ निपट अकेलो पुत्र तव तिहि छल छांड़ो प्रान॥१७॥ चौपाई॥ भीम सेन जो पावे जान॥ कौ बूड़न पावे सुत न दान॥ कह्यो जयद्रथ कोय हमायो॥ तातें में अब यह ब्रत लायो॥१८॥ आजु बैर सुत को हौं मारों॥ अथवत भान जयद्रथ मारों॥ जो पौरुष इतनो नहि साजों॥ मात पिता पांडुहि हौं लाजों॥१९॥ सवैया॥ मात पिताहि लज्याउं महा अरु तीरथ धर्म सबै ब्रत हारों॥ दोष बिना तरुनीहि तजें तिनिकी गति पाय निरै पग धारों॥ बिप्रनिको अपमान किये पति सों त्रिय बीच बिछोह दहि पारों॥ एतिक पातक मोहि लगो पुनि जो नहि आजु जयद्रथ मारों॥२०॥ हे महरे द्विज दोष करे अति गर्व म

रे गुरु मानन पांवें॥मित्र को द्रोह लये पर चित्र सो चि-
त्ता कु करमे निके मगलावें॥झूठि येसा रिवजे आवत
भाखि नि एज कहा आप स्वारथ भावें॥जोन च-
धों वर आसु जय दूथ रातिक पातक मो सिर आवें
२१॥दोहा॥करी पैज हठि पार्थ यह वहु दुख करि
रण धीर॥जब जान्यो विसंमे करत चरित रच्यो ज-
दुवीर॥२२॥माया वपु अभिमन्यु तव अर्जुनको दर
साइ॥सपनो सांचो जानि चित संभ्रम रह्यो भुलाइ
२३॥शिव पुर देख्यो पुत्र तव सपने खेलत सारि॥
चितयो सो दूत मे नही रह्यो पार्थ मन मारि॥२४॥त
स्न कह्यो सुत इंद्र के आह चले अपार॥परे पुत्र की
पीठि पर चिंते कह्यो तिहि वार॥२५॥अभिमन्युरुवा-
च॥सोरठा॥कौन को भाय तू मूरख रोवे कहा॥सव ज
ग आवत जाय कर्म फांस बंधन बंध्यो॥२६॥को मा
ता को पूत कौन कहो काको पिता॥वर धूर्ते जग धूत
कित याको संसय करै॥२७॥दोहा॥भयो शोक तव
पार्थ को सुनत पुत्र मुख वैन॥इतने निरखि चरित्र
को उघारि गये फिरि नैन॥२८॥नाराच छन्द॥कह्यो
चरित्र स्वस्म सो जो पार्थ आपु देषियो॥रह्यो भुलाय
चित्त में कछू विषाद ना कियो॥उठ्यो समर्थ गाजि के
वढ्यो सुरोष चाप सों॥करयो निखंग कोपि के कराल
काल भाल सों॥२९॥त्रोटक छंद॥कुरु राज सुनी य-
ह वात जहीं॥प्रगट्यो गुरु सो सव भेद तहीं॥कछु आ
पुन आजु विचार करो॥यह मो विनती चित माहि
धरो॥३०॥दिन एक जय द्रथ राखि अवें॥मम पूक

हि सो मन काज सवै॥ व्रत आजु धनंजय कों दरि हैं॥ न
रहैं जग जीवत सो मरिहैं॥३१॥ कुरुराज कहै यह मा
नि अवै॥ सुत पंडु अनाथ विचारि सवै॥ तवही नृप
सों गुरु द्रोण कहै॥ बल जाको कहुं सखहू कौन लहै॥३२
दोहा॥ द्रोणाचारय तव रच्यो सकट व्यूह बनाइ॥ भेद
भाव जाको कछू काहून जान्यो जाइ॥३३॥ आगे सूची
अन सम रच्यो विकट अति व्यूह॥ आस पास हाथी
रथी राखे सूर समूह॥३४॥ जमहू को न प्रवेश जहं दुर्ग
म दुसह संवारि॥ नर किन्नर नहिं लहि सकैं रहैं सुरे
सो हारि॥३५॥ भाग्यो चाहत जयद्रथ पै नहिं पावत
जान॥ राख्यो सकट व्यूह में तजो अथावत भान॥३६
चौपाई॥ राख्यो व्यूह मारु सों लाय॥ जमहूं पै सो लख्यो
न जाय॥ आस पास गज रथ की पांति॥ दुर्ग में दुसह
रच्यो बहु भांति॥३७॥ रक्षक द्रोण चमूपति वीर॥ अ
तुल पराक्रम साहस धीर॥ गाज्यो पार्थ धनुष लै बान॥
सारथ कीनो तव भगवान॥३८॥ दोहा॥ बाजे मारू ज
रकै अति गति नवल निसान॥ भेरि शंख बहु धुनि
भई वीर धर गहे कृपान॥३९॥ प्रथम कुद्ध गुरु द्रोण सों
असि वर बाजी मार॥ नहिं प्रवेश अर्जुन लहै करत
अमित संघार॥४०॥ मार्यो पै न पार्थ पै द्रोण विप्र
बलि वंड॥ सर समूह नभ छाय तहं संगम कियो अ
खंड॥४१॥ गीतिका छन्द॥ पार्थ के रथ के तुरंग सिछ
तन तिल तिल कै छये॥ दे सकै नहिं अनको पग पर
म विह्वल ह्वै गये॥ चाहि मुख श्री कृष्ण बोले वीर य
ह सुनि लीजिये॥ अब पीवै बाजि जैसे सो कछू विधि

कीजिये ॥४२॥ द्रोण छाय अकाश अर्जुन गेह सो तव घा
रि लयो ॥ फिरि सरसों गंग काढ़ी नीर अश्वनि कों दयो॥
फेरि करि श्री कृस्न जु रथ पै चढ़े अकुलाय कैं॥ पंडु
को सुत द्रोण सो तवही जुरो रण आय कैं॥४३॥
दोहा॥ बल करि कें द्विज द्रोण कों सब हित चित भ
माय॥ गयो पंथ दे दाहिनो दल में पहुंच्यो जाय॥
४४॥ भयो समर नृप करण सों तिन हूं रण अघ वाह
पेलि गयो चलि अगमनो जय को शंख वजाइ॥४५
जोजन तीनि गयो वली चलही कटक मकार॥ तहां
जुरो रण शकुनि सों संगम भयो अपार॥४६॥ भयो
कुला हल सोर है सुन्यो कछु नहिं जाय॥ सुन्यो शंख
नहिं पार्थ को धर्म पुत्र बिलखाय॥४७॥ चौपाई॥
पांचजन्य शब्द सुनि राई॥ मनहीं मन बिलखै अ
कुलाई॥ सत्य कि जादो पठयो तहां॥ संगम करत
पार्थ हो जहां॥४८॥ रथ चढ़ि धनुष वाण तिन लयो॥
प्रथम द्रोण गुरु आड़ो भयो॥ कह्यो वादि जादो रण
आयो॥ मैं ही तुव गुरु पार्थ पठायो॥४९॥ घटिक
चारिक संगम भयो॥ भूतल व्योम सरन छै छयो॥
दिशि विदिशा सूझे नहि नैन॥ सात्य कि कहि विप्र
सों वैन॥५०॥ सात्य कि उवाच॥ दोहा॥ जाहु विप्र भ
व भागि कै समर करत वे काज॥ जोन भगाऊं तोहि
हों तो गुरु पार्थ हि लाज॥५१॥ विषम वाण उर लगो
तही द्रोण गिरो अकुलाइ॥ जहां हुतो भूरि श्रव
ता ढिग पहुंच्यो जाइ॥५२॥ कोप्यो लखि भूरि श्र
वा कर लीनो दश वान॥ सात्य कि के तिनि उर हये सु

रथ।। भीमहि क्रोध भयो।।गुरु को रथ वीर उठाय लयो।। पठ
यो धरणी थल में जबही।। शर सों भगि विप्र गयो तब
ही।। ६४।। दोहा।। रथके बाजी भीम तब छिन हीमें संघारि।।
बढ़यो क्रोध पांडुसुत कुंवर सबही डारे मारि।। ६५।। कोपे
दुर्धर दुस्सह बल सुबल सुबाहु प्रचंड।। सोम कालिंग अ
घोष रथ जिन जीते बलवंड।। ६६।। भीम सेन रणको
पिंकै इक इक सर सब मारि।। और रथी रथ धीर रथ
डारे बहुत संघारि।। ६७।। चल्यो पूत रथ श्वान को वो
कवि कहे बखानि।। भागि चले बहु सूर गन जुरे न थि
न भटि आनि।। दंडक छंद।। श्रोनित सलिल माहि र
थनिके कोर से सोभ स्याम स्याम कपाल सिवार से हैं
विथे।। व्याल ते विशाल सुंड दंडनि की जाल जहां ग
ह से करीन के करन वर विशेखियें।। कच्छ पति रतिच
मे चक्र वाक चक्र रथ चामर पताका गत मीन अब
रेखिये।। पवन पूत क्रोध के समर सिंधु सो रच्यो रच्यो
फूलनि मराल वरा माग द्विज देखियें।। ६८।। दोहा।।
भूतल डारि महारथी आगें पहुंच्यो जाइ।। निरखि
शरासन बाण लै करण उठ्यो अकुलाइ।। ७०।। करण
उवाच।। जीते केतिक समर तें भीम कहां अब जाय।।
जीवन दुर्लभ जानि बस परयो हमारे आय।। ७१।। भीम
करण के उर हये सप्त बाण करि क्रुद्ध।। धनुष काटि र
वि पुत्र तब हृदे हन्यो सर सुद्ध।। ७२।। चौपाई।। पीरि त्रा
धरवि नंदन भयो।। कवच भीमको तब कटि गयो।।
धायो भीम उघरि अंग।। कीनो जाय तहां रण रंग।। ७३
रथ आरूढ़ पवन सुत भयो।। रवि सुतके उर मुष्टिका

दयो॥भूतल गिर सो उठि अकुलाई॥ मल्यो धनुष भीम सिर आई॥७४॥बार बार रिस सों रुक मारो॥ खैंच्यो काढ्यो बार कठोरो॥ भीम सेन को पौरुष गयो॥करण शक्ति अति व्याकुल भयो॥७५॥दोहा॥करि मुष्टि कुंती बचनकी भीम दयो मुकुराइ॥विलख वदन चलि पार्थ पै तबही पहुंच्यो जाइ॥७६॥देख्यो पौरुष पार्थ को तब कुरु नंदन राय॥सोलह सहस मतंग तहं दीनें तुरत पठाय॥७७॥भुजंग प्रयात छंद॥चले मत्त मातंग ते २ अरन आये॥मनो भूथली में महा मेघ छाये॥तहां पंडु के पुत्र चिंता भ्रमाये॥ससो वो हिये में महा त्रास २ लाये॥७८॥हिये सोच सोचे गयो नेम मेरो॥रह्यो आसरो है दया सिंधु तेरो॥सदा आप है दीन हीके सहाई॥परी भीर भारी सबै सो नसाई॥७९॥दोहा॥कही भीम सों पार्थ तब अब बल वंत सम्हारि॥कातर लों अति सिथिल तन कहा रह्यो हिय हारि॥८०॥यों सुनि गर्ज्यो सिंह ज्यों आकंपे मातंग॥विचलि चले मृग जूथ ज्यों सूखि गये सब अंग॥८१॥उठ्यो भीम बलिबंड तब बाढ्यो न पौरुष जाय॥एक बार दश सहस गज ऊरध दये चलाय॥८२॥सवैया॥एक रथी रथ मंत महा इक एक हतै वर वीर निषंगी॥तेउ जुरे नहिं आयुध लै जु हुते बल विक्रम सत्र के भंगी॥मत्त मतंग तजे नभ १ को विरच्यो रण भीम सदा रण रंगी॥पौनके चक्र में जाय परे सब व्है रहे अंग त्रिशंकु के संगी॥८३॥दोहा॥जेतिक गज ऊरध तजे फिरि भुव गिरे न आय॥सहस पंच गज दूसरे ऊरध दये चलाय॥८४॥लंक पौरि

अर्जुन सात्यकि अरु भीम सेन ये कुरु दल में धसकर
युद्ध कर रहे हैं भीम सेन ने १० हज़ार हाथी आकाश को फेंके

परते गिरे कछुक कंदरन मांझ॥सहस मतंग गदा हू ने जानि नीयरी सांझ॥८५॥दुरजोधन के अनुज तहं तीस हने बलवीर॥पैरत रथ जल लं... सलिल गंभीर॥८६॥हय हस्ती रथ भंजि कैं ...निदल बिललाय॥निदान जयद्रथ पार्थ तब पहुंच्यौ चलि ही जाय॥८७॥सूरसम निरख्यौ ...तब बार बार अकुलाइ॥उतहि जयद्रथ निशि चैहे निरखि निरनि रवि जाय॥८८॥दोधक छंद॥है जन को मन सोचत ऐसैं है रजनी चकई मन जैसे॥रैनि चैहे वह द्यौसहि चाहै यौं तिनके मन में मन माहै॥८९॥ताकत भानु जयद्रथ देख्यौ पार्थ तबै निज काज बिशेख्यौ॥अंजलि बाण ध्यनं जय लीनो॥ता छिन ही अरि को सिर दीनो॥९०॥दोहा॥उड्यौ बाण के संग सिर कौ कनि कहैं बनाइ॥परौ तासु पितु अंजुली निरखि गिरौ अकुलाइ॥९१॥चौपाई॥तबही सिर अंजुलि में गयौ॥ निरखत शोकवंत सो भयौ॥कौरव दल में अति भय भारी॥परे आय मुख नर अरु नारी॥९२॥हा हा कुरु नंदन अनु सौरे॥कोऊ कहू धीर नहिं धैरे॥पूरी पैज पार्थ की भई॥हरि अर्जुन शंख ध्वनि ठई॥९३॥इति श्री महाभारत पुराणे विजय मुक्तावल्यां कवि छत्र बिरचितायां जयद्रथ बधन अर्जुन विजय वर्णनो

नाम षट् त्रिंशोऽध्याय:॥३६॥०॥

दोहा॥जबै जानि जयद्रथ हत जोधन ह्वै क्रुद्ध॥सुर तहि रथ ऊपर चढ़ौ चल्यो जुद्ध को जुद्ध॥१॥सुंदरी छंद॥सूर छिप्यो तम रैनि भई तब॥गाजि महा रथ संत

सेन चल्यो अकुलाइ ॥ काहू पासन राख्यो जाइ ॥ नृ-
पति विराट तीस सर हयो ॥ इन करि क्रोध सरासन
लयो ॥ १४ ॥ तीन बाण गुरु के उर मारे ॥ काटि पता
का अरु ध्वज डारे ॥ एक बाण उरमें तव हयो ॥ ला
गत द्विज व्याकुल व्है गयो ॥ १५ ॥ दोहा ॥ वहुरि स

द्रोणाचार्य्य ने राजा विराट के माथे में तीर मारके गिरा दि-
या दोनो सेना में युद्ध

म्हारो द्रोण गुरु सायक हन्यो लिलाट ॥ वासलयो ह-
रिलोक तव जूझ्यो भूप विराट ॥ १६ ॥ जवही कुवि ध्या
नी गिर्यो कर वर गहे कृपान ॥ रोको द्रुपद नरेश गुरु
लैहिन आगे जान ॥ १७ ॥ सहदेव धायो नकुल पार्थ जु-
धिष्ठिर आप ॥ जग मंडल नव खंडमें जाको अमित
प्रताप ॥ १८ ॥ त्रोटक छंद ॥ चहुं ओरनितें गुरु घेरि
लियो ॥ तव देखत ही वहु रोष भयो ॥ सव के उर में व-
हु बाण हने ॥ मुरझाय गिरे कवि कौन भने ॥ १९ ॥

अर्जुन उवाच॥जग वंदन दे सिख मोहि ऐवे॥रणजीत हि ज्यों बर आजु सबै॥तुमही विपदा सब छम हरी॥ मन की बहु पूरण आस करी॥२०॥सवैया॥त्रिभुवन ईश जगदीश सों कारन जोरि नाय नाय सीस पार्थ बंदना महा करी॥कोटि कोटि कोटि कोटि संकट अनेक भांति भांति जनन की आपदा सबै हरी॥भारी भारी भीर भाव जहां जहां जानी भय तहां तहां पैज काहूं सेवक की नाहरी॥अमित अपार बल संतन के रखवार गावत निगम नव कीरति धरी धरी॥श्रीकृष्ण उवाच॥नाराच छंद॥तजै कृपान बाण द्रोण पुत्र जो मरो सुन्यो॥कोटि धीं विशाल शोक दुःख होहि सो गुन्यो॥सरोष भीम सेन आज हाथ जो गदा धरै॥तुरंत द्रोण पुत्र नाम को मतंग संघरै॥२२॥दोहा॥अश्वत्थामा नाम गज हन्यो भीम करि कोह॥द्रोण होय विह्वल सुनत बढै हिये बहु छोह॥२३॥बैन जुधिष्ठिर नृप कहै तवही विप्र पत्याइ॥तजै सवाल आयुध सुनत अति विह्वल ह्वै जाइ॥२४॥द्रुपद पुत्र धृष्टद्युमन तवही काटै शीस॥यह उपाय करि जीति हो बोले त्रिभुवन ईस॥२५॥ तुरत अश्वत्था हन्यो भीम सेन तिहि बार॥हन्यो द्रोण सुत पुत्र मैं अब कत गहै हथ्यार॥२६॥द्रोण नही रण को तजै बैन सुन्यो न पत्याय॥तो मानै मन बचन क्रम कहै जुधिष्ठिर राय॥२७॥तबै प्रचारो धर्म सुत काहि गुरु तजै कृपान॥बंधुन हित बोल्यो तबै भूपति बुद्धि निधान॥२८॥जुधिष्ठिर उवाच॥समर अश्वत्थामा हन्यो भीम सेन सुनि विप्र॥नर नाग कुंजर हत्यो क-

ही नृपति यह छिप्र॥२९॥त्रोटक छंद॥यह बैन सुन्यो गुरु द्रोण जहीं॥बहु व्याकुल ह्वै गिरयो भूमि तहीं॥सम मावत कौरव सो नसु नै॥बहु व्याकुल ह्वै द्विज सीस धुनै॥३०॥सोरठा॥तब गुरु तजे कमान धृष्टद्यु

म्न अवलोकि कै॥सिर काट्यो तिहि बार धर्म पुत्र की जय करी॥३१॥दोधक छंद॥दुरजोधन को दल दुच्चि ताई॥भोंपे छत्र कही नहिं जाई॥बुद्धि थकी सुधि की गति थाकी॥व्यास थकी मन में नृप ताकी॥३२॥दोहा॥धर्म पुत्र जय रण भई गहरे बजे निसान॥काहो चमू पति कारण तब दुरजोधन दे मान॥३३॥इति श्री महा भारत पुराणे विजय मुक्ता वल्यां कवि छत्र विरचितायां द्रोण गुरु वधनो नाम सप्तत्रिं १

णो ८ध्याय:॥३१॥इति द्रोण पर्व्व समाप्तम्॥अथ कर्ण पर्व्व कथनं॥सोरठा॥दल पति कीनो कर्ण दुर्जोधन अपने सुमन॥जन जनको दुख हर्ण घट दरशनको कल्प तरु॥१॥दोहा॥चढ्यो कर्ण रण धीर तब कार्ली ने अनुवान॥सुर नर गण के तासु की पट तर नांही आन॥२॥शल्य कियो रथ सारथी पारथ जीतन काज॥साल धर्मीलहि मन चढे लै संग शकुनि समाज॥३॥दुशासन रक्षक भयो कर्ण संग सुख पाइ॥जूथ जूथ सैना चली गरजि निसान वजाइ॥४॥अर्जुन अर्जुन कहत भट आए रण गल गाजि॥बांधि लेउ वर आजुही जानन पावे भाजि॥५॥सजे कवच सन्नाह तन वाण शरासन हाथ॥वीर दुशासन आदि दै सव आये इक साथ॥६॥भीम दुशासन देखिकै परम क्रोध सों धाय॥धरिकै पटको भूमि पर दै गीवा पै पाय॥७॥भीमसेन उवाच॥सवैया॥है कोउ दोऊ दलमें समरथ्य दुशासन कों वर आनि छुडावै॥रे कुरुनंदन रे रवि नंदन जे करि सो तौपै वनि आवै॥हरषनं रण रोवत देखत जूह कौ सव यों मन भावै॥ काल हुते उवरै भजि जीवत जीवत सों भजि जानन पावै॥दोहा॥है दल में समरथ्य जो याको लेहि छुडाइ॥ पाछें कहिहो वल कला देखत राजा राइ॥८॥शंख ध्वनि होत तवक री नत छिनहीं अकुलाइ॥वचन भीम को पार्थ सुनि तवहि जुधिष्ठिर राय॥१०॥ कौरव दल काहू ना कह्यो लीनी भुजा उखारि॥केहरि ज्यों मृग को उदर त्यों उर डार्यो फारि॥११॥सवै

या ॥ ज्यौं रघुनाथ हन्यो रण रावण जंभ किधौं सुर रा-
ज पछार्यो ॥ राघव वीर वध्यो वाणासुर [illegible] दा-
रुण समूल प्रहार्यो ॥ कै त्रिपुरारि हन्यो हर [illegible] र-
र्यो हिं वाण उरस्थल फार्यो ॥ ऐसेहिं भीम दुशासन
मारि तवै मन को वह रोस निकार्यो ॥ १२ ॥ कोपि कें
वीर वली वल सों सु दुशासन है दल वीच संघार्यो
केहरि ज्यों मृग दौरि दल्यो सुरराज किधौं भुव प-
र्व्वत फार्यो ॥ ज्यों हनुमंत वली वल सों महि राव-
ण को भुज मूल उखार्यो ॥ त्यों नरसिंह सक्रोध भ-
यो हिरनाकुश को जु उरस्थल फार्यो ॥ १३ ॥ दोहा ॥
मन भायो करि फारि उर रुधिर अंजुली चारि ॥ अं-
चै भीम प्रफुलित भयो मन को रोस निकारि ॥ १४
और रुधिर भरि अंजुली लैकें पहुंच्यो धाम ॥ जाय
न्हवाई द्रौपदी सव पूजे मन काम ॥ १५ ॥ सोरठा ॥ जास
है जीवन मूरि इहि पुर अरु उहि पुर सुखी ॥ ते सव-
कै हैं धूरि द्विज द्रोषी अरु अपजसी ॥ १६ ॥ ब्याल ब-
से जिहि गेह पर दारा रति जे पुरुष ॥ निश्चय जानें
एह मृत्यु माहि संशय नहीं ॥ १७ ॥ छै पर तरुणी वीर
सव जग मे अपजस लियो ॥ मर्यो दुशासन वीर दे-
खत सकल महारथी ॥ १८ ॥ द्रुपद सुता तव रुधिर
न्हवाई ॥ रण मंडल सो पहुंच्यो जाई ॥ नकुल शकु-
नि सों रण भयो घनों ॥ जुरे असुर अरु सुर पति म-
नों ॥ १९ ॥ वाणन मारि शकुनि खिन्चायो ॥ विध्यो
उर वर भूमि गिरायो ॥ मरत शकुनि कुलाहल भ-
यो ॥ हाहा शब्द सकल दल कयो ॥ २० ॥ दोहा ॥ भ-

यो द्रुपद अरु कर्ण सो अतिगति करि संभ्रम॥
जूके भट द्वै सेन के वर्णि सकै को नाम॥२१॥ कर्ण
द्रुपद नरनाथ को उर मारे दश बाण॥ कौन कहै ति
न धरनि धुकि तत छिन छांडे प्रांण॥२२॥ दंडक
छंद॥ धीर तजे वीर सबै व्याकुल शरीर ह्वै कै संभ्रम
गंभीर वीर कर्ण सो महारथी॥ सूर कहलाने दह
लाने दल दीरघ जे हाथी हहलाने संक जाय को
न पै कथी॥ जत्र तत्र सत्र दाह दुर्घट विकट भट का
टि काटि कीने काल दंड लोक को पथी॥ काहूं ढेर अ-
श्व काहूं पायक पताका रथ काहूं गिरे रथी काहूं मा-
हि गिरे सारथी॥२३॥ दोहा॥ कर्ण पराक्रम को क-
ह्यो नहीं सुरो को जाय॥ कटक त्रास उर जानि कै
रुप्यो पार्थ रण आय॥२४॥ इति श्री महाभारत प
र्वणो विजय मुक्तावल्यां कवि छत्र विरचितायां दुश्श
सन शकुनि राजा द्रुपद वध वर्णनो नाम अष्ट त्रिं
शो ऽध्यायः॥३८॥

त्रोटक छंद॥ रवि नंदन पार्थ जुरे रण में॥ बहु क्रोध दु-
हूं जन के मन में॥ अति संभ्रम सो कवि कौन कहै॥
सर जालन को तहं पौन बहै॥१॥ धर ऊरध बाणन
छाय लयो॥ छपि सूर तहां तम छाय गयो॥ अति अ
द्भुत विक्रम कौन कहै॥ सुर वेलखि लाखनि भूलि रहै
२॥ दोहा॥ बाण चले दुहु वीर के जे जन एक प्रमान
वैसे वेई युद्ध को पटतर नाहीं आन॥३॥ अस्त्र शस्त्र
सो परस्पर समर रचत दोउ वीर॥ जुरि जुरि क्यों हूं न टु-
तनहिं दोऊ रन रण धीर॥४॥ आयो वासर तीसरो कौ

भीमसेन ने दुश्शासन की एक भुजा उखाड़ डाली और उसका पेट फाड़ रुधिर से अंजुलि भरि पीलीनी और नकुल ने शकु-
नि का पेट फारडाला॥
भीमसेन
नकुल
मल्लयुद्ध
नकुल
द्रुपद
द्रोपदी
भीम

हू रण उमंगैन॥सुर असुरनि यह कर्म काहु सुन्यौन देख्यौ
नैन॥५॥तब छांड्यौ तब सल्यो सेन परे बहु जानि॥
मंडलीक कीनो धनुष थकेन केंहूं पानि॥६॥रह्यौ
कारण केसून में बाण ह्वै गयो ब्याल॥धर्यो धनुष व-
ल वंड सो छांड़ि दयो उताल॥७॥दोधकछंद॥आव-
त सो अहि श्रीहरि देख्यो॥पारथ कालहिये मह लेख्यो॥
दाबि कियो तबही रथ नीचो॥सीस वच्यौ लहि सूक्षम
वीचो॥८॥वतटि किरीट हिले गयो सोई॥सेन समूह
त्रसे सब कोई॥फेरि सो ब्याल सरोषत धायो॥कर्ण-
निकेत तबे चलि आयो॥९॥सर्पउवाच॥दोहा॥नि-
ज अरि मोरो पार्थ है कारण सो युद्धि निदान॥हनों श-
त्रु तुम मोहि जो करि कें छांड़ो वान॥१०॥कर्ण उवाच॥
हौ समरथ पार्थ हि हतें चाहौं नहीं सहाइ॥कह्यौन
मान्यो सर्प का वह करि थको उपाइ॥११॥चौपाई॥र
काटका मुकट पारथ विस भयो॥स्वरूप बाण धनु जो
जित कयो॥बल करि रवि नंदन सिर हयो॥टोपा का-
टि पार सो भयो॥१२॥दोऊ रोष वंत वर वीर॥कारत जु-
द्ध नहिं भ्रमित शरीर॥तजत तन रण सिर छूटे केश॥दो-
ऊ घोर असुर के भेश॥१३॥गीतिकाछंद॥शल्य सो नृ-
प कारण भाख्यो कौन रथ वर वाहई॥सुनत सारथि
रोष कीनो भूमि अब वैरिनि भई॥गिले रथ के चक्र
धरनी ..... ह्वै चलि ना सकौ॥बार बार अशेष उ-
द्यम किये सो करि के थकौ॥१४॥श्राप पूर्व जन्म दी-
नो विप्र ..... पाय कें॥गिले रथ के चक्र धरनी र-
ह्यौ संभ्रम छाय कें॥कवच कुंडल इंद्र लीने बाण कुं

ती सैं गई ॥ भई वैरिनि मेदिनी चिंत कर्ण के चिंता भई ॥ १५॥ कर्ण उवाच ॥ दोहा ॥ छत्री धर्म विचारि उर छिन इक समर निवारि ॥ सुन्यो पार्थ जौं लौं रथै भुवतें लेहु निकारि ॥ १६॥ श्री कृष्णोवाच ॥ सवैया ॥ पौन को पूत बहाइ दयौ जल भोजन मांझ हला हल डार्यो ॥ सुरभी हरी जब भूप विराट की जाय तहां बहु सां करोधा कर्यो ॥ धरीन कछू मर जाद की बात जबै सुत धर्म को देश निकार्यो ॥ द्रौपदी को खल चीर गह्यो तब पाप कियो तुम धर्म विचार्यो ॥ १७॥ दो॰ कौरं निहोरो क्यों जियो तातें कीजे जुद्ध ॥ ज्यौं पावक में घृत जले भयो कर्ण अति क्रुद्ध ॥ १८॥ कोपि सरा सन कर लयो चले कर्ण के बाण ॥ हनत पार्थ मोह्यो महा भूतल पर्यो निदान ॥ १९॥ घल करि काढ्यो कर्ण्य रै भुवतें रथ म विलास ॥ बहुरि वृष्टि सर की करी छायो धर आकाश ॥ २०॥ दोधक छंद ॥ चेत सही उठि पारथ धायो ॥ कर्ण लख्यो नियरो जब आयो ॥ सारथि सों विनवै तब ऐसें ॥ हांकि रथै रण जीतहुं जैसें ॥ फेरि धरा रथ चक्र गिल्यो है ॥ सो बर ठेलत हून हिल्यो है ॥ बारहि बार महा कर कोर्यो ॥ भूमि हली ॥ अहि को सिर डोर्यो ॥ २२॥ पारथ क्रोध कियो बहु ताही ॥ बाण हयो रिपु के उर माही ॥ झुकि पर्यो रवि नंदन ऐसें ॥ वज्र हन्यो सुरने गिरि जैसें ॥ २३॥ चामर छंद ॥ हाय हाय जत्र तत्र ह्वै रही जहां तहां देव लोक औ भूलोक मैं कर्ण सो रथी कहां ॥ सैन ता विनाश भयो औरव [illegible] दीनता ॥ अंध पुत्र भो महा विशेष

दुःख कर्णो नको ॥२५॥ दोहा॥ भागि चले सब सूर गण क-
र्ण परो रण देखि॥ दुरजोधन तब आपनी मृत्यु गिनी
मुचिंत लेखि॥२५॥ अहंकार जुत जब कह्यो दलपति श-
ल्य जुझार॥ पाय रजायसु वेगिही कोपि कह्यो किरवार
॥२६॥ सोपि गयो दिन कार जहां कर्ण परो रण देखि॥
रोदन करत गंधर्व सब सुरसो केस विसेखि॥२७॥

अर्जुन ने कर्ण को युद्ध में मारा और कर्ण के रथ के पहिये भूमि में ग-ड़ गये
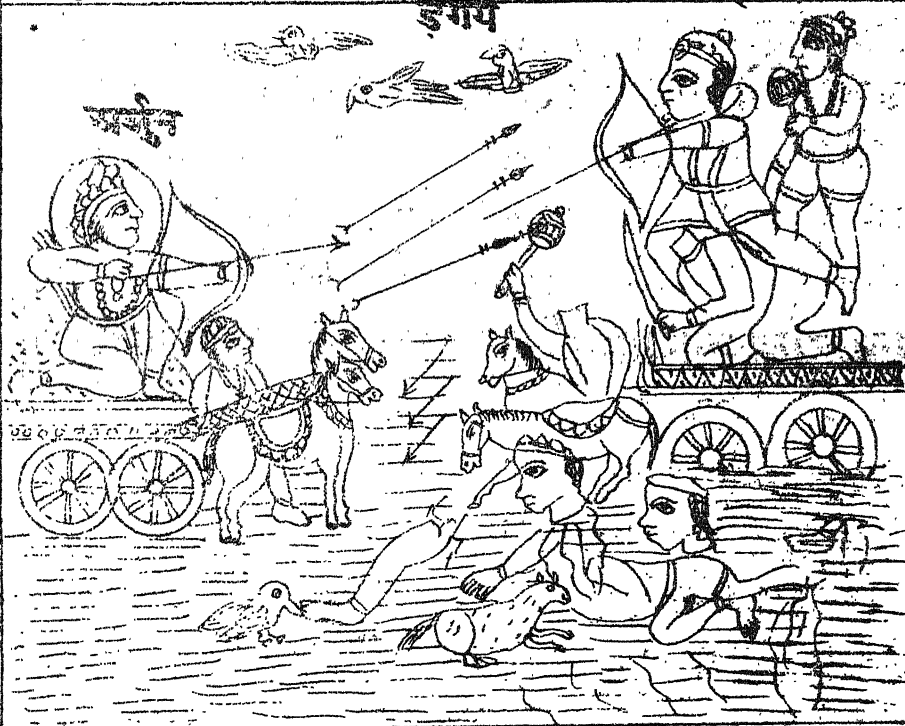
नैन हीन अंबुज वदन जोवन त्रिया सिंगार॥ त्योंही
कौरव हीन दल को कहि थंभन हार॥२८॥ चंद विना
रजनी रजनी पति रैनि विना दुति मंद अनैसे॥ नीर
विना सर नैन विना नर धाम धनी विन देखिय जैसे॥
नीर विना मुक्ताहल सो अरु दीप विना रजनी तम जै-
से॥ त्योंही सिंगार विना युवती नृप कर्ण विना दल ला

गतैसो॥२९॥दोहा॥पर्यो देखि नृप कर्ण को विप्र रूप धरि आय॥दुर्बल अतिहि है कें वाह्यो नृपति कर्ण सों जाय॥३०॥चौपाई॥दारिद्र दुहि बहु भांति सतायो॥जाचन तोहि इहां हौं आयो॥कर्ण सुन्यो जगमें बड़ भागी॥ ताको चित्त भयो अनुरागी॥३१॥कर्ण उवाच॥पाहन लेवार विप्र सयानें॥मेरद भंजन संकन आनें॥वेगि वोरी यह वारन लावहु॥लै सोइ कंचन धाम सिधावहु ३२॥श्री हास्य उवाच॥दोहा॥साधुसाधु तूकरन नृप पट तर दीजे काहि॥तोसो तुहीन दूसरो जगमें कोउ न आहि॥३३॥कर्ण उवाच॥विप्रन हित कंचन दियो सुनियो विप्र समान॥निज त्रिय रति जोवन गयो स्वामि काज्जये प्रान॥३४॥आदि अंत जाको नहीं सव जग व्यापक आय॥भई सकल मन कामना तिनको दरसन पाय॥३५॥श्लोक॥श्रापा युक्ता स्तदा कस्मी यत्र कर्णो रणे हतः॥जीवकर्ण महसेन यो दत्ते का स वो पुनः॥३६॥वृद्ध ब्राह्मण रूपेण कस्मस्तु स्वय मागतः॥विप्राहं कर्ण राजेन्द्र दारिद्रं बहु व्यापते॥३७॥पाषाणं महणं विप्र दंत भंजयते मम सवा भार सुवर्ण च यथात्वं रण उच्यते॥३८॥ श्री कृष्ण उवाच॥साधु साधु महावाहो सर्व शास्त्र विसारद॥दातार सम कर्णस्य पृथव्यांन प्रजायते॥३९॥कर्ण उवाच॥विप्रार्थेन धनं क्षीणं स्वदारा रति तपौ वनं॥स्वामि कार्य्यं गता प्राणा अंत काले जनार्द्दनम्॥४०॥दोहा॥कर्ण पर्यो छिन तीसरे जब वीते हैं जाम॥समर भूमि उद्यत भयो

शल्य कियो संग्राम ॥ ५८ ॥ इति श्री भारत पुराणे विजय मुक्तावल्यां कविछत्र विरचितायां कर्ण वीर संमोहनो नाम ऊनचत्वारिंशो ध्यायः ॥ ३९ ॥

इति श्री कर्ण पर्व समाप्तम ॥ अथ शल्य पर्व कथनं म ॥ दोहा ॥ शल्य सूर नृप आ रहो कर लीने धनुवान जीत्यो चाहत शल्य को साजत समर विधान ॥ १ ॥ द्रोण कर्ण भीषम हुते बर ॥ जिन वार अनंत ॥ जीत्यो चाहत शल्य रण आसा वहु वलवंत ॥ २ ॥ दोहा ॥ छंद ॥ १ अर्जुन को रथ वायमि आयो ॥ सेन घनी वल को विचारयो ॥ धूरि उडी उडि अंबर लो प्यो ॥ शल्य तहां जमि कै पग रोप्यो ॥ द्वै दलमें नहिं सूझत कोऊ ॥ सन्मुख १ जुझ जुरे भट दोऊ ॥ सूर घनो करि पौरुष जूझत ॥ काहू की कोउ वात न बूझत ॥ ४ ॥ दोहा ॥ जरा संध को पुत्र तव दुरा संध तिहि नाम ॥ सहित आपने सेन सों चरि परो संग्राम ॥ ५ ॥ दुरा संध जूझो लख्यो नकुल १ पर्ज गो वीर ॥ हन्यो सुशर्मा क्रोध करि जूझि परो रण धीर ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ नृपति युधिष्ठिर कोप्यो आप ॥ जा को जग में वडो प्रताप ॥ असुर हिडंव आप कर हयो ॥ विना जीव परि भूतल गयो ॥ ७ ॥ एक घरी दिन लगि रण करयो ॥ भूप युधिष्ठिर सों संघरयो ॥ दोउ पवन पूत वलिवंड ॥ कीनो तिन संग्राम अखंड ॥ ८ ॥ छप्पै ॥ सहरहने रण धीर हने रथ वंत धीर अर ॥ काहू हने गज राज गिरे कटि कुंभ चरण धर ॥ गिरे सारथी काहू अश्व गिरे कहूं छत्र चमर धर ॥ कहूं गिरे ध्वज दंड काहू धर हर पायक नर ॥ वीस कुंवर कौरव तहां भीम हने वर

संचरे॥काटि दयो श्रन वारहि ज्यों [illegible] तपरे॥८॥दोहा॥सब कौरन तिंं ध्यान मैं हने भीम ब-
लवंड॥दुरजोधन रह्यो बच्यो भौ संग्नास [illegible]॥१०
सहदेव अरु शल्य सों संग्नम भयो अपार॥दोवर
नै विधि परस पर करत अमित संग्वार॥११॥चौपाई
सहदेव कर असि वर लयो॥शल्य सारथी तव तिनि

सहदेव ने शल्य सारथी को मारा भूमि में गिर कर के गिर पड़ा
और घवराके सेना भागी

हयो॥तोको रथ अरु हने तुरंग॥कीनो घाउ शल्य के
अंग॥१२॥मारो सीस टूटि धर पर्यो॥दुरजो धनयुत
रथ रह्यो॥भजे शेष भट आयुध डारि॥किते च-
ले भट हियरा हारि॥१३॥दोहा॥कुरु नंदन तिहि थ-
र रह्यो निपट अकेलो आप॥हती चमू चतुरंग स-
व जाको अमित प्रताप॥१४॥छप्पै॥छप्पन जोज-
न छत्र छांह जाकी धर मंडहि॥दुर्गम दुसह दुरंत।
अदंडनि बल वारि दंडहि॥बंधु कुटंब असेष सकल

किंकर चहु ओरहि॥सब जग अमित प्रताप ताप छ-
त्रिन छिति छोरहि॥बहु छत्र चौर गज वाजि रथ
दल वर दीरघ पेखिये॥सोई भूमिभूपकुरुराज सा॥नि-
पट अकेलो देखिये॥१५॥सोरठा॥होनी होय सो
होय नही मिटावै दुष्मसो॥ताते जग सब कोइ शं-
सय चिंतन आनिये॥१६॥जोरच्यो कर तार सोई
सोई है रहै॥यहे बात सब सार मूरख जो संसा करै
१७॥इति श्री महाभारत पुराणे विजय मुक्तावल्यां
कविछत्र विरचितायां सुशर्मा शल्यवधो नाम च-
त्वारिंशोऽध्यायः॥४०॥इति श्री शल्य पर्व्व समा प्ता-
म॥अथ गदा पर्व्व क-
थनम॥चौपाई॥राजा निपट अकेलो भयो॥मंत्र जप-
न जल भीतर गयो॥जपन चारि घटिका जो पावै॥
तो अपने सब सेन जिवावै॥१॥यह सुधि पाये पंड
व धाये॥जल मैं भूप हुतो जहं आये॥कहो कहां दु-
रि कुरु पति गयो॥सो नहिं हमैं सामुहे भयो॥२॥भी-
मसेन उवाच॥दोधक छंद॥तो लगि के निकाभूप-
ति आये॥नाम कछू नहिं जात गनाये॥ताथल जूझि
परे सब तेई॥छत्री जे वल वंत हु तेई॥३॥तो उरहै इ-
तनो डर पैठो॥तू दुरिकैं जल भीतर वैठो॥क्षत्रिय
धर्म विचारि हिये मैं॥सोच कछू नहिं आप किये मैं
४॥जो भजि वीर पता लहि जाई॥तौन वचै अब मो-
पहं भाई॥भूमि पताल संघारों तोही॥शपथ मही
पति पंडु को मोही॥५॥दोहा॥हने वीर निन्यान वे
तू तात उवरे भागि॥जो लगि तोहि हनो नहीं न कैन ता-

मत आगि॥ ६॥ चौपाई॥ पंडु सुतन में तोहि जो भावै॥ सो ई तोसों रण को आवै॥ जोई आयुध रुचिर धरिहै॥ ता- ही मों सो तासों लरिहै॥ ७॥ अब जो क्षत्रिय धर्म न गा- हिहै॥ सब जग में उपहासहि सहिहै॥ सुनत बैन भूप तिपर जर्यो॥ ज्यौं घृत मांझ हुता सन पर्यो॥ ८॥ रोषवं त केहरि सो काढ़्यो॥ रोष देखि भीमहि उर बढ़्यो॥ वज्र पात सम मुष्टिका मार्यो॥ कौतुक देखत बंधव चार्यो॥ ९॥ नगस्वरूपिनी छंद॥ सरोष ह्वै दुहूं जुरे॥ न भांति भां तितें मुरे॥ अशेष जुद्ध साजहीं॥ न रोष छांड़ि भाज हीं॥ १०॥ दोहा॥ गिरो वार दश भीम शुकि मोहि मोहि वल वंड॥ सप्त वार भूपति गिरो करि संग्राम अखंड ॥ ११ कोऊ वीर कोरै नहीं भूपर गिरे प्रहार॥ भिरत अ मित गति को कहै ताररण को विस्तार॥ १२॥ दुरजोध न उवाच॥ सुंदरी छंद॥ ढीठ भयो तू कत रण ठानत मोहि न तू अपने उर आनत॥ बालक मारि कितो व ल बोलत॥ कै यह विक्रम फूल्यो डोलत॥ १३॥ जीव त कों उवरे अब मोपै॥ जुद्ध करो बनि आवि तोपै॥ बंधव तेरे इ तोहि सराहत॥ भांतिन भांतिन तो मुख चाहत॥ १४॥ डारि गदा भगि जायन कों अब॥ जीव त छांड़ों न तोहि इहां जव॥ है मैं हारि न कोऊ मान त॥ भांति अनेकनि जुद्धहि ठानत॥ १५॥ दोहा॥ हि यहासो तव पवन सुत विलखे बंधव चारि॥ फेरि म्हासो देह तिन जब मुकि कह्यो मुरारि॥ १६॥ भीम सेन उवाच॥ सकल देव नर देव के जो पीछे दुरि जा य॥ तऊ न छांडों तोहि हों कोटिक करो उपाय॥ १७

सेन दई श्रीकृस्न तब भीमहि चितवत जानि॥तब सि-
माय कै उठि चल्यो ठोकि जंघसों पानि॥१८॥चामर
छंद॥सेन जानि भीमसेन जंघ मैं गदा हनी॥मोहि
मोहि भूमि मैं गिरो सु भूमि को धनी॥बिगि दै मही-
प धर्म पुत्र पास आइयो॥देखि देखि मोथली अंदे-
ष दुःख पाइयो॥१९॥राजोवाच॥छप्पै॥जा भुज भी-
षम करण द्रोण भग दत्त सुशर्मा॥दुशासन दै आदि
बंधु सब अद्भुत कर्मा॥देश देश के भूप दास निसि-
शंका मानत॥दुरजोधन पग परसि आपनी जीवन
जानत॥निशि दास छत्र छाया चलैं तेज अमित गति
पेखियै॥२०॥भूमि भूमि भूपति गिरो सो कोउ साथ न
देखियै॥२१॥दोहा॥सेत छत्र करि छिन्न कहि तन्यो जु-
धिष्ठिर सीस॥बहुत बिसूरे कृस्न को मुख चाहो अ-
वनीस॥२२॥राजोवाच॥चौपाई॥हुतो सबल दल सो
कित गयो॥भूपति बिनवै बहु दुख छयो॥रथी अ-
ति रथी सूर अपार॥कित गयो साहन सब परिवार॥
जिन तृण करि मेरो दल लेख्यो॥छिति पर कोऊ शत्रु
न देख्यो॥जाके डर पर घर घर हलो॥सोई भूप अ-
केलो पर्यो॥२३॥जाको छिति सब जोरै हाथ॥सो भु-
व पर्यो न कोऊ साथ॥यहि बिधि धर्म पुत्र दुख छा-
ये॥भीम आदि सब बंधव आये॥२४॥भीमसेन उ-
वाच॥दोहा॥कत दुख कीजै भूप अब छत्री धर्म बि-
चारि॥पाय २ तुव आय सो डारो कटक संघारि॥२५
हम चूके सेवक नहीं आयसु मान्यो सीस॥गुरा औ
गुरा जो बनि गयो तव अज्ञा अवनीस॥२६॥चित्रवा

सो पिरिस्थल नको भूप जुधिष्ठिर राय ॥ पहुंचे तहं वल भाद्र तव भूपति के ढिग जाय ॥ २७ ॥ गीतिका छंद देखि दुरजोधन परयो भुव जंघ घाउ विलोकि कैं ॥ जानि जुद्ध अधर्म को वहु चित्त मांझ ससोकि कैं ॥ है गदा के जुद्ध को यह धर्म चित्त विचारि तो ॥ अर्द्ध तन कटि कें परयो सो स्वप्न हूंतहि मरितो ॥ २८ ॥ व्योम भूमि पताल भीमहि हौं नहीं अव छंडिहौं ॥ आजुही वल आपने हठि सर्व गर्वनि खंडिहौं ॥ वाडवानलसो उठो करि क्रोध वहु दुख पाय कें ॥ अतिरोषवंत विलोकि श्रीहरि यो कह्यो ढिग आय कें ॥ २९ ॥ श्रीकृस्नउवाच ॥ द्रौपदी तव सभा आनी कर्म कर्कस नृप कियो जंघ तोरि मारि कें यह नेम भीम तहां लियो ॥ ताहि त हूंण सन संघारयो आपनो पनु पारियो ॥ हति शत्रु वलन्ही जीवके इन सर्व शोक निवारियो ॥ ३० ॥ दोहा ॥ सम साधे वहु भांति करि सुनि वल भद्र सो वात ॥ कुरु नंदन अपराध की साधि करि कारि पछि तात ॥ ३१ ॥ करी विदा वल भद्र की उर को क्रोध निवारि ॥ वंधव पांचो संग लै निज थल चले मुरारि ॥ ३२ ॥ एक छोहनी दल वच्यो धर्म सुवन को साथ ॥ रथ चढ़ि चारों वंधु जुत तवै चले नर नाथ ३३ रैनि भये धृष्टद्युमन निशि सत्यो सुख वीर ॥ द्रुपद सुता के पांच सुत सूते अमित शरीर ॥ ३४ ॥ इति श्री महाभारत पुराणे विजय मुक्तावल्यां कवि छत्र विरचितायां गदा जुद्ध दुरजोधन वध वर्णनो नाम एकाचत्वा रिंशो ऽध्यायः ४१

॥ दोहा ॥ सूत्यो जान्यो कटक दल

नंद घोष रथ पाइ ॥ दूरि गये लै हाक्स तब पंडु पुत्र सु-
ख पाइ ॥१॥ उतरे रथतें अनुज जुत तबही भुव भर-
तार ॥ धसत कृस्न रथ लें सबै उठी अगिनि की ध्वार ॥२
नंद घोष जरि भस्म भो कह्यो न कौतुक जाय ॥ यह ल
खिकैं पंचो अनुज संभ्रम रहे भुलाय ॥३॥ श्रीकृस्न
उवाच ॥ भीषम गुरु अरु करन किसानि दयो रथ जारि ॥ या
को अब पर भाव सुनि प्रगट्यो भेद मुरारि ॥४॥ चौपा-
ई ॥ जौलगि हौं रथ ऊपर रह्यो ॥ तब लगि सो बान निन
हिं दह्यो ॥ जबहीं धसि भुव ऊपर आयो ॥ नंद घोष ति
नि सरनि जरायो ॥ हरि चरित्र तिनि ऐसो देख्यो ॥ बर-
न्यो जायन अद्भुत लेख्यो ॥ दुरजोधन जहं रसा में परौ ॥
द्रोण पुत्र तिहि थल पग धरौ ॥५॥ अस्वथामा उवा
च ॥ दोधक छंद ॥ आयसु दै कुरु नंदन मो कों ॥ दृष्ट ह
नो [illegible] है सुख तो कों ॥ पैज करी इहि भांति भनैं सों ॥
पार्थ जुधिष्ठिर कौन गनैं सों ॥७॥ सिन रह्यो सोइ आज
संघारों ॥ बंधव पांच तुरंत हि मारों ॥ जीवत मोहि परे
सुख सोवैं ॥ आजु सबै जम को मुख जोवैं ॥८॥ चामर छंद
पंच बंधु मारि आज पंच सीस लाय हों ॥ तबै महीप तो
हि मुख [illegible] कृपाल [illegible] ॥२
[illegible] दली [illegible] चित्त मां
कों ॥ [illegible] पिता को आजु [illegible]
[illegible] ॥ और हनौं बर पंडु सुत धृष्टद्युम्न को मारि ॥
[illegible] ॥ अद्भुत
रूप सिसु बाल चित्त में ध्यान धरिहौं ॥ [illegible]
[illegible] दरि कै [illegible]

औरै पिता कों॥१०॥दोहा॥चलि सो पहुँचो दल निकट२ द्रोण पुत्र जुत क्रोद॥पुरुष एक ठाढ़ो भयो तासों कीने जुद्ध॥११॥ताहों अश्वत्थामा महा है घटिका संग्राम॥बहु सन्तुष्ट कियो सुन्दर तब कीनों विश्राम॥१२॥चौपाई॥तब तिहि पुरुष दयाबहु करी॥मांगि मांगि यहि विधि अनुसरी॥जोई वर तेरे मन भावे॥मागत ही सो मोपे पावे॥१३॥अश्वत्थामा उवाच॥वीर अबीर सबै अरि मारों॥पंडु सुतानि जुत भट संघारों॥यहै दया करि

अश्वत्थामा रात्रि में पांडवों के मारने को गया और वहां शिव एक बड़े पुरुष का रूप धर उसे रोका तब दोनों में

युद्ध हुआ
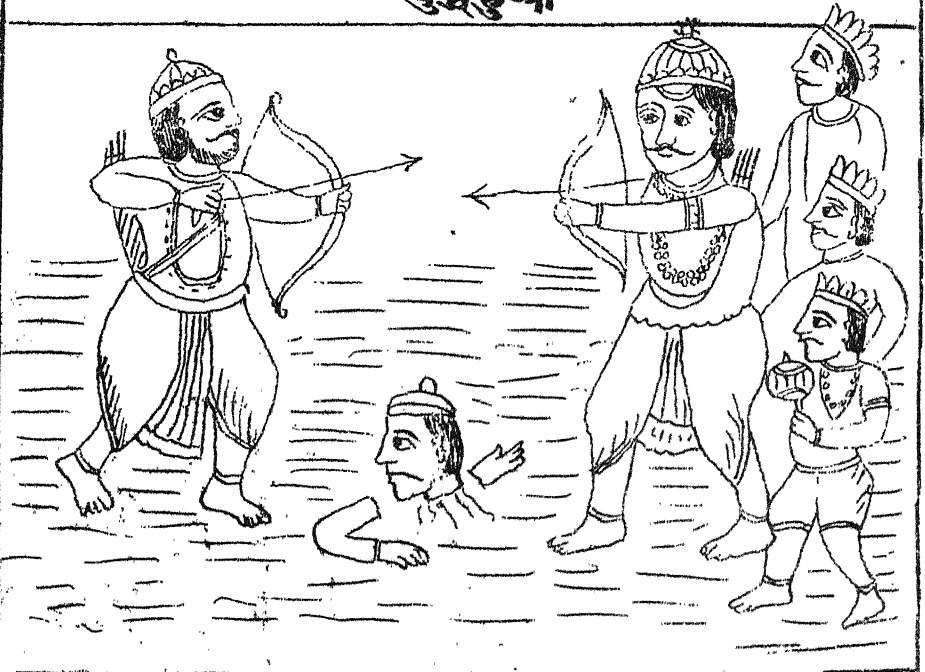
के वर दीजे॥परम अनुग्रह मोपे कीजे॥१४॥एम मस्तु वारि दीनो ज्ञान॥गायो कटक में गहे कृपान॥१५॥सूतो कुवर शिखंडी देख्यो॥भारत भय ते निर्भय लेख्यो॥

१५॥दोहा॥प्रथम प्रहारो सो कुवर धृष्ट द्युम्न को जाय
वाम चरण छाती हन्यो सोवत वीर जगाय॥१६॥उठन
न पायो वीर सो मारो दुःख दिखाय॥द्रुपद सुताके पं-
च सुत तेऊ मारे जाय॥१७॥अर्द्ध रैनि लों सब कटक-
ठाम ठाम संघारि॥एक छोहनी दल हन्यो चल्यो सक-
ल भुव डारि॥१८॥पांचालीके सुतनि के सीसकाटि लैहा-
थ॥तव पहुंच्यो तिहि ठाम जहां दुरजोधन नर नाथ
१९॥अश्वत्थामा उवाच॥धर्म पुत्र को आनिदै सिर-
लै आयो काटि॥दुरजोधन उर सुख भयो ताके कर-
तें डाटि॥२०॥त्रोटक छंद॥सुख दुःख समान भयो र
जवहीं॥नर नायक प्राण तजे तवहीं॥चलि भूप जु-
धिष्ठिर गेह गयो॥लखिकै दलतें भय भीत भयो २१
राजा उवाच॥सुत द्रोण कहा यह कर्म कियो॥शिशु मारि क
हा अपराध लियो॥वहु दुःख घनं जय चित्त धरो
अपने उरमें वहु क्रोध भरो॥२२॥भगिकै अवसार
अरि जाय कहां॥अवहीं हनिहौं पुनि वेगि तहां॥२
कुधिकै तवहीं रथ औरसज्यो॥तिहि रोष नहीं पल
एक तज्यो॥२३॥हनि कै गुरु पुत्र भज्यो तवहीं॥वहु
पारथ रोष करो जवहीं॥तिनि जाय लयो नहिं भाजि
सको॥अति व्याकुल ह्वै यह राय थको॥२४॥दोहा
अर्जुन जोजन एक पै गुरु सुत लीनो जाय॥जान्यो
नहीं उवार तिनि फिरयो सूर समुहाय॥२५॥उपज्यो र
अद्भुत जुद्ध तहं को कवि सकै वखानि॥सव हीं सर
नभ छाय गो थके सूर नहिं पानि॥२६॥काटत दोऊ
परस पर वाण समूह अनेक॥ब्रह्म व्योम में एक र

थर करन कटत हैं रुंड ॥२७॥ चौपाई ॥ हरिन मानत
दोऊ बीर ॥ दोऊ समर बली रण धीर ॥ एकहि गुरु पै
विद्या पाय ॥ व्योम चली बानन करि छाय ॥२८॥ दो-
ऊ रण की सब ओल बढ़ै ॥ एक संग दोउ विद्या पढ़ै ॥
ब्रह्म अस्त्र वार पारथ लीनो ॥ चली द्रोण सुत जो सिर
कीनो ॥ उपजी अगिनि दहन तें भारी ॥ त्रिभुवन कांपै
नर अरु नारी ॥ हाहा शब्द सकल उपटयो ॥ महा ताप
सुर असुर नि भयो ॥३०॥ सोरठा ॥ अग्नि की सुर रान दे-
खनि बहु आतंक उर ॥ प्रलय होत है आजु इहि विधि
जग जन उच्चरत ॥३१॥ दोहा ॥ ब्रह्म बाण कौ पार्थ कौ
रण मैं निष्फल जाय ॥ मीस फोरि कै मनि लई तब दी-
नो मुकराय ॥३२॥ गर्भ उत्तरा को हन्यो गुरु सुत कै संधा-
न ॥ भयो मृतक सुत तिहि समै सब कुल दुःख निदान
३३॥ व्यास अनुग्रह सुत जियो भयो परीक्षित नाम ॥
चले पार्थ गृह को तवै रहित भयो संग्राम ॥३४॥ चौ-
पाई ॥ चले हस्तिनापुर सब आये ॥ नृप धृतराष्ट्र तवै
समझाये ॥ भांति भांति विनयो करि जोरि ॥ मिटै न हो-
नी किये करोरि ॥३५॥ भये शुद्ध पानी तिन दिये ॥ का-
जकर्म तात सब विधि किये ॥ रोदन करैं कौरव की ना-
री ॥ दुख दावा गिन तें पर जारी ॥३६॥ तब भीषम स-
व त्रिय समझाई ॥ होय रचै जो त्रिभुवन राई ॥ पंडु पु-
त्र सब पास बुलाये ॥ दिन प्रति राज नीति समझाये ॥
३७॥ भीषम उवाच ॥ सवैया ॥ क्रोध्य हथा न करौ कवहूं
न मतौ कछु मूढ़न सों करिये जू ॥ मित्रन को अपमा-
न रचो न दया उर शत्रुन की धरिये जू ॥ छत्र सदां पर

तबै राज अभिषेक करि भूप जुधिष्ठिर आप॥ बैठो प्रफुलित पाट पर बाढ़ो अमित प्रताप॥१॥ करत निकंटक राज धर नासे शत्रु समूल॥ छत्र कहै सज्जन नन के बाढ़ी तन मन फूल॥२॥ दंडक छंद॥ कर्म है कुकर्म जेते मिटे हैं अधर्म सर्व भूतल सकल धर्म सरसाइयतु हैं॥ ठौर ठौर दान सन मान यज्ञ विप्रन को आनंद निधान भौन भौन गाइयतु है॥ जत्र तत्र छत्र कवि को उ नाहीं शत्रु रह्यो अब छांड़ि छांड़ि सोन ढूंढ़ें पाइयतु हैं॥ भूपति जुधिष्ठिर के राज में सुचैन जग मेटि कै असत्य सत्य धरा छाइयतु है॥३॥ दोहा॥ चारि वरण तें स्वप्न हूं पर त्रिय रत नहिं कोय॥ पर द्रोही नर कृतघ्नी अज सुन काहू होय॥४॥ भुजंग प्रयात छंद॥ दरिद्रं दरिद्री अधर्मं अधर्मी॥ महा शोक शोकै कुकर्मं कुकर्मी॥ लसै इंद्र की सी पुरी राजधानी॥ सबै सद्म नीके महा सुःख दानी॥ सुहाये अटा दीखियै धाम धाम॥ पुरस्त्री विराजैं मनो काम कामा॥ कहां लौं कहौं ता पुरी की निकाई॥ चहूं ओर दीषै महा शोभा छाई॥६॥ सबै बाग फूले फले चित्त मोहैं॥ मनो ते लता कल्प की छत्र सोहैं॥ तहां धाम हैं नीर संजुक्त ऐसे॥ मनो देव देवेश के सद्म जैसे॥७॥ छहूं काल के वृक्ष फूले फले हैं तहां कोकिला आदि पक्षी भले हैं॥ कहां लौं बखानों महा शोभ नीकी॥ तहां शोक संका नसै सर्व जी की ८ दोहा॥ धर्म सुवन भूपति बने आगे बंधव चारि॥ सेवत मन वच कर्म सों सकात न आयसु डारि॥९॥ गीतिका छंद॥ गोत घाउ विचारि कै ऋषिराज तहं बोले धने

व्यास ऋषि दुर्वास जुत ऋषि राज जोतिक कोगने॥ जज्ञ तहं हयमेध कीनो सर्व विधि नि वनायकै॥ पार्थ लै चतुरंग सेना भूमि जीती जायकै॥ १०॥ दोहा॥ आयो दश दिशि जीति कै आन्यो वाजी धाम॥ पूरण कीनो जज्ञ तहं सव पूजे मन काम॥ ११॥ चौपाई॥ जज्ञ सिरायो सुर सरि तीर॥ धर्म धुरंधर गुण गंभीर॥ समदे ऋषि जे आये भूप॥ भूपतिपहिरे वसन अनूप॥ १२॥ जिती कुंती कौरव की नारी॥ नसी सवाल दुःखनि सों भारी॥ ते सव व्यास महाऋषि राई॥ लीनी अपने पास वुलाई॥ १३॥ दोहा॥ मायावी तिन के पुरुष दीने ऋषि दरसाय॥ पति लहि सव आनन्द जुत पगनि परी सव जाय॥ १४॥ धसी सुर सरी के सलिल भई सु अंतर ध्यान॥ वै हे सोई जो काहू रचि राखी भगवान॥ १५॥ रहे तहां धृत राष्ट्र अरु गंधारी संग नारि वहुत विसूरे रैनि दिन सुतको सोच विचारि १६ एक छत्र माहि भो गई भूप जुधिष्ठिर आप॥ रामचंद्र ज्यों अवध में दिन दिन वढ़यो प्रताप॥ १७॥ निसि दिन सेवा मात की करें न सासन भंग॥ अज्ञा कारी सर्वथा भ्रातो वंधव संग॥ १८॥ वृद्धि भई कुरु वंश की भरे साहन भंडार॥ वाढ़यो छत्र विशेष कैं जदुकुल वहु परिवार॥ १९॥ चौपाई॥ करि भारत ठवर दश जाने॥ अव कवि तिन के नाम निभने॥ पान्चों पंडु पुत्र वल वान॥ छठे शोभित श्री भगवान॥ २०॥ कारण पुत्र शोभित ... ॥ मेघ वरण वहु विधिसु खदेत॥ सात वर्मा ज्यादो वलि वंड॥ द्रोण पुत्र ...

वरै किये अरु जो फल षोड़श दान दियें तैं ॥ ज्ञान कथा र-
नि सुनें फल जो कवि छत्र कहै मधु बुद्धि हियें तैं ॥ जो
फल संजम नेम रचे अरु जो फल है मख जज्ञ किये
तें ॥ सो फल होइ प्रसन्न भये फल लोइ जुधिष्ठिर नाम
लियें तैं ॥ [illegible] ॥ देवन [illegible]
ल भये वर पाये ॥ तीरथ राज प्रयाग गये [illegible]
गम गंग अन्हाये ॥ जोग किये व्रत नेम लियें अरु काव
[illegible]
आप सजे जु जुधिष्ठिर गाये ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ अष्टादश पु-
राण में सुनें जगत में कोइ ॥ सुनत विजय मुक्ताव-
ली तैसोई फल होइ ॥ ३३ ॥ कह्यो ग्रंथ कछु छत्र कवि अ-
पनी मति अनुसार ॥ क्षमियौ चूक बुद्धीश सब कवि-
ता समुझन हार ॥ ३४ ॥ छप्पै ॥ मधु कैटभ कुल हन्यो ह-
न्यो हिरनाक्ष अघासुर ॥ हरनाकुश जिहि हन्यो ह-
न्यो धेनुक केशी सुर ॥ बंधु सहित दश कंध हन्यो वत्सा
सुर जिहि वर ॥ नरकासुर तिहि हन्यो हन्यो शिशुपाल
अधम धर ॥ सुत धर्म कर्म रक्षन करन महिमा नहिं
जानी परै ॥ त्रैलोक्य नाथ कवि छत्र कहि पढ़त सुनत
रक्षा करै ॥ ३५ ॥ सवैया ॥ व्याल धरे शशि भाल धरे गज
खाल धरे तन भस्म चढ़ाये ॥ ज्वाल धरे सिर माल क-
पाल धरे विष कंठ महा सुख पाये ॥ गंग धरे अर्द्धंग
शिवा ढिग भंग धरे गन भूत निकाये ॥ ऐसे सदा शिव
होहि प्रसन्न सो छत्र विजय मुक्तावलि गाये ॥ ३६ ॥ दो-
हा ॥ फौज सुदर वारी लसे भूपति सिंह कल्यान ॥ पूरण
कीनी छत्र कवि ग्रंथ सुतिहि अस्थान ॥ ३७ ॥ इति श्री

[illegible] विजय [illegible] विदि

तायां राजा जुधिष्ठिर राज वर्णनो नाम

त्रिचत्वारिंशो ऽध्याय ॥४३॥

लिखितं चौबे दत्त ब्राह्मण

कान कुब्ज

छप्पै

तिलक भाल बन माल [illegible] छवि ॥१

मोर मुकुट की लटक चटक वरनत अटकत कवि ॥१

[illegible] च्यौ न-

[illegible] मृदु [illegible] ॥ बात कोटि का-

म अभिराम अति दुख निकंद नगिरधरन ॥ आनंद

कंद ब्रज चन्द प्रभु सु जय २ [illegible] ॥ मोर मु-

कुट नग जड़ित कर्ण कुंडल हेम झलकें ॥ मृग मद र

तिलक लिलाट कमल लोचन दल पलकें ॥ घुंघर

वारी अलक कौस्तुभ कंठ विराजै ॥ पीत वसन वन

माल मधुर मुरली धुनि बाजै ॥ करत कोटि आभाव

दन सु चन्द सूर्य देखत लजत ॥ बल देव दे भक्त जन

सु श्याम रूप प्रीतम सजत ॥ २ ॥ चतुरानन सम बुद्धि

विदित जो होय कोटि धर ॥ एक एक धर प्रतिन सी-

स जो होय कोटि वर ॥ सीस सीस प्रति वदन कोटि

कर तार बनावै ॥ एक एक मुख याहि रसन फिर को-

टि लगावै ॥ रसन रसन प्रति सारदा कोटि बैठि वानी

कहहि ॥ महि जन अनाथ के नाथ की महिमा तबहु

न कहि सकहि ॥ ३ ॥ भूमि परत अवतरत करत बा-

लक विनोद रस ॥ पुनि जोवन मद मत्त तत्व बन्दी र

अनंग वस॥ विषय हेतु जड़ फिरत वहुरि पहुँ थो॥ हथ प्यन॥ गयो जन्म गुन गनत अंत कछु भयो न अप्पन॥ थिर रहत न कोउ नर पति नवल रहत न रमा चहुं जुआ जस॥ सोई अजर अमर नर हर निरषि जो पियत भक्ति भगवंत रस॥ ५॥ विमल चित्त करि मित्र प्रभु छल बल मद किज्जिय॥ प्रभु सेवा वस करिय लोभ वंतहि धन दिज्जिय॥ युवति प्रभु वस करिय साधु आदर वस आनिय॥ महा राज गुन कथन बन्धु सम रस मन मानिय॥ गुरु निमित्त सीस रस सों रसिक विद्या वल बुध मन हरिय॥ मूरख विनोद सु कथा वचन सुभ सुभाय जग वस करिय॥ ६॥ जाचक लघु पद लहैं कामी नर जो कलंक पद॥ लोभी दुर जस लहैं अमन लालची लहै ॥ ८॥ मूरख औगन लहैं लहैं पढ़ि रगुन पंडित॥ सूर सुरन जस लहैं रहैं रन में महि मंडित॥ निर्वान सु पद जोगी लहैं जोन गहैं ममता सुमति॥ सुख भगत जगत जन लहैं कोरे सु नो विधि भक्ति प्रति॥ धिक मंगन विन गुनहि गुन सु धिक सुनत न रीझै॥ धिक धिक विन भोज मौ जन थिवां दे तजो खीजै॥ देवो धिक विन मांचि सांचि धिक धर्म न भावै॥ धर्म सु धिक किन दया धिक अरि कहं आवै॥ अरि धिक चित्त न सालई चित धिक जहं न उदार मति॥ मति धिक जो लष ज्ञान विन ज्ञान सु धिक विन हरि भगति॥

॥ ७॥

॥कवित्त॥

नेह राज रूप राज रसिक रस राज नैन सुख राज गहि उठायो गिरि राज है ॥ छोटेसे करनि वर अंगुरी पै धरो गिरि पूछी कैसो छत्र हरि लियै गज राज है ॥ हाथनि ललाई तामैं पहुंचि निछवि छाई ऊंचो कियो हाथ सव छवि को समाज है ॥ नैननि की सैननि सौं कहै अलवेली अलि चोर चोर खायो दधि काम आयो आज है ॥ नेकु तो निहारो प्रिय प्राननि को प्यारो अति पंकज से हाथ लियै धारो गिर भारी है ॥ प्रेम सौं लपेटी कहै नेह भरी बात अलि लेहु री लकुटि नेकु देहु री सहारो है ॥ कहै अलि मिल सब काम आयो आज वलि खायो रुचि माखन जो चोर कै हमारो है ॥ नेह भरी वात सुनि हिय हुलसात मंद मंद मुसकात मुख रूप को उघारो है ॥ सबही के ग्वाल बाल सबही के गोधन है ॥ सबही पै आनि परे प्रानन की भीर है ॥ सबही पै मेघ वरसत है मोला धा सबही की छाती छेद कारत समीर है ॥ किधौं मेरो ई अनोषो ढोटा भागि आनो एरी वीर वो फल पहार तर कोमल सरीर है ॥ नेकु याके हाथ तैं गिरि लेहु सौंन तुमही सव अहीर पै न काहू हिये पीर है ॥

॥इति मुक्तावली समाप्तः॥०॥

लिखतं चण्डीदत्त ब्राह्मण

कानकुब्ज